प्रथमवर्षकी पूर्ति पर

'ज्योतिष्मती' को प्रथम वर्षमें ही जो आशातीत सफलता मिली वह हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंके इतिहासमें गौरवकी वस्तु है। इस सफलताका श्रेय विद्वान् लेखकों, संरक्षक सहायकों और ग्राहकोंको ही है। सहृदय स्नेही सज्जनों और श्रद्धेय विद्वानोंने लेख एवं प्रशंसा-पत्र भेजकर तथा सहायक ग्राहक बनाकर हमें जो सहयोग दिया उसके लिए हम उन सबके आभारी हैं। आशा है भविष्यमें भी इसी प्रकार उनका उदार सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा। इस प्रथम वर्षमें हम महापुरुषोंके शुभाशीर्वाद और प्रशंसापत्र प्रकाशित नहीं कर सके हैं, इस अंकके अन्तमें केवल दो महापुरुषोंकी शुभ सम्मति दे रहे हैं। आगामी अंकोंमें हम यथावकाश सबका सारांश प्रकाशित करनेका प्रयत्न करेंगे।

वार्षिक मूल्य ५) शीघ्र भिजवाइये

'ज्योतिष्मती' के वर्तमान प्रथमवर्षका यह चौथा (अन्तिम ग्रीष्माङ्क) आपके हाथोंमें है। आपका वार्षिक मूल्य इस अङ्कके साथ ही समाप्त हो जाता है। अतः आप आगामी दूसरे वर्षका मूल्य ५) पांच रुपये शीघ्रसे शीघ्र कार्यालयमें मनीआर्डर द्वारा भेजकर वर्ष भरके लिए सब प्रतियां सुरक्षित करा लीजिए। छपा हुआ मनीआर्डर फार्म इसी अङ्कके साथ भेजा जा रहा है। कूपन पर अपनी ग्राहक संख्या (जो पते पर आपके शुभनामके साथ लिखी है वह) और पूरा पता स्पष्ट अक्षरोंमें लिखें। आगामी द्वितीय वर्षके 'नववर्षाङ्क' (जो शरद् पूर्णिमा ता० २७ अक्टूबर १९५८ को प्रकाशित होगा) का मूल्य २) और प्रत्येक साधारण अङ्कका मूल्य १॥) होगा, परन्तु १ अक्तूबर १९५८ से पहले मूल्य जमा कर देनेवालोंको यह विशेषाङ्क और वर्षभरके शेष सब अङ्क ५) में ही प्राप्त हो सकेंगे। कागजका मूल्य पहलेकी अपेक्षा बहुत बढ़ गया और बढ़ता जा रहा है तथा डाकखर्च भी बढ़ गया इसलिए सम्भव है कि दूसरे वर्षसे 'ज्योतिष्मती' का मूल्य भी हमें ६) वार्षिक कर देना पड़े, परन्तु १ अक्तूबरसे पहले मूल्य भेज देने वालोंको बढ़ा हुआ मूल्य १) अधिक नहीं देना पड़ेगा। वी० पी० किसीको नहीं भेजी जावेगी, मूल्य मनीआर्डर से ही भेजना चाहिए। प्रतियां सीमित संख्यामें ही छप रही हैं, अतः सम्भव है ग्राहक अधिक हो जाने पर बादमें देरीसे मूल्य भेजने वालोंको इस वर्षके पञ्चाङ्गकी भांति 'ज्योतिष्मती' का नववर्षाङ्क भी न मिल सके, अतः जो पहले चेत जावेंगे वे ही लाभमें रहेंगे।

ग्राहकोंको विशेष लाभ

पांच रुपयेमें 'ज्योतिष्मती' का ग्राहक बनकर आप सात रुपयेका तत्काल लाभ उठा सकते हैं। 'भक्तसुदर्शन नाटक' 'केलि कुतूहल' और 'व्यापार-विज्ञान' आधे मूल्यमें तथा 'व्यापार रत्न' ग्रन्थ १॥) कम मूल्यमें ग्राहकोंको देकर ७) का लाभ पहुँचाया जावेगा। इसका पूरा विवरण आगे देखिये। और भी कुछ हमारे विद्वान् सहृदय स्नेहियोंने [अपने बहुमूल्य ग्रन्थ 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे पौने मूल्यमें देनेके लिए हमें सूचित किया है उनका विवरण आगामी अंकमें देंगे। इस प्रकार ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंको ज्यौतिष और व्यापार सम्बन्धी लेखों से तो लाभ होगा ही, इसके अतिरिक्त अन्य बहुमूल्य ग्रन्थ भी उन्हें अर्ध मूल्यमें मिल सकेंगे।

दैवीचांसका चमत्कार

दैवीचांस-कार्यालय मण्डी लहरागागाके अध्यक्ष श्री पंचानन शर्माने घोषित किया है कि वे 'ज्योतिष्मती' के द्वितीय वर्षके केवल १०० ग्राहकोंको सीधी लाइनका एक दैवीचांस (जिसका शुल्क सर्व साधारण से १०१ रु० है) बिना मूल्य केवल डाक रजिस्ट्री खर्च प्राप्त होने पर भेजेंगे। गत वर्षोंमें श्री पंचानन शर्माके गुड़ सरसों आदिके दैवीचांस और इस वर्ष अभी गत वैशाख मासमें बताया हुआ उनका चांदीमें मंदीका चांस अक्षरशः सत्य सिद्ध हो चुका है। यह अपूर्व लाभ वे ही भाग्यशाली १०० व्यापारी उठा सकेंगे, जो सर्व प्रथम 'ज्योतिष्मती' के दूसरे वर्षका मूल्य भेज देंगे। एक सौ ग्राहकोंका मूल्य आ जानेके बाद जो सज्जन दस ग्राहकोंका वार्षिक मूल्य ५०) इकट्ठा 'ज्योतिष्मती निकेतन' को भिजवायेंगे वे ही दैवीचांस प्राप्त कर सकेंगे। अन्य किसीको भी निःशुल्क नहीं भेजा जावेगा।

आगामी वर्षके आकर्षण

'ज्योतिष्मती' को आगामी दूसरे वर्षसे विशेष उपयोगी और आकर्षक बनाई जावेगी। संसारमें घटित होने वाली आगामी वर्षोंकी राजनैतिक सामाजिक और व्यापारिक घटनाओंकी महत्वपूर्ण भविष्यवाणियां, और पद्मभूषण श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास तथा भारतके गण्यमान्य विद्वानोंके गवेषणात्मक लेख प्रकाशित होंगे। दूसरे वर्षसे द्वादश राशि फल प्रत्येक अङ्कमें विशेषरूपसे दिया जावेगा। ज्योतिषके फलित गणित और सामुद्रिकके गूढ़ रहस्योंको प्रकट करने वाले लेख और वर्तमान तेजी-मंदीके सभी लेखकोंके लेख तो रहेंगे ही, साथ ही श्रीमती इन्दुमती पण्डित बी० ए० का 'सन् १९६० से १९६३ तकका भयानक समय' शीर्षक लेख, श्री स्वामीका 'भावी विश्व युद्ध और उसका परिणाम' तथा मेरे फलित कथनकी प्रक्रिया' शीर्षक लेख विशेष पठनीय और संग्रहणीय होंगे। इनके अतिरिक्त शिक्षाप्रद कलापूर्ण रोचक कहानी, कविता और साहित्य समालोचना भी रहेगी। आगामी नववर्षाङ्कके लिए सब लेख द्वि० श्रावण शु० १५ दिनाङ्क २९ अगस्त १९५८ तक सम्पादकके पास पहुँच जाने आवश्यक हैं। इस अवधिके बाद आये हुए लेख प्रकाशित न हो सकेंगे। नववर्षाङ्कके लिए कई लेख हमें प्राप्त हो चुके हैं।

'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे मूल्यमें

'भक्तसुदर्शन-नाटक' हिन्दी भाषानुवाद सहित, मूल्य २)

देवीभागवतकी कथासे आधारित भगवान् श्रीरामके पूर्वज भक्त सुदर्शनके आदर्शचरितपर धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ दुर्गासिंहजी (सोलननरेश) की सदिच्छासे भारतके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान्‌महामहोपाध्याय श्री पं० मथुराप्रसादजी दीक्षित (राजगुरु-सोलन) ने "भक्त सुदर्शन नाटक" की रचना की है। यह नाटक हिन्दी भाषाटीका सहित ८ सुन्दर तिरंगे आकर्षक चित्रोंके साथ प्रकाशित हुआ है। नाटककी लेखन शैली भाषा और कथानक इतना रोचक शिक्षाप्रद है कि एक बार हाथमें लेकर छोड़नेको चित्त नहीं चाहता। मूल्य २) है, पर ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे मूल्य १) में मिलेगा। डाक रजिस्ट्री खर्च ७५ नए पैसे अलग।

'केलिकुतूहल'

हिन्दी भाषानुवाद सहित मूल्य ४) रु०

यह आयुर्वेद विज्ञानका अद्भुत ग्रन्थ म० म० श्री पं० मथुराप्रसादजी दीक्षितका लिखा हुआ भाषा टीका सहित प्रकाशित हुआ है। प्रत्येक गार्हस्थ्यसुखाभिलाषीके लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। गृहस्थ जीवनको सुखमय बनाने के अनुभूत उपाय और शक्तिवर्द्धक सन्तानप्रद सिद्ध औषधिप्रयोग भी दिये गये हैं। 'ज्योतिष्मती' के ग्राहक आधा मूल्य २) और डाक रजिस्ट्री खर्च ॥।) कुल २॥।) दो रुपए ७५ नए पैसे नीचेके पते पर मनीआर्डरसे भेजकर प्राप्त करें।

व्यापार-विज्ञान (प्रथम भाग)

हिन्दी भाषानुवाद सहित, मूल्य ५) रु०

श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्योतिषाचार्य द्वारा सम्पादित महर्घ-समर्घ (तेजीमन्दी) जाननेके लिए यह एक अद्भुत ग्रन्थ है। व्यापारकी सामान्य पारिभाषिक चर्चासे लेकर गहन शास्त्रीय विषय तक सुन्दर भाषामें वर्णित है। 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंको आधे मूल्य २॥) और डाक रजिस्ट्री खर्च ॥।) कुल ३.२५ में प्राप्त हो सकेगा।

व्यापाररत्न (दो खण्डों में)

तेजी मंदी या महर्घ समर्घ ज्ञानके लिए प्राचीन भारतीय पद्धति और अंग्रेजी पद्धति पर खोजपूर्ण रीतिसे लिखा गया वह अद्भुत ग्रन्थ है। मूल्य ८) डाक खर्च १॥) ज्योतिष्मतीके ग्राहकोंसे डाकखर्च १॥) नहीं लिया जावेगा।

प्राप्ति स्थान—

व्यवस्थापक, ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (शिमला)

❀ श्रीः ❀

ज्योतिष्मती

संरक्षक—

हिजहाईनेस महाराजाधिराज श्री १०५ गजसिंहजी बहादुर, जोधपुर-नरेश
श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—

श्रीमान् पं० कृष्णचन्द्रजी शर्मा ठेकेदार, दरियागंज, दिल्ली
श्री १०५ मती युवरानी श्री मोहनकुमारीजी, सीतामऊ (मध्यप्रदेश)
श्री १०५ मान् राजासाहब प्रतापसिंहजी, कुचामन (मारवाड़)
श्रीमान् नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लि० सोलन ब्रूरी।
श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)
श्रीमान् सेठ आनन्दराजजी सुराणा भू० पू० सदस्य दिल्ली राज्य-विधानसभा, दिल्ली।
श्रीमान् पदमचन्द एण्ड सन्स, जौहरी, बड़ा दरीबा, दिल्ली
श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, न्यू अमरटाकीज, दिल्ली
श्रीमान् ला० बनवारीलाल ओंकारनाथजी, कूचा महाजनी, दिल्ली
श्रीमान् सुरेश्वरदासजी खन्ना साहब, एस० डी० ओ०, कण्डाघाट (पंजाब)
श्रीमान् पं० खुशीरामजी शर्मा ठेकेदार, कुराली (पंजाब)
श्रीमान् चौधरी साहब गगनसिंहजी, जण्डवाल (होश्यारपुर)
श्रीमान् सेठ इन्द्रवीरवानी जी, दौलतगंज, उज्जैन (म० प्र०)
श्रीमान् ला० शिवदयालजी ठेकेदार सोलन
श्रीमान् रामसुखदास एण्ड ब्रादर्स सोलन

सम्पादक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उपसम्पादक—

आचार्य श्री पं० रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न

प्रकाशक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

❋ 'ज्योतिष्मती' के नियम तथा उद्देश्य ❋

उद्देश्य—

१—भारतकी प्राचीन विद्याओंका अन्वेषण और संवर्द्धन।

२—भारतीय संस्कृतिका प्रचार और उसके उज्ज्वलतम लक्ष्यकी पूर्तिका प्रयत्न।

३—ज्योतिर्विज्ञानकी सर्वतोमुखी उन्नति और ज्योतिष शास्त्र द्वारा भारतीय व्यापारके संवर्धनकी कामना।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ५०१) पांच सौ एक रुपये प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'ज्योतिष्मती' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक

(२) जो सज्जन १०१) एक सौ एक रुपये प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सहायक माने जायेंगे।

(३) जो सज्जन ११) से १००) तक प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'ज्योतिष्मती' के सदस्य माने जायेंगे।

(४) 'ज्योतिष्मती' आश्विन शुक्ला १५, पौष शुक्ला १५, चैत्रशुक्ला १५ और आषाढ़शुक्ला १५ को प्रकाशित हुआ करती है। इसका वार्षिक मूल्य ५) पांच रुपये और एक प्रतिका १॥) एक रुपया ५० नये पसे हैं।

(५) जिन सज्जनोंके लेख ज्योतिष्मती-निकेतनकी ओरसे प्रार्थनापूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जायेंगे अन्यथा नहीं।

(६) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएं सम्पादक 'ज्योतिष्मती' सोलन (शिमला) के पतेसे भेजने चाहिए।

(७) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(८) किसी लेखक प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'ज्योतिष्मती' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विन मासकी शरद् पूर्णिमासे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि शरद्पूर्णिमाका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में उनसे वार्षिक मूल्य ५)रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़ी १५)तकके शेष अङ्कों का मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ४) रु० और एक अङ्कका मूल्य १.५० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आने चाहिएं। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्यमें तेरह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बैठ जायेंगे।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डर कूपन पर 'पुराना' शब्द और नए ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिए। वार्षिक मूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट और टिकट लिफाफे में कदापि न भेजें।

'जोतिष्मती' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जबाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'ज्योतिष्मती' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला पूर्णिमा) को प्रत्येक ग्राहक के नाम बड़ी सावधानीसे भेज दी जाती है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होने की तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

ज्योतिष्मती-निकेतन, सोलन(शिमला)

"तमसो मा ज्योतिर्गमय"

ज्योतिष्मती

[ग्रीष्माङ्क]

गुम्फन्तीव पुरातनैरथनवैर्ज्योतिःप्रबन्धैः समम्
भाग्याभाग्य विनिर्णयं कविकथा-सन्दोहमातन्वती ।
अज्ञानान्धनिवारणं विदधती विज्ञानसूर्योज्ज्वला
जीयाद्धर्ममयी सुकर्मनिरता 'ज्योतिष्मती' भूतले ॥

वर्ष १	सोलन, आषाढ़ शु० १५ मंगलवार सं० २०१५ वि० राष्ट्रिय मिति (सौर) १० आषाढ़ शके १८८०	संख्या ४

सरस्वती-समाश्रयण

समाश्रये सरस्वतीं महेश्वराङ्कशायिनीम् ।
विचार सार घर्षणे सुरेश सिद्धि कर्षणे
रसप्रवाह वर्षणे सदाशिवप्रदायिनीम् ॥
शिवस्वरूप-दर्पणे स्वदेशबन्धु-तर्पणे
हरिप्रिया-समर्पणे स्वतन्त्रमन्त्र-गायिनीम् ।
सुशस्त्रशास्त्रशिक्षणे स्वभूमि-धेनुरक्षणे
अनीति शत्रुभक्षणे सुरारिरक्त-पायिनीम् ॥
समाश्रये सरस्वतीं महेश्वराङ्क-शायिनीम् ॥

—सदाशिव दीक्षित

सम्पादकीय विचार—

हिन्दी-उर्दूका प्रश्न

इड़ा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः। बर्हिः सीदंत्वस्रिधः ॥ (ऋ. १-१३-९)

सरस्वती साधयन्ती धियं न इड़ा देवी भारती विश्वभूतिः।

तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदमच्छिद्रं यान्तु शरणं निषद्य ॥ (ऋ. २-३-८)

आ भारती भारतीभिः सजोषा इड़ा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।

सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बहिरेदं सदन्तु ॥ (ऋ. ७-२-८)

मातृभाषा, सरस्वती (मातृ-संस्कृति) और मातृ-भूमि, या भाषा विद्या और जन्म-भूमि, इन देवियोंकी उपासना करनेका विधान प्राचीन कालसे चला आया है। यह एक सार्वकालिक और सर्वदेशीय नियम है। इन तीन देवियों की उपासनाका ही यह फल था कि मनुने इस देशके लोगोंको सगर्व एवं साभिमान आह्वान किया था—

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥"

जिस दिन हमने इन तीनों देवियों की उपासना करना छोड़ दिया उस दिन हम पराधीन हुए, और हमारा 'जगद्गुरु' होनेका अभिमान और गर्व भी खर्व हो गया। भारतके स्वाधीन होनेके बाद आशा थी कि इनकी उपासना की ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया जायगा। किन्तु ग्यारह वर्ष बीत गए और इस दिशामें हमारे प्रयत्न आशानुरूप सिद्ध नहीं हुए हैं। अभी तक हम यह ही निर्णय नहीं कर सके कि उच्च शिक्षाका माध्यम क्या हो। यह प्रश्न तो अभी अनिर्णीत था ही कि हिन्दी और उर्दू का प्रश्न पुनः खड़ा कर दिया गया है।

अदूरदर्शितापूर्ण—उर्दू के उद्धारका बीड़ा इस बार उठाया है कांग्रेस समेत वामपक्षी राजनीतिक दलों ने। इन्होंने कुछ मुसलमान मतदाताओंकी साम्प्रदायिक भावनाको सम्पुष्ट एवं परितुष्ट करनेके लिए पुकार उठाई है कि पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और बिहार में उर्दू को क्षेत्रीय भाषा माना जाय। कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और कांग्रेस ये तीनों राजनीतिक दल समाजवादी व्यवस्था और जनवादी राज्य इस देशमें स्थापित करनेके लिए कृतसंकल्प हैं। किन्तु सत्ता लोलुपताने इनको अन्धा बना दिया है और उत्तरी भारतके मुसलमानोंका मत पाने के लिए विदेशी परिधानमें रहने वाली भाषाको इस देश पर लादनेके लिए व्यग्र हैं। केरलका मुसलमान मलयालम, तामिलनाडका तामिल, बंगालका मुसलमान बंगला बोलता है; किन्तु उत्तरी भारतका मुसलमान हिन्दी बोलता—हिन्दीकी विभिन्न बोलियां बोलते—हुए भी अपनी भाषा उर्दू बताता है, हिन्दी नहीं। यही नहीं दक्षिण और पूर्वी भारतके मुसलमान भी उर्दू के पक्षमें पुकार उठानेमें पीछे नहीं रहते। क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि इस देशके इस्लाम मानने वाले लोगोंको एक सूत्रमें आबद्ध करने वाली भाषाका नाम उर्दू है, अतः इस्लामी भावनाको दृढ़ करनेके लिए उर्दू को पुनरुज्जीवित करना चाहिए। मुसलमान किसी भी राजनीतिक पार्टीका हो, पहले वह मुसलमान है इसके बाद वह कुछ और है। इसका ज्वलन्त उदाहरण कम्युनिस्ट पार्टीके एक नेता डा० जेड्-अहमदका उत्तरप्रदेशसे राज्यसभाका सदस्य चुना जाना है। विधान सभामें कम्युनिस्ट पार्टीके केवल नौ सदस्य हैं फिर भी वे सर्वाधिक प्रथम पारीके मत प्राप्त कर सके, और गृहमंत्री मा० पन्त कठिनाईसे चुने जा सके! क्यों? क्योंकि

कांग्रेस पार्टी और प्रजासोशलिस्ट पार्टीके मुसलमान सदस्यों ने डा० जेड़. अहमदको अपना मत दिया या अपने मत पत्र इस रीतिसे भरे जिससे वे अवैध हो जाएं। एक मुसलमान उम्मीदवारको चुनानेके लिए उन मुस्लिम सदस्यों ने अपनी पार्टीके आदेशको ताक पर रख दिया। उन्हींको प्रसन्न और सन्तुष्ट करनेके लिए ये राजनीतिक दल आज आपसमें होड़ कर रहे हैं और मुगलोंके दरबारमें पालित पोषित और सामन्तयुगकी अवशेष भाषाको इस देशमें जीवित रखनेका प्रयत्न कर रहे हैं। इनकी यह अदूरदर्शितापूर्ण नीति देखकर ६० प्रतिशत लोगोंको वितुष्ट करने वाली नीतिका अनुसरण करते हुए देखकर सहसा यह स्मरण हो आता है—

"एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तसिदं वपुश्च ।
अल्पस्य हेतोर्वहुहातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् ।।"

कुछ कम्यूनिस्टों और उनके सहगामियोंका कहना है कि हिन्दी तो ५०-६० वर्षकी भाषा है। सूर और तुलसी हिन्दी के नहीं हैं। गालिब मीर आदि भी वस्तुतः हिन्दीके ही हैं। यही नहीं ये लोग यह भी कहते हैं कि क्रिया सर्वनाम उर्दू और हिन्दीके एक हैं। यदि उर्दू प्रेमी यह मानते हैं कि उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है, तो स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि फिर वे उर्दूको क्षेत्रीय भाषा बनाने का आग्रह क्यों कर रहे हैं ? क्या वे नागरी लिपिके साथ इस देशमें अरबी-फारसी लिपिको जीवित रखना चाहते हैं ? रोमन लिपिके समान क्या अरबी-फारसी लिपि विदेशी लिपि नहीं है ? फिर यह मोह क्यों ? यदि इस देशमें रोमन लिपिके लिए स्थान नहीं है, तो क्या इस देशमें अरबी-फारसी लिपिके लिए स्थान है ? इस देशमें लिपियोंकी संख्या घटानेकी आवश्यकता है या और बढ़ाने की ? फिर वाम-पक्षी दल फारसी अरबी लिपिको जारी रखनेका आग्रह क्यों करते हैं ?

विदेशी मनोवृत्ति—इस्लामके अनुयायी—कमसे कम भारतके—विदेशी मनोवृत्तिके हैं। उर्दूमें यदि नए शब्दोंकी आवश्यकता होगी तो वे अरबीसे लेंगे, संस्कृत या हिन्दीसे नहीं। वे शब्दोंका बहुवचन हिन्दी व संस्कृत व्याकरणके अनुसार नहीं, अपितु अरबी व्याकरणके अनुसार बनाते हैं। वे उपमाके लिए उपमेय ईरान और अरबके इतिहाससे चुनते हैं। उनको पक्षी पशु भी वहांके ही प्यारे हैं। इस प्रकार उर्दूका परिधान ही विदेशी नहीं है, अपितु इसका अन्तरंग भी विदेशी है। यही कारण है कि देशका विभाजन इस भाषाके कारण हुआ। क्षेत्रीय भाषाके रूपमें इसको प्रश्रय देना धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता और पाकिस्तानी मनोवृत्तिको पुष्ट करना है। अतः उर्दूको क्षेत्रीय भाषा बनाना भारतीय राष्ट्रीयता पर बज्राघात करना है और मुसलमानोंकी पाकिस्तानी मनोवृत्तिको प्रोत्साहन देना है।

जनशक्तिकी अवहेलना

यह भारी परितापकी बात है कि भारतका आर्थिक नियोजन मास्को वाशिंगटन और लन्दनकी आर्थिक सहायता पर अधिकाधिक निर्भर होता जाता है। क्या विदेशी आर्थिक सहायताका परिणाम राष्ट्रके लिए कभी शुभावह होगा ? भीष्म पितामहका यह कथन क्या हम भूल गए।

"अर्थस्य पुरुषोदासः, नार्थः कस्यचित् ।"

मदुराईका विश्व-विख्यात मीनाक्षीका मन्दिर, तंजौरके मनुष्यको चकित करने वाले जगत प्रसिद्ध अभ्रंलिह—गगनचुम्बी—मन्दिर क्या हमको आज कोई सन्देश नहीं देते ? क्या ये हमको आज अनुप्राणित नहीं कर सकते, जिनकी विशालता, निपुणता, जिनके कौशल और सौन्दर्यको देख कर आजका आधुनिक इंजीनियर भी विस्मित है ! जो उस समय जनशक्तिकी सहायतासे हो सका, क्या वह आज फिर जनशक्तिकी सहायतासे सम्भव नहीं हो सकता ? आर्थिक नियोजनकी सफलता यंत्रों और संयंत्रों पर ही क्या निर्भर है ? क्या यह देशकी विशाल जनशक्ति द्वारा सम्भव नहीं है ?

एक उदाहरण लिजिए। देशको खादकी आवश्यकता है। हम विदेशोंसे रासायनिक खाद आयात कर रहे हैं। इधर हमारे देशके गांव-गांवमें गोबर कूड़ा-कचरेका पूरा-पूरा उपयोग नहीं हो रहा है। दूसरी ओर चीनमें देखिए। चीनी लोग बँहगियोंका—ट्रकों और गाड़ियोंका नहीं—खाद ढोनेके

लिए उपयोग कर रहे हैं। क्या हमारी आर्थिक योजनाओंमें कहीं भी बहंगियोंका किसी भी रूपमें उपयोग हुआ है? जनशक्तिकी अवहेलना करके क्या हम अपनेको पराधीन नहीं बना रहे हैं।

लखनऊका फलित ज्योतिष-सम्मेलन

उत्तरप्रदेशके मुख्य मंत्री मा० डा० श्री संपूर्णानंदजी जहां राजनीति, समाजवाद, विज्ञान, शिक्षा, अर्थशास्त्र, और प्रशासनके प्रख्यात पंडित हैं वहाँ ज्योतिर्विज्ञानके भी पंडित हैं, वे बहुमुखी प्रतिभाके माने हुए विद्वान् हैं। वे प्रधान-मन्त्री श्रीनेहरूजीकी भांति ज्योतिषके अज्ञ-आलोचक नहीं किन्तु संशोधक और समर्थक हैं। उन्होंने उत्तर-प्रदेशमें ज्योतिषकी एक अखिल भारतीय संस्था स्थापित की है। और उसके द्वारा कार्य भी हो रहा है। बनारस संस्कृत विश्व-विद्यालयकी स्थापनाके साथ ही वे साधन सम्पन्न एक वेधशाला खोल रहे हैं, वास्तवमें यह महत्वपूर्ण कार्य है। अभी विगत १३ अप्रैल ५८ को लखनऊमें इस संस्थाका वार्षिक अधिवेशन हुआ था। उसमें दिल्लीके एक मद्रासी पंडित, तथा गोरखपुरके श्री विद्यानिवास मिश्र और उज्जैनसे श्री सूर्यनारायण व्यासजीको भी विशेष रूपसे आमंत्रित किया गया था। १३ अप्रैलको लखनऊ विश्व-विद्यालयमें यह गोष्ठी हुई, नगरके योग्य जन और शासकीय अधिकारी भी उपस्थित हुए थे, यहां सर्व प्रथम संस्थाके सचिव श्री भगवती शरणसिंहजीने स्वागतभाषण किया और विशेषरूपसे श्रीव्यासजीके आगमनका महत्व बतलाया। इसके बाद श्री व्यासजीने ३५ मिनिट तक अपना भाषण दिया। (यह भाषण हम 'ज्योतिष्मती' के आगामी 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित करेंगे) उनके बाद विद्यानिवास मिश्रजी ने 'बाल मृत्यु' पर अपना किया हुआ संशोधन बतलाया। उन्होंने सद्योजात बालकोंके जन्म-मरणके समय शासकीय हास्पिटलसे प्राप्त किए थे। उन २७ मृत बालकोंके मारकयोग पर विवेचन किया और अपने भाषणमें श्री व्यासजीके दिए हुए मौलिक सुझावोंकी, और उनके महत्वकी सादर चर्चा की। उसके बाद दिल्लीके श्री पंडितजीका नामोंकी संख्याके शुभाशुभ विचार पर भाषण हुआ। अंतमें अध्यक्ष मा० डा० संपूर्णानंदजीका बहुत सुन्दर भाषण हुआ। (यह भाषण भी हम 'ज्योतिष्मती' के आगामी अंकोंमें प्रकाशित करेंगे) उन्होंने व्यासजीसे हुई व्यक्तिगत चर्चा और महत्व पर प्रकाश डाला, तथा व्यासजीके आने पर संस्थाको जो गौरव मिला उसका सम्मान सहित उल्लेख किया, आगे भी इस संस्थाको संशोधन केन्द्र बनानेकी योजना भी बतलाई। यह सच है कि संस्थाको डा० सम्पूर्णानन्दजीकी प्रेरणा है, किंतु शासनके भारके कारण वे अधिक समय नहीं दे सकते। उसमें यदि योग्य नवीन वैज्ञानिक दृष्टिके साथ थोड़ा-थोड़ा भी कार्य किया जा सके और पत्रोंसे विभिन्न विद्वानोंके समय समय पर अभिमत भी लिए जाँए तथा संशोधनको सुविधा दी जाए तो बहुत कार्य सरल हो सकता है। अवश्य ही संशोधनमें योग्य मार्गदर्शन (गाइडेंस) की आवश्यकता है। व्यासजी जैसे फलित विशेषज्ञ अन्य सभी विद्वानोंका सहयोग प्राप्त हो तो व्यापक कार्य संभव हो सकता है। इस वैज्ञानिक अनुसन्धानके गौरवपूर्ण कार्यके लिए हम ज्योतिर्विदोंकी ओरसे माननीय डा० सम्पूर्णानन्दजीका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

श्रीदेवीनवरात्र और शक्तिसंचय

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]

देवी नवरात्रका अर्थ है भगवतीकी ९ रात्रियां। जगदम्बा रात्रिरूपा हैं और जगत् पिता महेश्वर दिवारूप हैं। जैसे—

निशि भ्रमन्ति भूतानि शक्तयः शूलभृष्टयः।
रात्रिरूपा यतो देवी दिवारूपो महेश्वरः॥

हमारे एक मानव-वर्षमें देवताओंका एक (दिव्य) दिन होता है। दिन रातमें चार सन्धिकाल होते हैं—प्रातः, मध्यान्ह, सायं और अर्धरात्रि। इन्हीं चारों सन्धिकालोंमें जप पूजा-पाठादि भगवद् आराधनका विशेष महत्त्व है। इसीलिए आर्य महर्षियोंने हमारे मानव दिनके इन्हीं सन्धिकालोंमें सन्ध्यापूजनादिका विधान बतलाया है। हमारे एक मानव-वर्ष या दिव्य-दिनकी इन्हीं चारों सन्धियोंमें देवीनवरात्र आते हैं। प्रथम नवरात्र वर्षारम्भमें चैत्र शुक्ल १ से प्रारम्भ होते हैं; यही दिव्य-दिनका प्रातःकाल है। दिव्य दिनकी १५ घटी वा ६ घण्टे (मानव वर्ष के चतुर्थांश वा ३ मास) के बाद दूसरे नवरात्र आषाढ़ शुक्ल १ से प्रारम्भ होते हैं, यह दिव्य-दिनका मध्याह्न है। तीसरे नवरात्र दिव्यदिनकी ३० घटी वा १२घण्टे(अर्धमानव वर्ष वा ६ मास) के अनन्तर आश्विन शुक्ल १ से प्रारम्भ होते हैं, यह दिव्य-दिनका सायं समय है। ऊपर हम बतला चुके हैं कि जगदम्बा स्वयं रात्रिरूपा हैं और यहीं से दिव्य दिनकी रात्रि आरम्भ होती है, इसी कारण आश्विनके नवरात्र विशेष प्रसिद्ध हैं। चौथे नवरात्र पौष शुक्ल १ से आरम्भ होते हैं, यह देवताओंका निशीथ काल है। देवी भागवतमें श्रावण शुक्ल और माघ शुक्लमें भी नवरात्र माने गये हैं। श्रीनयनादेवीमें श्रावणके नवरात्रमें भारी मेला लगता है।

जिस प्रकार अब मध्यान्ह और निशीथ (अर्ध-रात्रि) की सन्ध्योपासना करने वाले सज्जन कहीं-कहीं इने-गिने ही प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार आषाढ़ और पौषके नवरात्र म हत्त्वको जानने वाले महात्मा भी कहीं-कहीं ही रह गये हैं। मध्याह्न और अर्धरात्रिकी सन्धिमें सचेत रहना सर्वसाधारण का काम भी नहीं।

प्रातःकाल और सायंकालके समय समस्त संसार सचेष्ट (जागृत) रहता है, इसलिये प्रतिवर्ष दो बार मैय्याका पूज-नोत्सव विशेष रूपसे मनाया जाता है। एक शरत्कालमें और दूसरा वसन्तकालमें। कहा भी है—

शरत्काले विशेषेण कर्त्तव्यं मम पूजनम्।
वसन्ते च प्रकर्तव्यं तथैव प्रेमपूर्वकम्॥

आयुर्वेदके दृष्टिकोणसे भी इस कथनकी पुष्टि होती है 'द्वावृतू यमदंष्ट्राख्यौ वसन्तशरदाविह।' अर्थात् वसन्त और शरद् ऋतुएं यम (काल) की दाढ़ें हैं। इन यमकी दाढ़ोंसे जिन्हें बचना और निर्भय रहना है वे मैय्याकी आराधना करें। भक्ति-मुक्ति पानेके लिए भी मैय्याका प्रेम प्राप्त करें।

यम दंष्ट्राके रूपमें शारदीय नवरात्र समीप आ रहे हैं, और उधर संसारसे अन्याय एवं आसुरीभावना का विनाश करनेके लिए मैय्या महाकाली (रणचण्डी वा महामारी) का रूप धारण करने वाली है। ऐसे संकटापन्न भीषण समयमें प्राणिमात्रको मैय्याकी शरणमें जाकर निर्भय हो जाना चाहिए। आसुरी-वृत्तिके भ्रष्टाचारी मनुष्य कभी भी मैय्या की कृपा प्राप्त नहीं कर सकते, अतः उनका विनाश होना तो अवश्यम्भावी है।

जो भक्तजन हैं, उनके लिए यह देवीनवरात्र और विजयोत्सव महिषासुरमर्दिनी, त्रिभुवनेश्वरी, विजयलक्ष्मी मैय्याकी कृपा प्राप्त करनेका परमानन्दप्रद सुअवसर है। मूलतः यह उसी पुनीत पुराणप्रसिद्ध-प्रसंगका स्मरण कराता है जिस प्रसंग पर भयत्रस्त अन्योपाय अक्षम सुर-गणोंका त्राण मैय्याने असुरगणोंसे किया था।

मैय्या चारों पदार्थ देने वाली हैं। वे शिवा हैं, कल्याणी हैं, करुणामयी हैं और हैं भक्तवत्सला। वे भक्तोंके दुःखको जितनी शीघ्रतासे दूर कर सकती हैं उतनी शीघ्रता से भक्तोंका त्राण करने वाली दूसरी कोई शक्ति नहीं है।

दुःख-दारिद्र्य नाशके लिए, संग्राम-विजयके लिए और शत्रु-विनाश जैसे उग्रकार्योंके लिए माता दुर्गाकी ही पूजा की जाती है। कलियुगमें विशेषतः चण्डीकी पूजा इसीलिए ऋषि-मुनियोंने बतलाई है। चण्डीका रूप भयङ्कर अवश्य है, परन्तु मैय्याके भक्त तो उनको प्यारे रूपमें भजते हैं और भीषण रूपमें भी ध्याते हैं। वे भक्तजनोंके शत्रुओंके लिए तो महाभीषण और भयंकरी हैं, सिंहवाहिनी हैं, काली हैं और भक्तोंकी कोमल भावनाओंके लिए वे कल्याणी हैं, शिवा हैं, सरस्वती हैं, जगदम्बा हैं और अन्नपूर्णा हैं।

देवियोंमें वे काली हैं और देवोंमें श्याम प्यारे काले हैं। श्याम प्यारे और श्यामा माँ एक ही हैं। यह बात सुन कर लोग चौंकेंगे, पर सत्य बात यही है। श्यामवर्ण आकाशका भी है और वह अनन्तताका द्योतक है। श्याम-श्यामा, कृष्ण और कालीके नामोंसे पता चलता है कि इस रूपका ध्यान करने वाले भक्त पर दूसरा रङ्ग नहीं चढ़ता। 'सूर श्याम कारी कमरी पै चढ़त न दूजो रङ्ग' यह परमभक्त महात्मा सूरदासजीका कथन भी इसी बातको सिद्ध करता है। वैसे सात रङ्ग कहनेके लिए हैं, परन्तु जोड़-तोड़ मिलाते-मिलाते अनेक रङ्ग बन जाते हैं और उन सब रङ्गोंको मिलाते हैं तो अन्तमें 'काला' रङ्ग ही शेष रह जाता है। श्यामा माँमें सातों प्रकाश रश्मियां विलीन हो जाती हैं। क्योंकि ये सब प्रकाश-रश्मियां उन्हीं की तो हैं।

श्याम प्यारेके चारों आयुध श्यामा माँ भी तो धारण करती हैं। शंख, चक्र, गदा, पद्म धारिणी हैं मां दुर्गा। इसके अतिरिक्त और भी कितने ही आयुध उनके पास हैं। घण्टा है, त्रिशूल है, परशु है, पाश है और तलवार है। तलवार तो वे स्वयं ही हैं और उसी रूपमें वे भवानी हैं, क्योंकि भवके पाशोंको माँके अतिरिक्त और कौन काट सकता है? संस्कृत-साहित्यमें 'भव' नाम शिवका है और संसारका भी। भव अर्थात् भगवान् शिव या संसारको सम्पूर्ण प्रकारसे जीवित रखने वाली महाशक्तिका नाम भवानी है, अस्तु।

दिव्यशस्त्रास्त्रोंके अतिरिक्त मां स्वयं शक्तिरूपा ही हैं आधुनिक युगके भयानक अणु और उद्जनबमादि भी उसी महाशक्तिके अंशमात्र हैं। वे सदा अपनी शक्तिसे आसुरीवृत्तियोंका नाश और दैवीवृत्तियोंके उत्थानमें प्रयत्नशील दृष्टिगोचर होती हैं। सिंहवाहिनी माँ दुर्गाकी प्रतिमा इसी ध्रुव सत्यको प्रकट करती है कि जिस व्यक्ति, जाति अथवा राष्ट्रमें शक्ति नहीं रह जाती, वह प्रस्तर मूर्तिकी भांति जड़ हो जाता है। शुम्भ और निशुम्भका कथानक उस शक्तिका परिचायक है जिसका संकेत दुर्गासप्तशतीमें किया गया है—

यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति॥

इस गम्भीर गर्जनाको माँ वसुन्धराकी प्रतिध्वनि और राष्ट्रको अनन्त कालतक सम्मानित जीवन प्रदान करने वाली शक्तिका सन्देश कहा जा सकता है। जिसके अभावमें प्रत्येक राष्ट्रको दुःख दौर्भाग्य और पारतन्त्र्य आदि अनेक कष्टोंका सामना करना पड़ता है।

परन्तु फिर भी माँ अपनी शक्तिके अभिमानमें दूसरोंका नाश नहीं करना चाहती, अपितु वह उसके बल पर संसार की रक्षामें प्रयत्नशील दृष्टिगोचर होती हैं। शुम्भ और निशुम्भने जब अपनी अनन्त सेनाको लेकर देवी पर आक्रमण किया तब भी उनके मनमें दया थी, वे इस बात को नहीं चाहती थी कि मेरे हाथसे किसीका वध हो। माँ ने भगवान् शंकरको दूत बनाकर शुम्भ निशुम्भके पास भेजा और कहा कि हे भगवन्! गर्वित शुम्भ निशुम्भ तथा अन्य जो दानव युद्धके लिए उपस्थित हैं उनसे कहो कि—

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ॥

अर्थात्—यदि तुम अपना जीवन चाहते हो तो इन्द्र तीनों लोकोंका राज्य प्राप्त करे, देवता यज्ञके भागी हों, और तुम सब पातालमें चले जाओ।

माँकी प्रत्येक वाणीमें शक्तिका सन्देश है। माँका कथन है कि शक्ति-सञ्चय कर लेने पर तुम्हारी समस्त विघ्न-बाधा शुम्भ और निशुम्भके नाशकी भांति विलीन हो जाएँगी और फिर तुम संसारमें अमरकीर्ति प्राप्त कर सकोगे।

हमारा विश्वास है कि यदि इन नवरात्रोंमें सच्चे हृदयसे अपनी बिखरी हुई शक्तियोंको एकत्रित कर माँकी आराधना करें तो संसारमें ऐसा कौन-सा महान् कार्य है

वि ज या द श मी

[सुश्री कुमारी सर्वमंगला शर्मा त्रिवेदी प्रभाकर]

आश्विन शुक्ल ६ मंगलवार ता० २१ अक्तूबर १६५८ ई० को विजयादशमी है। यह भगवान्‌की स्मृतिका पुण्य दिवस है, जो अतीत गौरवकी घटनाओंको प्रतिवर्ष नवीन रूपमें उपस्थित करता है। यह वह दिन है, जब धर्मने अधर्म पर, नीतिने अनीति पर, सत्यने असत्य पर, प्रकाशने अन्धकार पर आत्मबलने पशुबल पर और सुरोंने असुरों पर विजय प्राप्त की थी। इस पवित्र दिनकी स्मृति आज भी हम को बल देती है, हममें स्फूर्तिका सञ्चार करती है और अमित उत्साह देती है। विजयादशमीका अर्थ है--विजय दिलाने वाली दशमी। अब यह देखना है कि इस तिथिको किसने किस पर विजय प्राप्त की थी। पुराणोंके अवलोकनसे ज्ञात होता है कि महिषासुर नामका एक महा भयङ्कर दैत्य था। वह देवताओं को अत्यन्त कष्ट देता था, उनके दुःखको दूर करनेके लिए मांने दुर्गाका अवतार धारण कर महिषासुरका संहार किया था। उसी दिनसे विजयकी स्मृतिमें यह त्यौहार मनाया जाता है।

इसके अतिरिक्त बहुत विद्वानोंका यह भी मत है कि श्रीरामचन्द्रजीने आजके दिन लङ्का पर आक्रमण किया था और आज ही के दिन भगवान्‌की वानरी सेनाने एक महान् उत्सव मनाया था। उसी विजयकी पुण्यस्मृतिमें आजका यह विजय-दिवस है। इस दिन राजा लोग अपनी-अपनी सेना सजाते थे, अस्त्रों-शस्त्रोंका विधिवत् पूजन कर शक्ति की उपासना करते थे।

श्रीरामचन्द्रजीने इस विजयादशमीको ही युद्धके लिए प्रस्थान किया था। इस कथनका रामायणादि ग्रन्थोंमें स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता; अतः समग्र रूपसे इस विवादग्रस्त विषयको सुलझानेके लिए अन्य ग्रन्थोंकी सहायता लेनी होगी। कालिका पुराणमें लिखा है—

व्यतीते सप्तमे रात्रे नवम्यां रावणं ततः।
रामेण घातयामास महामाया जगन्मयी॥

इस मतसे रावणवध नवमीके दिन होता है और उत्सवादि मनाना उचित न समझकर दूसरे दिन यह उत्सव मनाया गया होगा, जिसके फलस्वरूप इस उत्सवकी परिपाटी प्रारम्भ हुई। इस दिन अधिकांश लोग नीलकंठ नामक पक्षीका दर्शन करते हैं। कुछ लोगोंको यह विश्वास है कि जब भगवान् राम रावणसे युद्ध करने जा रहे थे; तो उन्हें नीलकंठ पक्षीके दर्शन हुए और उसी दिन वे विजयी हो गये। तभीसे इस पक्षीके दर्शन शुभ समझे जाते हैं। कुछ नीलकंठका यह अभिप्राय बताते हैं कि समुद्रमन्थनके समय भगवान् शङ्करने अपने गलेमें गरल धारण किया था और उससे भगवान्‌का कंठ नीला हो गया था, अतः उन्हें नीलकण्ठके नामसे सम्बोधित किया और आज भगवान् शङ्करके दर्शन न होनेके कारण अन्धपरम्परासे नीलकण्ठ पक्षीको ही उनका प्रतिनिधि मान लिया गया।

हम सदाकी भांति इस वर्ष भी विजयादशमीका शुभ उत्सव मनानेके लिए प्रस्तुत हुए हैं। परन्तु आज हमें उत्सव ही नहीं, अपितु आसुरीवृत्तियों पर सचमुच विजय की आवश्यकता है। विश्वविनाशके पथ पर अग्रसर होता जा रहा है। संसार यात्रामें सफलता और विजय प्राप्त करने के लिए आजके दिन हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि संसारसे निराशाके बादल छिन्न भिन्न होकर विश्वशांतिके साथ रामराज्यकी स्थापना हो सके।

यदि हमें यथार्थमें दृढ़ होना है; संसारयात्रामें सफल और विजयी होना है तो हमें भी श्रीरामचन्द्रजीके समान अजेय विजयरथमें यात्रा करनी चाहिए। गोस्वामी

जिसे हम न कर सकें? ऐसी कौन-सी वस्तु है जिसे हम न पा सकें?

"आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।"

माँ जिस प्रकार शक्ति बल और जीवनप्रदातृ हैं, उसी प्रकार वे मानवोंको भोग स्वर्ग और मोक्ष भी प्रदान करने वाली हैं। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सच्चे हृदयसे माँ की आराधना करते हुए अभिलषित वस्तुओंको प्राप्त करें, और संसारकी भलाईके लिए अपने आपको हंसते-हंसते माँ के चरणोंमें न्यौछावर कर दें।

❀ सुर-सरस्वतीका महत्त्व ❀

[आचार्य श्रीसदाशिव दीक्षित]

समस्तभाषा जननीमलङ्कृताम्
विभिन्न वेदप्रभवामदूषिताम् ।
गुणोज्ज्वलां शक्तिमयीं सुधीमही-
ममर्त्यवाणीममृताय धीमही॥

भारतवर्षमें भाषा-त्रितयीका अध्ययन एवं अनुशीलन सनातन कालसे चला आया है । सर्वसाधारणकी बोलचालमें प्रयुक्त भाषासे भिन्न भाषामें शिक्षित लोगोंका विचार-संचार और भावोंका आदान-प्रदान प्राचीन कालसे ही भिन्न रूपमें होता रहा है । क्योंकि प्रायः करके राजसभाकी भाषा जनताकी भाषा नहीं हुआ करती, गणतन्त्रके सदस्योंकी वाणी जनताकी वाणी तो है, पर यह वह वाणी नहीं जिसमें सर्वसाधारण जनता अपने विचारोंकी अभिव्यक्ति कर सके । इन दो भाषाओंके अतिरिक्त एक और भाषाका भी प्रयोग होता है । वह है राजलेखोंकी भाषा, पट्टे परवाने आदिकी भाषा । मौर्यकालमें दो भाषाओंका स्पष्ट उल्लेख है । कौटिल्यका अर्थशास्त्र संस्कृत भाषामें है, और अशोकके शिलालेख पाली भाषामें । यह अनुमान भी निर्मूल नहीं कि सर्वसाधारणकी भाषा इनसे भिन्न रही होगी । राजपूतकालमें भी शासन भाषा संस्कृत थी, राजसभाकी भाषा महाराष्ट्री थी और सर्वसाधारणकी भाषा अपभ्रंश थी । अतः इसके लिये प्रमाणोपन्यासकी आवश्यकता नहीं कि इस देशमें अनादिकालसे तीन भाषाओं का प्रचार रहा है, क्षेत्रीय, देशीय एवं शासकीय । वैदेशिक शासन, व्यापार आदिकी सुविधाके लिये विदेशीय भाषाके ज्ञानका परिज्ञान भी आवश्यक था । [संस्कृतके नाटकोंमें भी उदात्त पुरुषोंकी भाषा संस्कृत मिलती है, और चेटी दासी आदि भृत्य वर्गकी प्राकृत या अपभ्रंश मिलती है । वाल्मीकि रामायणमें भी हनुमान्ने कहा है "यदि वाचं प्रदास्यामि मानुषीमिह सांस्कृताम् । रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति" अतः निश्चित ही उन दिनों शिक्षितों, शासकों और जनसाधारणकी भाषाएं अलग अलग थीं ।

—सम्पादक]

इस प्रकार यद्यपि इस देश में सहस्रों भाषाओंका प्रचलन रहा है, पर उन सबका उद्भव एक ही भाषासे-गीर्वाण वाणीसे हुआ है । इस भाषासे सम्पूर्ण क्षेत्रीय भाषाओंमें इतना अधिक साम्य पाया जाता है, जितना कि अन्य भाषाओंमें परस्पर नहीं ।

समस्त सागर जगत्में सर्वप्रथम विश्व तत्वके विश्लेषणकर्ता वैज्ञानिकों, प्रकाण्ड पण्डितों, आगम निगमके परिशीलक आस्तिक-नास्तिक दर्शनके दिग्दर्शकों, तत्व-द्रष्टा ऋषियों आदिने अपने अनुभवों, चिन्तन, मननकी स्थितियों एवं प्रज्ञाधिगत विमल ज्ञान रहस्योंकी पूर्ण रूपमें अभिव्यक्ति इसी भाषाके माध्यमसे की है । विश्वके विमल ज्ञान (वेद आदि) इसी भाषामें निर्मित हुए हैं । क्रांतदर्शी मह-

※ लेखकके 'गांधी विजय' नामक अप्रकाशित महाकाव्यसे ।

श्री तुलसीदासजी भगवान्के विजयरथका निम्न शब्दोंमें वर्णन करते हैं—

"सौरज धीरज तेहि रथ चाका । सत्यशील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल विवेक दम परहित घोरे । क्षमा कृपा समता रिजु जोरे ॥
ईश भजन सारथी सुजाना । विरति चर्म सन्तोष कृपाना ॥
दान परशु बुधिशक्ति प्रचण्डा । वर विज्ञान कठिन कोदण्डा ॥
अमल अचल मन त्रोण समाना ।
शम-यम-नियम शिलीमुख नाना ॥
कवच अभेद विप्र-गुरु-पूजा । यहि-सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके । जीतन कहं न कतहुँ रिपु ताके ॥

इस प्रकारके अजयरथसे यदि हम अपनी विजययात्रा प्रारम्भ करेंगे तभी इस संसाररूपी समरक्षेत्रमें विजय प्राप्त कर सकेंगे । ईश्वर हमें इस प्रकारका बल बुद्धि दे कि हम इस विजयादशमीके वास्तविक महत्त्वका ज्ञान प्राप्त कर संसार तथा अपनी आत्माका कल्याण कर सकें ।

❋ ज्योतिःशास्त्रका मूल वेद है ❋

[पं० श्री जगन्नाथ शास्त्री न्यायभूषण विद्याभूषण वेद-गीतालेखक]

'ज्योतिष्मती' के पाठकगण! वेद स्वाध्यायशील विद्व-द्वृन्द ! तथा ज्योतिःशास्त्रके श्रद्धालु मनुष्यों ! ज्योतिष-शास्त्रका फलित भाग कहांसे लिया गया, इस विषय पर वैदिक सिद्धान्तसे विचार किया जाएगा ।

"छन्द- पादौ तु वेदस्य ज्यौतिषं नयनं स्मृतम्"

इस उक्तिसे ज्ञात होता है कि ज्योतिषशास्त्रका गणित और फलित दोनों भागोंका मूल सिद्धान्त वेदोंमें उपलब्ध होता है । वैदिक आधार पर मानव जातिकी परमायुः १२५ वर्ष ज्ञात होती है, प्रत्येक मनुष्य प्रातः और सायं संध्यो-पासनामें प्रार्थना करता है :—

"जीवेम शरदः शतम्'''भूयश्च शरदः शतम्"

हम सौ वर्ष जीवें बल्कि सौ वर्षसे भी अधिक जीवें अतः प्रतीत होता है, मनुष्यकी पूर्णायुः १२५ वर्ष थी । ज्योतिषशास्त्रकी गणित और फलित भागोंके पूर्ण तत्ववेत्ता पराशर और जैमिनी हुए हैं । "कलौ चण्डी पराशरौ" इस उक्तिके आधार पर श्रीपराशरजी जिन्होंने होराशास्त्रका निर्माण किया था और पूर्व मीमांसाके कर्ता जैमिनीजीने "जैमिनी सूत्र ग्रन्थ रचा, जिन ग्रन्थोंमें गणितके आधार पर मनुष्यायुःके ध्रुवांक भी लिखे हैं, वह प्रायः जन्मकालेष्ट-घट्यादि पर और नक्षत्र घट्यादि पर दिये हुए हैं और नक्षत्रोंका आधार अथर्ववेदसे लिया है । जैसे--

"सुहवमग्ने कृत्तिका रोहिणी चाऽस्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा ।
पुनर्वसू सूनृता चारु पुष्यो भानुराश्लेषा अयनं मघा मे ॥२॥
पुण्यं पुर्वाफल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु । राधे विशाखे सुहवाऽनुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम् ॥३॥
"अन्नं पूर्वा रासतां मे अषाढा ऊर्जं देव्युत्तरा आव-हन्तु ॥ अभिजिन्मे रासतां पुण्यमेव श्रवणः धनिष्ठाः कुर्वतां सुपुष्टिम् ॥४॥
आ मे महच्छतभिषग् वरीय आ मे द्वया प्रोष्ट पदा सुशर्म ॥ आ रेवती चाश्वयुजौ भगं म आमे रयिं भरण्य आवहन्तु ॥

(अथर्व कां० १९ सू० ७ मं० २, ३, ४, ५)

इन मंत्रोंमें कृत्तिका नक्षत्रसे आरम्भ दिखाकर भरणी नक्षत्र पर सूक्तको समाप्त किया है । और २८ नक्षत्रोंका यथाक्रम वर्णन किया है, इससे ज्ञात होता है, वैदिककालमें नक्षत्र गणना कृत्तिकासे होती थी । बहु कालान्तरमें अश्विनी नक्षत्रसे नक्षत्रारंभ माना गया । महाभारत कालमें भी नक्षत्रगणना और संवत्सरारंभ कृत्तिकाके आधार पर माना जाता था, "क्योंकि भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीने भी "मासानां मार्गशीर्षोऽहम्" कहा है । अद्यतन पंचांगोंसे भी यही सिद्ध होता है कि कार्तिक शुदि पूर्णिमाके दिन कृत्तिका नक्षत्र होता है, कृत्तिका नक्षत्रके साथ मार्गशिरवदिका आरम्भ हो जाता है अतः मार्गशिर मासारंभमें ही वदि-शुदिके आधार पर मार्गशिरसे वर्षारंभ होता था । तथा विराट् पर्व (महा-भारत) से पांडवोंके प्रत्यक्ष होनेका समय मार्गशिर मास जिसमें अधिमासके आजाने से १३ वर्ष समाप्त माने गए,

---

र्षियोंके विचारोंका अभिव्यंजन, दार्शनिक तत्वोंका विश्ले-षण, समस्त-संस्कारोंका निरूपण इसी भाषामें वस्तुतः तार्किक एवं मार्मिक पद्धतिसे प्रतिपादित किया जा सकता है । परिष्कृत विचारके प्रकट करनेकी क्षमताके कारण जैन और बौद्धोंने अपने तीर्थङ्करों एवं तथागत बुद्धके उपदेशोंके भाष्य इसी भाषामें किये हैं । इसमें प्रसाद, ओज और माधुर्यकी त्रिधारायें इठलाती हुईं स्वाभाविक गतिसे बह रही हैं । यह वह अमर सरस्वती ही है, जिसके द्वारा अमृ-तत्वकी उपलब्धि हो सकती है और कविता कामिनी कान्त कालिदासकी यह उक्ति मन-मानसमें तरङ्गित हो उठती है कि—

"सरस्वती श्रुति महती महीयताम्"

——

एवं जैमिनी और पराशरने भी अथर्ववेदाधार पर मनुष्यायुः गणनाका चित्र "कृत्तिका" नक्षत्रसे माना, और मनुष्यादि प्राणियोंकी परमायुः इस प्रकार मानी।

"पञ्चाहं नखभूसमा नृकरिणां व्याघ्राद्यजादेर्नृ पाः"

केशवी जातक आयुर्दायाध्याय श्लोक २६ मनुष्य और हाथीकी परमायुः १२० वर्ष ५ दिन मानी है, यही विचार श्रीपराशरजी और जैमिनीजी का था। अतएव उन्होंने मनुष्यकी आयुःका विभाग मनुष्यके कर्मोपभोगके लिये नौ भागोंमें विभक्त किया और उसे अथर्ववद नक्षत्र पाठानुसार गणना की। यथा—

'अग्निभाज्जन्मभान्ते च गणयेन्नवभिर्भजेत्।
शेषं दशा रचंभौराजीवार्किज्ञ शिखीभृगुः॥"

अर्थ—कृत्तिका नक्षत्रसे जन्म नक्षत्र तक गणना करके नौ अंकसे विभक्त करे, जो शेष रहे उसे अंकानुसार सूर्य, चन्द्रादिकी दशा जाननी।

(प्रत्येक ग्रहके भिन्न वर्ष क्यों लिये, इस विचार पर फिर कभी लिखूंगा)।

कलिके कुछ समय व्यतीत होने पर मनुष्यकी परमायुः १२० वर्षसे थोड़ी प्रतीत होने लगी, तब मनुष्यायुः १०८ वर्ष मानकर "अष्टोत्तरीदशा" का क्रम निकाला। इस अष्टोत्तरी दशाका आरम्भ भी अथर्ववेद लिखित नक्षत्र गणनानुसार "कृत्तिका" नक्षत्रसे ही आरम्भ किया, न कि अश्विनी नक्षत्रसे। जैसे—

"दशा अष्टोत्तरी प्रोक्ता शम्भुना कृत्तिकादितः।
चतुस्त्रयं पुनर्वेदा अग्निर्वेदास्त्रयं पुनः॥"
(ज्योतिःश्याम संग्रह दशापाकाध्याय श्लोक ५)

अष्टोत्तरी दशाका आरम्भ भी वैदिक नक्षत्र गणनानुसार कृत्तिकासे रहा है। तथा—

"रविश्चन्द्रः कुजश्चाद्रि मन्दो जीवस्तमो भृगुः।
दशा अष्टोत्तरी ख्याताकेतु हीना स्मृता बुधैः॥"

कलियुगके चार हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर मनुष्यकी परमायुः जब बहुत कम प्रतीत होने लगी तथा भविष्य-पुराण और श्रीमद्भागवतके आधार पर —

"विंशत्रिंशति वर्षाणि परमायुः कलौ नृणाम्"

जब मनुष्यायुः २०-३० वर्षका माध्यम ज्योतिर्विद्विद्वानोंने देखा, तब ३६ वर्ष ही मनुष्यकी परमायुः मानकर "विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी दशाके स्थान पर ३६ वर्ष वाली योगिनी दशाका प्रकार चलाया, परन्तु अथर्ववेदीय, नक्षत्र गणनाका आधार छोड़ दिया और अश्विनी नक्षत्र से गणना आरम्भ कर दी। जैसे—

"जन्म नक्षत्र पर्यन्तं गणयेद्रामसंयुतम्।
अष्टभिर्भाजितं शेषं मंगलाद्या दशा भवेत्॥
मंगला पिङ्गला चैव धान्या भ्रामरिभद्रिके।
उल्का सिद्धा संकटा च योगिनी च दशाःस्मृताः॥"

(ज्योतिःश्याम संग्रह २२ अध्याय श्लोक १०,७)

विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी दशाओंके ग्रह क्रमको छोड़कर और क्रम रखा। जैसे चंद्र १ वर्ष, सू० २, बृ० ३, मं० ४, बु० ५, शनि ६, शु० ७, रा० ८ वर्ष नियत करके ३६ वर्ष मनुष्यायुः निश्चित कर दी। परन्तु यह क्रम पूर्णतया फलादेशके लिये पूरा नहीं उतर रहा है। संभव है किसी विशेष देशमें इसका विशेष प्रचार हो, परन्तु विंशोत्तरी और अष्टोत्तरी दशाएं अथर्ववेदके आधार पर शुद्ध प्रतीत होती हैं।

जब वर्ष दशाके प्रकार पर दृष्टि डाली जाती है वहां भी अथर्ववेदीय नक्षत्र गणनाका आधार शुद्ध प्रतीत होता है, न कि उससे भिन्न भिन्न प्रकार। जैसे—जन्मदशामें "अग्निभाज्जन्मभान्तं च," नियत था वैसे वर्ष दशामें भी यही नियम चलाया।

जैसे—

"कृत्तिकातः समारभ्य यावद्वर्षभं भवेत्।
नवभिश्च हरेद्भागं शोषाङ्काः दशा क्रमः॥
आ चं भौ रा जी श बु केशु दशाक्रमः॥

वर्षदशामें केतुग्रह अधिक रखा है, जन्मदशामें केतु नहीं रखा।

हीनांश पात्यांश दशा, अथवा कृत्तिकासे जन्म नक्षत्र की संख्या गत वर्षोंमें जोड़ दी जावे और नौका भाग देकर दशा क्रम होता है, अथवा गत वर्षोंमें जन्म नक्षत्र जोड़कर २ घटावे ९ का भाग दे शेष दशा क्रम होगा। हीनांश दशा प्रकारको छोड़कर शेष दशाओंमें नीचे लिखा दोष आता है, किसी का जन्म मघा नक्षत्रकी अन्तिम २ घटीके

"भगवद्गीता चकार मुक्तावलिः"

अर्थात्

—गीतामें आये हुए ३५० चकारोंके चमत्कारिक अर्थ—

[महामहोपदेशक श्री पं० प्रभुदत्त जी शास्त्री विद्यावाचस्पति]

[श्री शास्त्रीजीके विलक्षण वैदुष्यका पाठकोंने पिछले लेख (गताङ्क) में अनुभव किया ही है । उसी विषयमें यह लेख माला चल रही है । —सम्पादक]

(गताङ्क से आगे)

चाप शब्द

ऐसे ही "द्रुपदश्च विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः" इसमें भी सात्यकिके 'अपराजितः' इस विशेषण में भी इतना सौन्दर्य नहीं है । क्योंकि सदा कोई न पराजित होता है और न अपराजित । यदि अपरोंसे अजित समझा जाय तो अपनोंसे जित हो जायगा, अतः यहां 'चापराजित' पद है जिसका अर्थ है 'चापेन धनुषा राजितः' चाप राजितः अर्थात् जो युद्धके मैदानमें धनुषसे सुसज्जित खड़ा है वह 'चापराजित' है । यहां भी 'च' नहीं है किन्तु 'चाप' शब्द है ।

"अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति ते ऽव्ययाम्"

अर्जुनको भगवान् कह रहे हैं कि भूत तुम्हारी बेमिट अकीर्ति कहा करेंगे । अब यहां 'इस प्रश्नका होना स्वाभाविक है कि कैसे भूत कहेंगे ? भूत तो मक्खी मच्छर भी होते ही हैं वे क्या अकीर्ति करेंगे ? भूत तो मिट्टी की डली और पानी की बुल्लू भी होती है वे क्या अकीर्ति करेंगे ? अतः 'भूत' का कोई विशेषण आना चाहिए, इसीलिए बोला गया है कि 'चापि भूतानि' चापधारी चाप को धारण करने वाले अर्थात् तलवारके धनी अकीर्ति करेंगे । अन्यथा श्लोक तो "अकीर्तिमपि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्" ऐसा पढ़नेसे भी ठीक बैठता था, अतः 'चापि भूतानि' कहा गया है । ऐसे ही—

"शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्"

इसमें 'युद्धादप्यपलायनम्' पढा जा सकता था, फिर चकार क्यों आया ? "चापिभ्यः अपलायनम् चाप्यपलायनम्" धनुषधारियोंको देखकर भयभीत होकर न भागनेको धर्म बताया गया है, आक्रमण करनेकी बुद्धि से शत्रु पर भागना तो ठीक ही है ऐसे ही ।

"साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते"

यहां भी 'चपो वंशवृक्षः' चपमाप्नुवन्ती चपया दण्डिन इत्यर्थः ।" जो चपको धारण करते हैं वे 'चपाप' कहाते हैं अर्थात् दण्डी स्वामी अर्थ होता है । अतः वहां भी 'च' कार नहीं है ।

चोप शब्द

"यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्"

यहां भी 'चुप मन्दायां गतौ' यह पाणिनीय धातु पाठ में स्पष्ट है जो मन्दगतिमें पड़ा हो वह 'चोप-पन्न' है "चोपे पन्नं चोपपन्नम्" अर्जुन मन्दगतिमें पड़ा है। अतः उसे 'चोपपन्न' कहा गया है यहां भी 'च' कार नहीं है ।

चमत्शब्द

"न चमत्स्थानिभूतानि न चाहंतेष्ववस्थितः ।"

निकट है सारा नक्षत्र भुक्त चुका है, परन्तु इस नक्षत्रानुसार महदशाके पूरे दिन लगाएंगे, तो दशाओंका फल मिलने में बड़ा अन्तर पड़ता रहेगा ।

"कृतिकातः समारभ्य यावद्धर्षभं भवेत्"

इस प्रकारकी दशामें वर्ष नक्षत्रका भुक्त भोग्य निकाल कर दिन संख्या भुक्त भोग्य में आजाएगी । अतः यह दशा अथर्ववेदीय नक्षत्र लेखनानुसार माननीय प्रतीत होती है ।

शेष विचार जनताके आगे फिर कभी रखूंगा ।

—

ये भूत किसी चमत्कारमें नहीं हैं किन्तु एक चमत्कार जिसका बताना, समझना कठिन होता है, वह एक ईश्वरीय महिमा है, जिसमें हैं अतः यहां भी 'च' शब्द नहीं है किन्तु 'चमत्शब्द' है ।

'चरम शब्दका 'चरमन्ति' पद ।

"मच्चित्ता मद्गत प्राणाः बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥"

इसमें जीवन्मुक्तपुरुषका वर्णन है, वे लोग 'मच्चित्त' अर्थात् मुझमें ही उनके चित्त और प्राण रहते हैं, वे जब कहीं बैठते हैं तो आपसमें एक दूसरे को बताते रहते हैं । मेरा ही कथन करते हैं, और प्रसन्न रहते हैं । अब यदि यहां 'तुष्यन्ति' और 'रमन्ति' दो क्रियापद माने जायं तो एक तो पुनरुक्ति-सी होती है, दूसरे व्याकरण शास्त्रसे भी 'रमन्ति' पद सिद्ध नहीं होता है, तीसरे 'तुष्यन्ति' और 'रमन्ति' के बीचमें आया हुआ चकार व्यर्थ होता है, रमन्ति के आगे आया हुआ 'च' कार तो समुच्चयार्थक मान भी लिया जाये, इत्यादि दृष्टियोंसे सन्देह होता है कि यहां— कुछ और न हो, वस्तुतः इस जीवन्मुक्त-प्रशंसाके प्रसङ्गमें 'रमन्ति' नहीं है, किन्तु 'चरमन्ति' क्रियापद है जिसकी सिद्धि नामधातुकी विधिसे होती है । 'चरमे इवाचरन्तीति चरमन्ति' 'चरम' अर्थात् अन्तिम पुरुषके समान जो आचरण करते तब उन्हें 'चरमन्ति' पदसे प्रकाशित किया जाता है । 'चरम' शब्द अन्तिमका पर्याय है, अब वे पुरुष दुबारा जन्म नहीं लेंगे । अतः वे अन्तिम हैं ।

वासो यथा परिवृतं मदिरा मदान्धः ।
सिद्धो न पश्यति यतोऽध्यगमत् स्वरूपम् ॥

नाम धातुके पदसे उन्हें प्रकाशित इसलिए भी किया गया है कि नामसे धातु बनाते समय उसे नामत्व और रूप छोड़ने पड़ते हैं । जिस चरम शब्दके रूप 'चरम, चरमौ, चरमे' होते थे वे न होकर अब 'चरमति' चरमतः चरमन्ति, होते हैं । जीवन्मुक्त भी नामरूप भूल जाते हैं, इस संकेत के लिए नामधातु पद बोलकर उन्हें प्रकाशित किया गया है ।

अतः यहां 'च' कार नही है 'चरमन्ति' है ।

'च-योगी'

"अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः ।
स संन्यासी च-योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः ।"

जो व्यक्ति कर्मफलका आश्रय बिना लिए कर्तव्य कार्य करता है, वह सच्चा सन्यासी है और सन्यासी भी साधारण नहीं है, वह सन्यासी है जो सूर्य मण्डलका भेद करके ब्रह्मानन्द लूटता है और फिर पुनरावृत्ति नहीं पाता । जिनके लिए लिखा है:—

"परिव्राड् योगयुक्तश्च रणेचाभिमुखो हतः ।
द्वावेतो ब्रह्मविन्देते सूर्यमण्डलभेदिनौ ॥"

देखिए संस्कृत कोष शब्दार्थ चिन्तामणि—'च' कारः, सूर्य वाचकः । अतः इसमें 'च-योगी' शब्द है 'च' नहीं है ।

'च' शब्द

इस प्रकार अनेक स्थानों पर 'चकार' चकार नहीं है, किन्तु वह चाप, चोप, चप, चमत्कार, चरमन्ति, 'च-योगी' आदि शब्दों का पूर्वावयव है ।

'च' शब्द के अर्थ विचार

'च' शब्द अस्तित्ववान्का वाचक है—

शाक्त शास्त्रोंमें दुर्गासप्तशतीकी तुलना करनेवाला मन्त्रराज नवार्ण मन्त्रके नामसे प्रसिद्ध है । "ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे" यह नौ अक्षरोंका मंत्र है, इसमें 'विच्चे' पदकी व्याख्या करते हुए सप्तशती सर्वस्व के लेखक महामहोपाध्याय श्री पं० सरयूप्रसादजी द्विवेदी लिखते हैं कि 'विच्चे' इसमें तीन पद हैं—वित्, च, ई, और तीनों ही सम्बोधन पद हैं—हे वित् ! हे ज्ञान रूपिणि ! हे 'च' ! अर्थात् अस्तित्व मति (चकारोऽपिनपुंसकः सन् सत्परः) यह चकार 'सत्' का पर्याय शब्द है, और हे इ ! आनन्दमहिषि ! (अस्यस्त्री ई तत्सम्बोधने 'इ !') इस प्रकार सच्चिदानन्दरूपिणि इत्यर्थः । इस क्रमसे गीतामें भी जहां अधिक चकार प्रतीत होते हैं वे एक दूसरेको परस्परमें अस्तिताके अर्थमें संबोधन हैं । दुर्योधन अपने आचार्यसे कहता है कि—

"काश्यश्च परमेश्वासः शिखण्डी च महारथः"

इसमें 'च !' हे अस्तित्व धारिन् ! अर्थात् आप यहां हैं आपकी हस्ती एक बहुत बड़ी वस्तु है ।

'च' का अर्थ प्रचण्ड भी है । अतएव

कस्माच्च ! ते न मरेन् महात्मन
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादि कर्त्रे ।"

उज्जैन कुम्भपर्व स्नान निर्णय

[श्री पं० चन्द्रकान्त शर्मा राजज्यौतिषी उदयपुर राजस्थान]

[भारतीय पर्वोंमें 'कुम्भ' का विशिष्ट महत्त्व है और लाखों धर्मप्राण व्यक्ति इस पर्व पर स्नान दानादि कर पुण्य लाभ करते हैं। आगामी कार्तिकी अमावस्या सं० २०१५ को उज्जैनमें कुम्भ होना चाहिए, ऐसा प्रस्तुत लेखके लेखक उदयपुरके राजज्योतिषी वयोवृद्ध विद्वान् पण्डित श्री चन्द्रकान्तजी शर्माने शास्त्रीय प्रमाणोंसे सिद्ध किया है। इस विषयमें प्राप्त विभिन्न मतान्तरोंकी भी आपने मीमांसा की है। हमारी मान्यता है ऐसे विवादास्पद धार्मिक विषयोंका सप्रमाण निर्णय दुराग्रह बुद्धि छोड़कर विवेकी विद्वानोंको मिलजुल कर स्वस्थ वातावरणमें समयसे पूर्व कर लेना चाहिए। क्योंकि 'सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते' यही उचित मार्ग है। स्वयं सरकारको भी विद्वानोंकी एक समिति बनाकर ऐसे विवादास्पद विषयों पर निर्भ्रान्ति निर्णय लेना चाहिए, जिससे आचारोंकी संरक्षा हो सके। जिस प्रकार समय पर बीज बोनेसे ही ठीक खेती होती है उसी प्रकार शास्त्रीय परम्परा प्रतिपादित समय पर ही पर्व कृत्य पूर्ण होने पर लोक कल्याण हो सकता है अन्यथा अनाचार वृद्धि होने पर राष्ट्र विप्लव तक हो जाते हैं। ऐसी स्थितिमें इसे एक राष्ट्रीय प्रश्न मानकर विद्वानोंको समुचित विचार करना चाहिए। यदि प्रस्तुत लेख से विभिन्न मत और प्रमाण संवलित कोई लेख विद्वान् महानुभाव भेजेंगे तो उसका भी प्रकाशनार्थ सहर्ष स्वागत होगा।

—सम्पादक]

एकैश्वर्य्येस्थितोऽपि प्रणत बहुफले
यः स्वयं कृत्तिवासाः।
कान्ता सम्मिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां
यः परस्तात् यतीनाम्॥
अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपि
तनुभिर्बिभ्रतो नाभिमानः।
सन्मार्गा लोकनाय व्यपनयतु
स वः तामसीं वृत्तिमीशः॥१॥
लब्धास्पदोस्मीति विवादभीरोः

यहां विराट् भगवान्के भयंकर रूपको देखकर भयभीत अर्जुन कह रहा है कि हे च! अर्थात् हे प्रचण्ड! क्यों न ये आपकी ओर झुक उठे जबकि आप गरीयान् हैं, ब्रह्माके भी आदिकर्ता हैं। इस तरह चकारके अनेक अर्थ हैं।

जहां समुच्चय अर्थमें 'च' आया है वहां अव्यय पद है जहां वे किसी वस्तुका भान कराता है वहां नाम है। समुच्चय के साथ अन्वाचय भी है। (क्रमशः)

———

तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्॥
यस्यागमः केवल जीविकायै
तं ज्ञानपण्यं वणिजं वदन्ति॥२॥
पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापिशास्त्रं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्याऽन्यतरद् भजन्ते
मूढ़ास्तु रूढ़िं न परित्यजन्ति॥३॥
शास्त्रं विभ्रति पद्येत धर्मन्यायेन केनचित्।
न्याय्यस्तत्र प्रमाणं स्यात्तत्रपाठो हि नश्यति॥४॥
अनपेक्षित गुरुवचना सर्वान्
ग्रन्थीन् विभेदयति सम्यक्।
प्रकटयति पर रहस्यं मिमर्शी
शक्तिर्निजा जयति॥५॥

हे! अखिल भारतीय ज्योतिषाचार्य्यो!! आपसे सविनय प्रार्थना है, मेरा संकेत केवल कुम्भपर्व स्नान निर्णय के विषयमें है। गतवर्ष उज्जैन स्नान विषयक कितना विवाद हुआ? दो बार स्नान हुए, इसके जवाबदार कौन?

और वे भी शास्त्रानुसार नहीं, उज्जैनमें कुम्भस्नान तो अब इस वर्ष २०१५ के कार्तिकी अमाको होना उचित है। गत दोनों स्नान तो सिंहस्थ स्नान थे। यह समस्त विद्वानों ने निर्विवाद मान लिया है और वह कुम्भ स्नानसे भिन्न विषय है यह भी निर्विवाद है, जिसका कि उज्जैनमें होने का शास्त्रीय आधार कुछ नहीं, केवल रूढ़ीवादकी परम्परा मात्र है। उज्जैनके लिए तो केवल कुम्भ स्नानका शास्त्रीय विधान है, यथा—

(१) सिद्धान्तपक्षके प्रमाणका जो केन्द्रीय चर विषुव तुलाराशिके पक्षमें है वे वि० सं० १५ के कार्तिकमें स्नान के समर्थक हैं उनका प्रमाण—

"घटे सूरिः शशी सूर्यः कुव्हां दामोदरे यदा।
धारायां च तदा कुंभो जायते खलु मुक्तिदः ॥१॥

(क) श्री रामव्यास पांडेय सम्पादक विश्वपञ्चाङ्ग काशी (सुदर्शन कुम्भांक पृष्ठ १७ वृन्दावन)

(ख) श्री गौरीकान्त झा काशीराज—दानाध्यक्ष (श्रीरामव्यासका पत्र ता० १५-५-५४ ई०)

(ग) श्रीरामकृष्णानन्द गिरि 'कुम्भपर्व निर्णय' एडवर्ड यंत्रालय प्रयाग सं० १९६५ में मुद्रित।

(घ) श्री सम्पादक अमृतपत्रिका (कुम्भ विशेषाङ्क पृष्ठ ६ प्रयाग)

(२) वैष्णव साम्प्रदायिक पक्षके प्रमाणका जो पणफर स्थिर विष्णु पद वृश्चिक राशिके पक्षमें है। ये वि० सं० २०१६ के कार्तिकी अमाके स्नान समर्थक हैं, उनका प्रमाण—

"वृश्चिके च यदा सूरिः तथैव शशिभास्करौ।
अमा तदा च धारायां कुम्भो भवति मुक्तिदः ॥२॥

(क) श्री नृसिंहगिरिजी मण्डलेश्वर निरंजनी पीठाधीश्वर सम्पादित चतुष्टयकुम्भपर्व निर्णय काशी

(ख) हिन्दुस्तान दिल्ली रविवार १७ जनवरी १९५४ पृष्ठ १० ......उज्जैनमें वृश्चिक राशिमें कुम्भ होता है। इ०

(ग) श्री जिज्ञासु "अमृतपत्रिका पृष्ठ १८ प्रयाग" और जो काशीके श्रीरामव्यास पाण्डेय हि० वि० ज्यौ० विभागाध्यक्ष आदि सप्तदश प्रमुख ज्यौतिषाचार्यों द्वारा निर्धारित, काशीके समस्त विद्वानोंकी अनेक सभाओंमें सुविचारित श्रीनागेश उपाध्याय ज्यौ० ऋषिकेश पंचाङ्ग सम्पादक द्वारा सम्पादित, श्री राजनारायण शुक्ल मन्त्री काशी विद्वत्-परिषद् द्वारा प्रकाशित, काशीस्थ समस्त प्रख्यात १०१ विद्वानों द्वारा अनुमोदित 'अवन्तिका कुम्भनिर्णय' नामक पुस्तक में उक्त दोनों पक्ष स्वीकृत हो चुके हैं।

अतः सिद्धान्ततः वि० सं० २०१५ के कार्तिक मासमें ही उज्जैनस्नान होना सिद्ध है कारण कि—विषुव संक्रान्ति पर सू. + चं. + गु वि० सं० २०१५ में ही प्राप्त है यथा—

भचक्र नाभौ विषुवत् द्वितयं समसूत्रगम्।
अयनं विषुवं चैव संक्रान्तेः पुण्यकालता ॥१॥
सूर्येन्दुगुरुसंयोग यद् राशौ तत्र वत्सरे।
सुधाकुम्भप्लवे भूमौ कुम्भो भवति नान्यथा ॥२॥
गंगाद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।
कलशाख्यो हि योगोऽयं प्रोच्यते शंकरादिभिः॥३॥

प्रत्येक कुम्भ चार स्थानों पर एवं प्रति तृतीय वर्षमें होनेसे द्वादश वर्षका काल बन जाता है। यथा—

देवानां द्वादशाहोभिर्मर्त्यैर्द्वादश वत्सरैः।

जायन्ते कुम्भ पर्वाणि......इत्यादि प्रमाणोंसे सिद्ध है। अन्यथा उज्जैनके बाद हरिद्वारका स्नान होने तक ६-७ वर्षका अन्तर हो जायगा। एवं नासिक उज्जैन के स्नान एक ही वर्षमें बनेंगे, जो शास्त्र तथा सिद्धान्त दोनोंसे विरुद्ध हैं और वह भारतीय जनताकी अज्ञानता का प्रत्यक्ष प्रमाण होगा। 'नीचे चार्कप्रभाकरे' के संकेतसे भी उज्जैनमें कार्तिकस्नानका महात्म्य स्पष्ट है यह विचारणीय विषय है।

मुख्यतः यह पर्वान्त कुम्भस्नान तो निःश्रेयस निवृत्ति मार्गके उपासक नित्यमुण्डी सन्यस्त मण्डलेश्वर दशनामी अखाड़े एवं नित्य जटिल विरक्त वैष्णव अनी अखाड़े वालों के लिए ही निहित है।

	देश	काल			पात्र
	तीर्थ स्थान	गुरु संवत्सर	सौरमास	चान्द्री तिथि	अधिकारी
कुंभस्नान	४	विभिन्न	४	४ अमा	सन्यासी निः श्रेयसार्थी विशेष मुण्डन अनधिकारी
सिंहस्थस्नान	१२	एक ही	१२	१२ पूर्णिमा	गृहस्थ अभ्युदयार्थी विशेष मुण्डन अधिकारी

देश काल पात्र द्वारा इतनी विभिन्नता स्पष्ट होने पर भी दुराग्रह एवं रूढ़ीवादके उपासक अनेक ज्यौतिषाचार्य एवं मठधारी सम्प्रदायाचार्य निषिद्ध मार्गका अनुसरण करते चले जा रहे हैं। किन्तु अन्ततोगत्वा आज नहीं तो कल इन्हें इस शास्त्र विहित मार्गको स्वीकार करना ही होगा। यह निवेदन है—

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम्॥

इस कुम्भ एवं सिंहस्थ स्नान विवेचनमें मैं करीब १६ वर्षसे संलग्न हूँ, इसका संक्षिप्त परिचय यहां देना उपयुक्त होगा—

१४-१-४० ई० को मेरे द्वारा सम्पादित उदयपुरीय पंचांगमें प्रयाग-कुम्भ मुद्रित कराया। १४-१-५० ई० को हरद्वार-कुम्भ प्रकाशित कराया। १४-१-५२ को प्रयाग कुम्भ मुद्रित कराया।

१८-४-५२ ई० को दैनिक नवभारत एवं ता० २५ को हिन्दुस्तान नयी दिल्ली तथा मासिक कल्याण गोरखपुर को भी "प्रयाग कुम्भ कब होगा" शीर्षक लेख भेजे किन्तु इन्होंने उनको प्रकाशित नहीं किया, परन्तु २-६-५२ को दैनिक लोकवाणी जयपुर ६-३-५२ को दैनिक सन्मार्ग काशी, १८-६-५२ को सा० सन्मार्ग जयपुर, ता० १६-६-५२ को सा० श्रीवेंकटेश्वर बम्बई इन चार पत्रोंमें उक्त लेख छप गया। ११—१२-५३ को श्री मा० श्रद्धेयवर श्रीमान् राजेन्द्रप्रसादजी राष्ट्रपति महोदयकी सेवामें एवं श्रीमान् विद्वद्वर श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन्‌जी उपराष्ट्रपति महोदय भारतवर्ष तथा श्रीमान् मा० श्री कन्हैय्यालाल जी माणिकलाल जी मुन्शी राज्यपाल महोदय उ० प्र० लखनऊ, श्रीमान् वयोवृद्ध पं० गोविन्दवल्लभजी पन्त मुख्य मन्त्री उ० प्र० लखनऊकी सेवामें रजिस्ट्रियें भेजीं, किन्तु उन पर कोई ध्यान न दिया गया और जो कुछ प्रयाग कुम्भमें हुआ वह प्रकट ही है।

२२-११-५४ ई० को श्रीमान् मा० के० एम० मुन्शी जी राज्यपाल महोदय उ० प्र० के नाम फिर दुबारा प्रार्थना की, कि—"गत प्रयाग कुम्भ पर जो होना था वह हो चुका किन्तु अब आगामी नासिक स्नान होने वाला है। उसका तो निर्णय हो जाना उचित है।" इसके उत्तर में ता० १४ को नं० १२८४०/जी० एस० द्वारा सूचना मिली कि—नासिक कुम्भ सम्बन्धित पत्र ता० २६ को प्राप्त हुआ, धन्यवाद। इसके अनन्तर २०-६-५५ ई० के नवभारत टाइम्स अङ्कमें इस प्रकार मुद्रित था "धोन्दसे चली स्पेशल ट्रेनमें चार भिक्षुक एवं पूना से ६४ यात्रियों में २४ भिक्षुक थे जो नासिक गोदावरी स्नानार्थ आये।" इसी प्रकारका वृत्तान्त "फ्री प्रेस जर्नल" इङ्गलिश पत्र में भी मुद्रित था। किन्तु इन दुराग्रही श्रीमहन्त रामलखनदास अ० भा० श्रीपंचनिर्मोही अनीअखाड़ा अहमदाबाद, श्री महन्त राधामोहनदास अ० भा० श्रीपंच दिगम्बरी अनी अखाड़ा तपोवन पंचवटी, श्री महन्त रामखेलावनदास अ० भा० श्रीपंचनिर्वाणी अनी अखाड़ा अयोध्या तथा—श्री मोहनदास प्रधान मन्त्री अ० भा० श्रीपंच दिगम्बरी अनी अखाड़ा आदि रूढ़ीवादी गुटने तो उसके एक वर्ष बाद—

२०-६-५६ ई० को ही नासिक गोदावरी स्नान माना और इस स्नाननिर्णयमें नितान्त अनावश्यक अखण्ड त्रिखण्ड सिंहस्थ विवाद उपस्थितकर्ता ज्योतिषी वर्ग सहायक बन गये जो ये थे—नासिक पंचवटीमें ज्योतिष पुरोहित संघ सिंहस्थ समिति अध्यक्ष, ज्योतिषी श्रीराधाकृष्ण हरिशुक्ल एवं श्री नारायण श्रीधर शास्त्री वारे इ० जो प्रहलादवीय प्राचीन बाण वृद्धिरसक्षयः धर्मशास्त्र संमत पक्षके हैं, इनके मतसे अखण्ड सिंहस्थ था एवम्—त्र्यम्बकेश्वरमें "चिटणीस सिंहस्थ यात्रा समिति" अध्यक्ष श्री माधवराव नारायण राव जोगलेकर एवं श्री यादवशंकर शुक्ल आदि जो श्री धुंडी राज लक्ष्मण दातेदक्-

तुल्य पंचांगकर्ता सोलापुर, जो नवीन लक्ष वृद्धि दशलयके पक्षपाती हैं इनके मतसे त्रिखण्ड सिंहस्थ था। इस स्वेच्छाचारके अनन्तर फिर उज्जैन स्नान निर्णयके निमित्त

ता० २०—११—५४—को मैंने श्रीसूर्यनारायणजी श्री संकर्षणजी व्यास-बन्धु ज्योतिषाचार्योंसे पत्र-व्यवहार आरम्भ किया, तथा ३—१—५५ को रजिस्टरी नं० १४६ "अमर ज्यौतिष कार्यालय" के नाम इस आशयकी भेजी कि आप लोगोंको उज्जैन स्नान यदि सिंहस्थमें ही करना अभीष्ट हो तो ता० २४—५—५६ गुरुवारको स्नान होना उचित है। इसके बाद १३—१—५५ को श्री सौभाग्य मल जैन मध्यभारत राजस्व मन्त्री उज्जैन आये और उन्होंने भी मेरे मन्तव्यानुसार ही संवत् १३ में ही उज्जयिनी स्नान शास्त्रानुसार मान लिया, फिर भी अधिक निश्चयार्थ २७—३—५५ को उक्त मंत्री महोदयने बनारसमें जाकर वहांकी विद्वत् समितिसे निर्णय कराया, वहांसे भी मेरे अनुकूल ही वि० सं० २०१३ में ही निर्णय हुआ। और तदनुसार ही श्री आनन्दशंकर व्यास उज्जैनने ३—४—५५ के एवं राजस्वमंत्री श्री सौभाग्यमलजीने १५—४—५५ तथा ६—७—५५ के हिन्दुस्तानके अंकों में अपनी अपनी घोषणा छपवा दी। इसके अलावा भी २०—१—५६ तथा २—५—५६ के हिन्दुस्तानके अंकों में श्री करपात्रीजीने भी प्रकाशित कराया, प्रत्युत २४—५—५६ गु० सं० १३ वै० १५ को स्वयं श्री करपात्रीजी एवं श्री शंकराचार्य द्वय, एवं श्रीरामानुजाचार्य आदि अनेक साधु विद्वानोंने ५ लाख जनताके साथ उज्जैन स्नान किया यह समाचार ता० २६—५—५६ तथा २८—५—५६ के हिन्दुस्तानके अंकोंमें एवं ता० ३०—५—५६ के दैनिक अर्जुनमें प्रकाशित हुए हैं।

किन्तु दिगम्बर अखाड़ेके महन्त श्री रामदुलारेदास एवं श्रीमोहनदास प्र. मन्त्री अ. भा. दिगम्बर श्री पंच अनी अखाड़ा एवं श्री माखनचोरदास प्रबन्धक श्री राधावल्लभीय निर्मोही अखाड़ा रासमंडल वृन्दावन (मथुरा) आदि दुराग्रही गुटने फिर भी एक पुस्तक "शाही स्नान दिग्दर्शन" नामकी मुद्रित कराई जिसमें श्री स्वामी करपात्रीजी जैसे विद्वान् साधु एवं राष्ट्र राजमान्य पद्मभूषण श्री सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य उज्जैनके प्रति कई कए अनर्गल एवं उत्शृंखलता पूर्ण अपशब्द प्रयुक्त करते हुए अपना भ्रष्ट प्रचार करते ही रहे और आश्चर्य यह कि इनके पृष्ठ पोषक अहंमन्य ज्योतिषी श्री अमरचन्द जी जैसे मिल गये जिसके परिणाम स्वरूप शासनको दुबारा सन् ५७ में भी स्नानके समय प्रबन्धमें व्यर्थ अर्थ हानि उठानेका निर्णय करना पड़ा। ४-४-५७ के हिन्दुस्तान के अंकमें इसके भी विरोधमें मैंने प्रकाशित कराया। अन्त तोगत्वा १३-४-५७ को भी मध्यभारत शासनको फिरसे दुबारा प्रबन्ध करना ही पड़ा।

यद्यपि गतानुगतिक न्यायानुसार कई विद्वान् साधु एवं ज्यौतिषी भी इस अवसर पर सम्मिलित हुए, किन्तु जब उनको वास्तविकताका पता चला तो "प्रत्येक मण्डलेश्वरोंने अपनी भूलका अनुभव किया श्री स्वामी सर्वानन्दजी मण्डलेश्वरने तो अपने भाषणमें ही स्वीकार किया एवं पं० श्री सीतारामजीझाका (संन्यासी संस्कृत कालेज काशी) ने भी परिस्थिति वश ऐसा हुआ मान लिया।"

प्रत्येक कुम्भ एवं सिंहस्थ स्नानके समय इन दुराग्रही एवं असंयत साधुओंके विशेष अधिकारोंके कारण उपद्रवके अलावा कालनिर्णयमें भी भारी मतभेद रहता है, प्रथम तो ये स्नान ही शास्त्रनिर्दिष्ट काल पर न किये जाकर रूढ़ी वाद एवं परम्पराके नाम पर ही हैं, जिनको विदेशी एवं विधर्मी सत्ताधारियोंने हमारी संस्कृतिके नाशार्थ प्रचलित कराये हैं। किन्तु ज्ञात होता है कि अब हमारी सरकारका ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है!

१०-२-५८ को हिन्दुस्तान अंकमें "कुंभ मेलोंमें साधुओंके विशेष अधिकारके प्रश्नकी जांच" प्रकाशित हुई है अतः मेरा निवेदन है कि इसके साथ ही साथ इन कुंभों के यथासमय होनेका निर्णय भी करा लिया जाय। इस विषय के कई मेरे लेख प्रकाशित हो चुके हैं यथा—"एस्ट्रालोजिकल सर्वेआफ दी कुम्भ" जो एस्ट्रालोजिकल मेगजीन इंगलिश पत्र बंगलौर सन् ५५ के पृष्ठ ५६३ में छपा है।

"कुंभ पर्व समाधान" जो मेरे द्वारा संपादित और उदयपुर राज द्वारा प्रकाशित श्रीमेदपाटीय पंचांग वि० सं० २०१२ में मुद्रित। "सिंहस्थ स्नान मीमांसा" उक्त पंचांग वि० सं० २०१३ में प्रकाशित। "उज्जैन सिंहस्थ स्नान विचार" मेरे द्वारा सम्पादित श्रीमेदपाटीय-प्रताप

पंचांग। वि० सं० २०१४ में मुद्रित है।

"उज्जयिनी पक्षान्तस्नान निर्णय" पूर्वार्ध, श्रीस्वाध्याय त्रैमासिक पत्र सोलन शिमला वि० सं० १३ हैमन्तांक।

"उज्जयिनी पक्षान्तस्नान निर्णय" उत्तरार्ध, श्रीस्वाध्याय पत्र सोलन शिमलाके वि० सं० १४ वसन्तांकमें।

"अनी अखाड़े कबसे?" श्रीस्वाध्याय पत्र सोलन शिमलाके वि० सं० १४ ग्रीष्मांकमें मुद्रित हुए हैं।

हे साधुओं! अवसर प्राप्त आपसे भी एक प्रार्थना है कि—

पेटीचीवर पट्टवस्त्र पटल श्वेतातपत्रच्छटा
शाटी हारक घोटकस्फुट घटाटोपाय तुभ्यं नमः
येनाऽनक्षर कुक्षयोऽपि जगतः कुर्वन्ति सर्वज्ञता, भ्रान्ति
येन विना तु हास्यपदवीं सन्तोऽपि कष्टंगताः ॥१॥

अब इस आडम्बरका समय नहीं रहा निकल चुका, अब तो—

यदि न समुद्धरन्ति यतयो हृदि कामजटाः
दुरवगमोऽसतां हृदिगतेऽस्मृत कण्ठमणिः॥
असुतृप योगिनां उभयतोऽप्यसुखं भगवन्!
अनयगतान्तकात् अनधिरूढ पदात् भवतः॥२॥

किन्तु इस कुंभस्नान विषयमें केवल साधु सन्यासियोंको ही दोष देनेका समय भी अब नहीं है। ये लोग भी अब तन्द्रा त्यागने लगे हैं—अखिल भारतीय साधु मण्डल अध्यक्ष श्रीसन्त तुकड़ोजी महाराज दिल्ली, एवं भारतीय साधु संघ अहमदाबाद, एवं सर्वधर्मसम्मेलन दिल्ली, एवं मेमोरेण्डम ओफ एसोशिएशन दशनाम जूना अखाड़ा, आदि द्वारा अपने अपने समाजमें सदाचार बढ़ानेका उपक्रम साधु समाज करनेके लिये कृतसंकल्प हैं। (देखो हिन्दुस्तान १३-२-५८)

ऐसे भी ज्योतिषाचार्योंका मेरे साथ साक्षात्कार हुआ है। जिनको यह ही पता नहीं कि १८ अयनांशके भी पंचांग बन रहे हैं (ता० २६-५-५२ को श्री बिहारीलालजी शास्त्री संस्कृत कालेज उदयपुरके समक्ष) इसी प्रकार सावन वर्षके ३६० दिन भी होते हैं (ता० २०-५-५७ को श्री तारामणि शास्त्री संस्कृत कालेज जयपुरके समक्ष) तब कुंभस्नान सिंहस्थस्नानकी विभिन्नता विश्लेषण कितना दूर हैं। ऐसी स्थितिमें तो यह कहना ही पड़ेगा कि हमारी स्थिति— "वाणिजइवाज! सन्ति अकृतकर्णधरा जलाधौ" इधर शासक वर्ग भी अब नूतन शक संवत् एवं नवीन दक्षिणोत्तर मध्यरेखा निर्माण कर चुके हैं। अतएव दुःखके साथ हमको भी यह स्वीकार कर ही लेना पड़ता है कि आज हमारी स्थिति इतनी गिर चुकी है कि हम पर यथेष्ठ आक्षेप होने पर भी उसका परिहार करनेका प्रयत्न नहीं, अब तो हमारा षट् कर्म यह रह गया है। कि—

असीजीवी, मसीजीवी, देवलो, ग्रामयाचकः।
धावकाः पाचकाः चैव षडेते ब्राह्मणब्रुवाः॥१॥

अथवा कुछ जोर मारकर बने भी तो—

क्षोणीसुराः पुरुषसूक्त कृतश्रमाश्च,
केचित्तु रुद्रजपपाठन गर्ववन्तः।
ये प्रेतसूक्त चतुराः चतुराननोऽपि,
तेषां पुरः किमपिनार्हति गर्वितानाम्॥२॥

अपि च। प्रकाशरदनाः केचित् उद्घाटित शिरोरुहाः।
शूद्रालये पठन्त्युच्चैः बाहुक्षेपपरा द्विजाः॥३॥

अथवा—

श्रीरामानुजसम्प्रदाय निरताः रंगेशभक्ताः द्विजाः,
श्रीयुतवल्लभमार्गगाः तदपरे श्रीकृष्णचन्द्रप्रियाः।
नैम्बार्क मतमाश्रिताः कति कति श्रीराधिकावल्लभाः,
क्षेत्रेऽस्मिन्भरते सहस्रपथगाः गायन्ति कीर्तिंपराम्॥४॥

अतएव—

किं तीर्थं किं व्रतं वा किमिवकदसखे! दानमात्राऽतिथेर्वा
पूजा कः श्राद्धमार्गो मखविधिरपि कः कोऽस्तिविप्रः
स्वपाकः? कः तातः? का च माता? विलसति बिभुना
निर्मिताऽसावविद्या सर्वेमिथ्यैवधर्माः कतिपय
कविभिः निर्मिताः कर्मविद्भिः

एवम्—

दीक्षाशिक्षान्विताः शूद्राः मुद्रामुद्रितमूर्तयः।
ब्राह्मणान् अवजानन्ति किमतः पर मुच्यते॥६॥

—

संक्रांति तथा चन्द्र दर्शनके फलादेश में—

सूक्ष्म नक्षत्रका महत्त्व

[श्री पण्डया मोतीलालजी नागर, अर्धकाण्ड वाचस्पति]
१४ बी/७ ओरीजनल रोड, देवनगर नई दिल्ली।

[व्यापार आजके अर्थ जगत्का मूल सूत्र है, इसमें सफलता पानेके लिये बड़ी सूझबूझ, गहरा अनुभव और व्यापक ज्ञानकी आवश्यकता है। पण्ड्या श्री मोतीलालजी नागर अर्धकाण्डके सुख्यात वयोवृद्ध विद्वान् हैं। उन्होंने सूक्ष्म नक्षत्र गणनाके प्रकारको एतद्विषयक परमोपयोगी प्रतिपादित किया है। यह प्रकार प्राचीन ग्रन्थोंमें वर्णित अवश्य है, पर थोड़े ही लोग इसे काममें लेते होंगे। पाठकोंकी सुविधाके लिए पण्ड्याजीने प्रचलित पंचांगोंसे स्थूल नक्षत्र मानको आसन्न सूक्ष्म नक्षत्र मान करनेकी विधि भी वर्णितकी है, पर विषयगत उदाहरणके अभावमें सामान्य पाठकको तो यह क्लिष्ट ही लगेगी। हम यह आशा करते हैं आगामी अंकोंमें इस गणणाके आधार पर वस्तुओंकी तेजी मन्दीका उदाहरण और प्रयोगके रूपमें कुछ मासोंका भविष्य भी श्री पण्ड्याजी निरूपण करेंगे जिससे इस प्रणालीकी ओर अधिकाधिक लोग आकृष्ट हो सकें। —सम्पादक]

भारतवर्षके सभी प्रान्तोंमें प्रतिवर्ष विभिन्न भाषा और लिपियोंमें अनेकों पंचाङ्ग प्रकाशित होते हैं, जिनमें संक्रांति तथा शुल्कपक्षकी द्वितीयाके चन्द्रदर्शनके समय लिखी हुई नक्षत्र सम्बन्धी मुहूर्तोंकी भ्रम-पूर्ण गणना और उसके फल के आधार पर किये गये व्यापारमें बहुधा विशेष धन हानि हो जानेकी खबरें आये दिन कानोंमें टकराया करती हैं। अतएव हमारा ज्योतिषीवर्ग भी इस सम्बन्धमें अधिक चिन्तामग्न हैं। घाटा उठाये हुए व्यापारियोंके स्वरमें स्वर मिलाकर कोई कह देता है कि "शास्त्रोंमें कहीं भी इस 'सट्टा' या 'वायदा-व्यापार' का लेख नहीं है।" तो कोई कह बैठता है कि "भाई! यह सटोरिया दसवां ग्रह है। इसके सामने नौ ग्रह हार मान बैठे हैं। सट्टे के रोजगारमें ज्योतिष विद्या काम नहीं देती—झूठी साबित होती है।" किन्तु इन समाधानोंसे फलितशास्त्रका निर्माण करने वाले महर्षियों की त्रिकालसत्ताको ठेस पहुँचती है। ऐसा कहना भारी भूल ही नहीं; प्रत्युत उन तपोधन महर्षियोंके प्रति अक्षम्य कृतघ्नता समझी जायगी। उन्होंने तो दो प्रकारके नक्षत्रों का उल्लेख अपने ग्रन्थोंमें विषय-विभाजनके साथ कर दिया है। एक तो सामान्य व्यवहारके उपयोगी—सुगमतासे व्यवहारमें लाने योग्य—मध्यममानके स्थूल नक्षत्र और दूसरे विवाह, यात्रा, तेजी-मंदी आदि जैसे जिम्मेदारीके काम में आने वाले सूक्ष्म नक्षत्र। इन्हीं सूक्ष्म नक्षत्रोंको कोई आचार्य, जघन्य, बृहत् और सम कहता है, कोई छोटे बड़े तथा समान बतलाता है, तो कोई अर्धभोगी (आधे) अध्यर्धभोगी (ड्यौढे) एवं समभोगी (सम) कहता है। कुछ भी कहा जाय, बात जड़में एक ही है।

देखिये, ग्रहगणितके त्रिप्रश्नाधिकारमें लिखा है कि—
इदानीं सूक्ष्मनक्षत्रानयनमाह—

"स्थूलं कृतं भानयनं यदेतत्
ज्योतिर्विदां संव्यहारहेतोः।
सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं
विवाहयात्रादिफल प्रसिद्ध्यै॥
अध्यर्धभोगानि ११८५।५२।३० षडत्र तज्ज्ञाः
प्रोचुर्विशाखादितिभध्रुवाणि।
षडर्धभोगानि च ३९५।१७।३० भोगिरुद्र—
वातान्तकेन्द्राधिप वारुणानि॥
शेषाण्यतः पंचदशैकभोगा-

न्युक्तो भभोगः शशिमध्यभुक्तिः ७९०।३५ ।
सर्वर्क्ष भोगोनितचक्रलिप्ता
वैश्वाग्रतः स्यादभिजिद् भभोगः ॥
कलीकृतादिष्टखगाद्विशोध्य
दास्रादिभोगान् गतभानि विद्यात् ।
विशुद्धसंख्यानि गतं तु शेष-
मशुद्धभोगात्पतितं तदेष्यम् ॥
गतागते षष्ठिगुणे विभक्ते
ग्रहस्य भुक्त्या घटिका गतैष्याः ॥"

अत्र व्याख्या । इह यन्नक्षत्रानयनं कृतं तत् स्थूलं लोकव्यवहारार्थमात्रं कृतम् । अथ पुलिशवसिष्ठ-गर्गादिभिर्यद् विवाह यात्रादौ सम्यक् फलसिद्ध्यर्थं कथितं तत् सूक्ष्ममिदानीं वक्ष्ये । तत्र षडध्यर्ध भोगानि-विशाखापुनर्वसु रोहिण्युत्तरात्रयम् । अथ षडर्ध भोगानि—आश्लेषाऽऽर्द्रास्वाती भरणी-ज्येष्ठा शतभिषक् । एभ्यः शेषाणि पंचदशैक भोगानि । भोग-प्रमाणं तु शशिमध्यभुक्तिः ७९०।३५ । अध्यर्धभोगः ११८५।५२।३० । अर्धभोगः ३९५।१७।३० । सर्वर्क्ष-भोगैसूनितानां चक्रकलानां २१६०० यच्छेषं सोऽभिजिद्भोगः २५४।१८ । अथ तत्साधनम् । ग्रहं कलीकृत्य अश्विन्यादीनां भोगान् विशोधयेत् । यावन्तः शुद्धास्तावन्ति गतभानि जानीयात् । शेषाः कला गतसंज्ञाः । ता अशुद्धभोगात् पतिता एष्यसंज्ञाः । ता गतैष्याः कलाः षष्ठि ६० गुणा ग्रह गत्या भक्ता गतैष्या घटिका भवन्ति ।"

नारदसंहिताके छठे नक्षत्र फलाध्यायके श्लोक ४८,४९,५० में महर्षि नारदने छोटे, बड़े और समान नक्षत्र और उनका ३०, ९० और ६० घटीमान बतलानेके साथ-साथ शुक्ल पक्षकी द्वितीयाके दिन सूक्ष्म इन नक्षत्रोंमें होने वाले चन्द्रदर्शनके द्वारा तेजी, मंदी और समान फल भी स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है—

"जघन्यास्तोयभार्द्रा हि पावनान्तकतारकाः ॥४८॥
ध्रुवादिति द्विदैवत्या बृहत्ताराः, पराः समाः ।
तासां प्रमाणं घाटिकास्त्रिशन्नवतिषष्ठयः ॥४९॥
क्रमादभ्युदिते चन्द्रेऽनर्घ-अर्घ-समानिच ॥५०॥

यही बात ज्योतिर्निबन्ध नामक ग्रन्थके चन्द्रचार प्रकरणमें महर्षि वसिष्टने विशेष स्पष्ट शब्दोंमें कही हैकि—

"जघन्यधिष्ण्यानि जलेश सार्प
रौद्रेन्द्र याम्यानिल दैवतानि ।
अध्यर्धधिष्ण्यान्यदिति द्विदैव
स्थिराणि, शेषाणि समाह्वयानि ॥
अध्यर्धधिष्ण्येऽभ्युदितः शशाङ्कः
करोति धान्यं महदर्घ नाशम् ।
जघन्यभेऽत्यर्घमसंशयेन
समार्घमन्येषु च मासि मासि ॥
ज्ञात्वैव मेवं मणिजीवधातु
मूलोर्णकर्पूर रसादिकानाम् ।
अर्घं वदेज्ज्यौतिषिकः प्रजानां
समस्त वस्तूत्तम सङ्ग्रहार्थे ॥
एतानि जाघन्य समाधिकर्क्षा-
ण्यत्रार्घकाण्डे विनियोजितानि ॥"

पूर्वोक्त ग्रहगणित एवं नारद-वसिष्ठ महर्षियोंके वचनोंसे यह निर्विवाद सिद्ध है कि, प्रत्येक मासमें होने वाली संक्रांति तथा चन्द्रदर्शनके समय इन्हीं ३०, ९० और ६० घटीमान के सूक्ष्म नक्षत्रोंके द्वारा नक्षत्र सम्बन्धी मुहूर्तगणना और तदनुसार व्यापारी पदार्थोंकी तेजी-मंदीका निर्णय करना चाहिये ।

किन्तु आज आपके सामने एक भी ऐसा पंचाङ्ग नहीं है, जिसमें नारद-वसिष्ठ जैसे महर्षियोंके बताये हुए क्रमके अनुसार ३०, ९० एवं ६० घटी मान वाले सूक्ष्म नक्षत्रोंकी गणना संक्रांति अथवा चन्द्रदर्शनके समय की जाती हो । प्रायः सभी पंचांग स्थूलरूपसे ६० घटीके मध्यममानको लेकर ही बनाये जा रहे हैं, जिनसे व्यापारी पदार्थोंकी एक मासकी तेजी मंदी सही नहीं मिलती । पंचांगोंमें लिखी मिलती है मंदी, तो उस मासमें बाजार बहुत ऊंचा हो जाता है । एवं तेजीकी जगह मंदी हो जाती है । परिणाम यह होता है कि, व्यापारी वर्गकी इस परम उप-

कारक विद्या पर अश्रद्धा हो जाती है। ऐसी दशामें—सूक्ष्म नक्षत्र गणना वाले पंचांगके अभावमें—प्रचलित पंचांगस्थ स्थूल नक्षत्रोंको ही सूक्ष्म नक्षत्रोंके तुल्य बना लिया जाय तो अधिकांशमें फलका मिलान सही-सही हो सकता है। एतदर्थ पाठकोंकी सुविधाके लिये, यहां पर स्थूल नक्षत्रोंसे आसन्न सूक्ष्म नक्षत्रोंके बनानेकी सरल युक्ति दी जा रही है, जो इस प्रकार है:—

	रा.अं.क.वि.		रा. अं. क.वि.	
अश्विनी	०।०।०।०	से	०।१३।२०।०	तक
भरणी	०।१३।२०।०	से	०।२०।०।०	तक
कृत्तिका	०।२०।०।०	से	१।३।२०।०	तक
रोहिणी	१।३।२०।०	से	१।२३।२०।०	तक
मृगशिर	१।२३।२०।०	से	२।६।४०।०	तक
आर्द्रा	२।६।४०।०	से	२।१३।२०।०	तक
पुनर्वसु	२।१३।२०।०	से	३।३।२०।०	तक
पुष्य	३।३।२०।०	से	३।१६।४०।०	तक
आश्लेषा	३।१६।४०।०	से	३।२३।२०।०	तक
मघा	३।२३।२०।०	से	४।६।४०।०	तक
पू० फा०	४।६।४०।०	से	४।२०।०।०	तक
उ० फा०	४।२०।०।०	से	५।१०।०।०	तक
हस्त	५।१०।०।०	से	५।२३।२०।०	तक
चित्रा	५।२३।२०।०	से	६।६।४०।०	तक
स्वाति	६।६।४०।०	से	६।१३।२०।०	तक
विशाखा	६।१३।२०।०	से	७।३।२०।०	तक
अनुराधा	७।३।२०।०	से	७।१६।४०।०	तक
ज्येष्ठा	७।१६।४०।०	से	७।२३।२०।०	तक
मूल	७।२३।२०।०	से	८।६।४०।०	तक
पू० षा०	८।६।४०।०	से	८।२०।०।०	तक
उ० षा०	८।२०।०।०	से	९।५।०।०	तक
अभिजित्	९।५।०।०	से	९।१०।५३।२०	तक
श्रवण	९।१०।५३।२०	से	९।२३।२०।०	तक
धनिष्ठा	९।२३।२०।०	से	१०।६।४०।०	तक
शतभिषा	१०।६।४०।०	से	१०।१३।२०।०	तक
पू० भा०	१०।१३।२०।०	से	१०।२६।४०।०	तक
उ० भा०	१०।२६।४०।०	से	११।१६।४०।०	तक
रेवती	१०।१६।४०।०	से	०।०।०।०	तक

इस आसन्न सूक्ष्म नक्षत्रमानके आधार पर यदि संक्रांति तथा चन्द्रदर्शनके अवसर पर १५,३० या ४५मुहूर्तो की गणना की जायगी, तो फल बहुत ठीक मिलान देगा। इन दो अवसरोंके अतिरिक्त शेष दिनोंमें प्रचलित पंचाङ्गीय स्थूल नक्षत्रोंसे ही ग्रहोंके राशि-नक्षत्र भ्रमण एवं वेधादि फलकी सत्यता प्रमाणित हो सकती है।

दामोदरदैवज्ञदीपितः

होराप्रदीपः

(प्रभोद्भासितः)

तृतीयोऽध्यायः

[व्याख्याकार—आचार्य श्री रमानन्द सारस्वत शास्त्री]

"मितास्मिता हितानल्पसारा मञ्जु विभाषिणी ।
जयताद् भावगम्भीरा श्रीरसेन्द्रस्य भारती ॥१॥
दामोदर वररचिते होराशास्त्रे 'विभा' नाम्नी ।
दीपस्य तत्प्रभेयं टीका भूयाद्विभावृद्धयै ॥२॥"
यश्चेतसि स्फुरति वल्गति वाचि हस्तौ
संप्रेरयन्निह विलेखयति स्वयं हि ॥
नूनं भवेच्छिवगुरोः करुणैकधाम्नः
पादारविन्द मकरन्दमयः प्रसादः ॥३॥

'होरा प्रदीप' के पिछले दोनों अध्यायोंमें ज्योतिष-शास्त्रकी सामान्य परिभाषाएँ दी गई हैं, अब तीसरे अध्यायमें और परिभाषाएँ बताते हैं—

'रविचन्द्रभौमपूज्याः
मित्राण्यन्योन्यमपरे च ॥
तत्काले त्रिदशायद्वादश
तुर्य द्विभावस्थाः ॥१॥

[जिस प्रकार सूर्यके चन्द्र, भौम और बृहस्पति मित्र कहे गये हैं, वे उसी प्रकार आपसमें (अन्योन्य) परस्पर मित्र होते हैं यह सामान्य बात है । अर्थात् जैसे सूर्यका मित्र चन्द्र है, तो चन्द्रका मित्र भी सूर्य होगा, जो दोनोंके मित्र हैं, वे भी सामान्यतः मित्र ही होंगे । (यह बात सामान्य मैत्रीकी है जिसे 'निसर्ग मैत्री' नामसे कहा है) तात्कालिक रूपमें प्रत्येक ग्रहसे दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें स्थानोंमें स्थित ग्रह मित्र होते हैं। इन्हें 'तत्काल मित्र' कहा जाता है । निसर्ग और तत्काल मित्र, अतिमित्र, उभयशत्रु 'अतिशत्रु' आदि पांच प्रकारके मैत्री सम्बन्ध होते हैं जो हम पहले बता चुके हैं यहां पिष्ट पेषण व्यर्थ है ॥१॥

अब ग्रहोंकी दृष्टि बतलाते हैं—

दिग्वेदे भवबन्हौ कोणे क्वस्ते च पादवृद्ध्यैव ॥
गुप्तारित्वं गुप्ताप्रीतिः स्नेहश्च वैरिताभावः ॥२॥

दसवें चौथे, तीसरे ग्यारहवें, नवें पांचवें प्रथम (लग्न) अवस्थित स्थानसे सातवें स्थानोंमें चरण वृद्धिके अनुसार ग्रहोंकी दृष्टि होती है । अर्थात् १०।४ में एक पाद, ११।३ में द्विपाद, ९।५ में त्रिपाद, और सप्तममें पूर्ण दृष्टि होती है । फल विचारमें एक पाद दृष्टि गुप्तारित्व संज्ञक (थोड़ा फल देने वाली) द्विपाद दृष्टि गुप्त प्रीति संज्ञक (अच्छा फल देने वाली) त्रिपाद दृष्टि स्नेह संज्ञक (पूर्ण शुभफल देने वाली) तथा पूर्ण दृष्टि (अपनेसे सप्तम स्थान पर) वैरी संज्ञक अत्यन्त अशुभ फल देने वाली होती है । तात्पर्य यह है कि ९।५ दृष्टि अत्यन्त शुभ, ११।३ दृष्टि सामान्य शुभ और १०।४ की सामान्य अशुभ और १।७ दृष्टि अत्यन्त अशुभ होती हैं ।

विशेष—यहां पर जो दृष्टि विचार किया गया है यही दृष्टि प्रकारान्तरसे वर्षमें विचारी जाती है ।

जातकमें दृष्टि विचार इस प्रकार है—

'पादेक्षणं भवति सोदर मानराश्योरर्धं',

त्रिकोण युगलेऽखिलखेचराणाम् ।
पादोन दृष्टि निचयश्चतुरस्त्रयुग्मे, सम्पूर्णदृग्
बलमनङ्गगृहे वदन्ति ॥ (१।३० जातक चंद्रिका)

३।१० में एक पाद दृष्टि, ५।९ में अर्ध या द्विपाद दृष्टि, ४।८ में त्रिपाद दृष्टि और ७ वें में पूर्ण दृष्टि रहती है ॥२॥

प्रोक्तो राशिरथोच्चं नीचं
तत्सप्तमं विन्द्यात् ।
मेषे गुशुज्ञ मंशा हद्देशाश्चा
च दामामाः ॥३॥
वृषभे शुबुगुशमानां दचदमनगा,
बुशुगुमशातातमाथता युग्मे ।
कर्के मशुबुगुशानां सातत,
सावो सिंहे स्युः ॥४॥
गुशुशबुमानां तामाथ ताता
चेत् कन्यकायां स्युः ।
बुशुगुमशानां सोना भसठा
तौलि निश बुगुशमानाम् ॥५॥
तजसा सोफाश्चालौ मंशु
बुगुशानां सभादमाताश्च ।
स्त्राकं मं भंमंभं धनुषि
स्यात् गुशुबुमंशानाम् ॥६॥
मकरे बुगुशुशमानां थथदमभा
घटे बु शुगुमंशानाम् ।
थचथम भास्युमीने शुगुबुमंशानां
रकं भगाधीराः ॥७॥

जो राशि जिस ग्रहकी पहले उच्च कही है, जैसे सूर्यकी मेष, चन्द्रकी वृषादि; उस राशिसे सप्तम राशि उस ग्रहकी नीच राशि होती है, जैसे सूर्यकी तुला, चन्द्रकी वृश्चिक आदि । प्रत्येक राशिमें इसी प्रकार हद्दा विचार होता है। किस राशिमें कितने अंश तक किस ग्रहका हद्दा रहता है, यह उपर्युक्त श्लोकोंमें बताया गया है । यहां अक्षरोंसे 'कटपय वर्णभवैरंकाः' सिद्धान्तके अनुसार अक्षरोंसे अंकोंका ग्रहण किया गया है । स्पष्टार्थ चक्रमें देखिये—

॥ हद्दा चक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
बृ.	शु.	बु.	मं.	बृ.	बु.	श.	मं.	बृ.	बु.	बु.	शु.	ग्रह
६	८	६	७	६	७	६	७	१२	७	७	१२	अंश
शु.	बु.	शु.	शु.	शु.	शु.	बु.	शु.	शु.	बृ.	शु.	बृ.	ग्रह
६	६	६	६	५	१०	८	४	५	७	६	४	अंश
बु.	बृ.	बृ.	बु.	श.	बृ.	बृ.	बु.	बु.	शु.	बृ.	बु.	ग्रह
८	८	५	६	७	४	७	८	४	८	७	३	अंश
मं.	श.	मं.	बृ.	बु.	मं.	शु.	बृ.	मं.	श.	मं.	मं.	ग्रह
५	५	७	७	६	७	७	५	५	४	५	९	अंश
श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	मं.	श.	श.	मं.	श.	श.	ग्रह
५	३	६	४	६	२	२	६	६	४	५	२	अंश

अब द्रेष्काण बताते हैं—

मेषादिद्रेष्काणाः कुजरवि
भृगुतो नवांशकाः प्राग्वत् ॥
इत्यधिकाराः प्रोक्ताः बलमथ
नीचं तु शोधयेत् खेटात् ॥८॥
अधिको रसभाच्चक्राच्छोध्यः
कार्यास्तु तस्यांशाः ॥
नवविहृता बलमुक्तं चतुर्भिर-
धमाधमाद्यूह्यम् ॥९॥

पूर्वोक्त विधिसे ही द्रेष्काण और नवांश देखने चाहिये। उच्चबल साधनका प्रकार बताते हैं कि ग्रहमेंसे उसका नीच घटावे, घटाया हुआ ग्रह ६ राशिसे अधिक हो तो उसे १२ में से घटावें, शेषके अंश बनाकर ९ से भाग दे तो शेष उच्च बल होता है ॥९॥ (यह बल साधनादि प्रकार आगे बड़े उपयोगी फल विचारमें रहते हैं इसीलिये ग्रन्थकारने इनकी पुनरुक्ति की है।)

॥ इति श्रीहोराप्रदीपे तृतीयोऽध्यायः ॥

श्रीरसेन्द्र कृतिषु होराप्रदीप राष्ट्रभाषाऽनुवादे तृतीयोऽध्यायः सम्पूर्णः ॥

[इस ग्रन्थकी केवल एक ही हस्तलिखित प्रति हमारे प्राचीन संग्रहमें प्राप्त हुई है, इस ग्रन्थमें लगभग सौ अध्याय हैं। फलितके बड़े ही चमत्कारिक योग इसमें दिये गये हैं, जो क्रमशः सामने आवेंगे। आरम्भसे लेकर अन्त पर्यन्त जो भी इस ग्रन्थका नियमित अध्ययन करेंगे वे ज्योतिष शास्त्रके अच्छे जानकार बनेंगे, इसमें सन्देह नहीं। इस ग्रन्थकी कोई अन्य प्रति या ग्रन्थकर्ता विषयक सूचनाएँ किसी सज्जनको प्राप्त हो तो उन्हें अनुवादक आचार्य रमानन्द सारस्वत शास्त्री, श्रीसारस्वतालोक, ११०, गांधीनगर, जयपुरके पते पर लिखनेका कष्ट करें।]

रत्न-परिचय

[पद्मभूषण श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास ज्यौतिषाचार्य]

[गताङ्कसे आगे]

आचार्य वराहमिहिरने भी ऐसी ही पुराण-परम्पराका आश्रय ले आजसे १५०० वर्ष पूर्व अपनी बृहत्संहितामें रत्नाध्यायका वर्णन करते हुए रत्नोत्पत्तिके कारणोंका वर्णन किया है। परन्तु उन्होंने साथ ही 'केचिद् भुवः स्वभावाद्वैचित्र्यं प्राहुरूपलानाम्' (पृथ्वीके स्वभाव हीसे कुछ लोगोंके मतसे रत्नोंकी विचित्रता हुई है।) कहकर अपने ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं ली है।

रत्नानि बलाद्दैत्याद्दधिचितोऽन्ये वदन्ति जातानि।
केचिद् भुवः स्वभावाद्वैचित्र्यं प्राहुरूपलानाम् ॥

बलि दैत्य और दधिचिकी हड्डियोंसे रत्नोंके उत्पन्न होनेकी बात बतलाकर पृथ्वीकी स्वाभाविक रत्न-प्रसव-सामर्थ्यकी चर्चा भी कर दी है।

उन्होंने कहा है कि जब बलि दैत्यकी अस्थियां इधर-उधर उड़कर गिरीं तब वे जहां गिरीं, उस प्रदेशमें इन्द्र-धनुषको चकाचौंध कर देने वाले विचित्र हीरे उत्पन्न हो गये।

उसकी दंत-पंक्तियां नक्षत्र-मालिकाकी तरह आकाश तक फैल गयी थीं, जो समुद्र आदि स्थानोंमें जा पड़ीं, वे 'मोती' रूपमें परिवर्तित हो गयीं।

सूर्यके खर-किरणसे उसका जमीन पर पड़ा हुआ रक्त सूखकर रजों द्वारा गगनगामी हो रहा था पर रावणने उसे राहमें ही रोककर सिंहल द्वीपकी उस नदीमें डाल दिया जहां सुपारीके पेड़ लगे हैं! तभीसे उस नदीका नाम 'रावण गंगा' भी हो गया और उसमें पद्मराग-माणिक्य

उत्पन्न होने लगे।

नागराज वासुकी उस दैत्यके पित्तोंको लेकर आकाश-पथसे जा रहे थे कि मार्गमें गरुड़ने हमला बोल दिया, विवश हो उन्हें तुरुष्ककी कलियोंकी सुरभिसे व्याप्त माणिक्य गिरिकी उपत्यकामें उसे डाल देना पड़ा, वहां पन्नेकी खदानें हो गयीं! सिंहल-रमणियोंके करपल्लवके अग्रभागकी तरह विस्तार पाने वाली सागरकी तटवर्ती भूमि पर असुरके नील-नयन गिर गये, उनसे इंद्रनील मणिकी उत्पत्ति हुई। और मरनेके समय असुरकी घनघोर गर्जनासे कई रंगोंके वैदूर्य (लहसुनिया) उत्पन्न हो गये।

चर्मके हिमालय पर गिर जानेसे पुखराजकी उत्पत्ति हुई, और नाखूनोंके कमलवनमें पड़ जानेसे कर्केतन (वैक्रांत) का जन्म हुआ। राक्षसके वीर्यसे, जो हिम पर्वतके उत्तर-भागमें गिरा था, उससे गोमेद उत्पन्न हुआ। और उत्तरावर्त्तकी जिन नदियों और प्रदेशोंमें अन्य अंगके अंश गिरते गये, वहां गुंजा, सुरमा, मधु, कमल-नाल वर्णके गंधर्व, अग्नि तथा केलेकी तरह वर्ण वाले, दीप्तिमय, पुलक प्रकाशमान कई रत्न बन गये। अग्निने असुरके रूपको नर्मदामें ले जाकर डाल दिया था, इसलिये उसमें रुधिराक्ष (अकीक) रत्न बनने लगे तथा आंतरियोंसे प्रवाल विद्रुम (मूंगे) की उत्पत्ति हुई। उसी असुरकी चर्वी जहां-जहां कावेरी, विंध्य, यवन, चीन, नेपाल आदि देशोंमें पहुँची, वहां-वहां स्फटिक आदिकी खदानें हो गयीं।

इस प्रकार पुराणके 'असुर-अंग' को हम अलग भी कर दें तब भी उसके अंग-निर्दोषकी भूमि जलाशय आदि का जो संकेत हमें मिलता है, वह उन रत्नोंकी जन्मभूमिके परिज्ञान-पर्यवेक्षणके लिये पर्याप्त हो सकता है। अंगोंके रूप लक्षण प्रकृति-साम्य पर भी परिशीलन करने वाले प्रवीण पुरुषको कोई तथ्य प्राप्त हो जाय तो विस्मयका कारण नहीं। पौराणिक कथारूपकसे यह मान लेनेकी आवश्यकता नहीं कि वह मानव (असुर) अंगके द्वारा ही पदार्थोत्पादन-सूचना है। किन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे विचार किया जाय तो जिन-जिन रत्नोंकी उत्पत्ति जिन-जिन अङ्गोंसे सूचित की है उन उन रत्नोंको प्रकृति-साधर्म्यके लिये तथा उसके उन-उन अंगोंके उपयोगके औचित्यकी पुष्टिसे भी वस्तुस्थिति पर प्रकाश पड़ता है। पुराण न तो विज्ञानके ग्रंथ हैं, न उपचारके। वे ऐतिहासिक तथ्योंके आध्यात्मिक एवं सामाजिक भावनाओंके कथा-रूपसें सुन्दर हृदयग्राही चित्र हैं, जिनसे सर्वसाधारणको अनुप्रेरणा मिलती है। उनमें समस्त ज्ञान, व्यापक रूपसे विभिन्न स्थलोंमें (अपने विशेष दृष्टिकोणसे ही) निहित है। रत्नोंकी उत्पत्ति, उपयोगिता तथा गुण-दोषोंका विवेचन यद्यपि पुराणोंमें स्वतंत्र रूपसे नहीं है, तो भी उनकी अपनी लाक्षणिक वर्णनशैलीमें वह तथ्य अवश्य उपलब्ध हो सकता है, जो विवेचकके विज्ञान के लिये अपेक्षित है।

शरीर-शास्त्रके प्रवीणोंने आयुर्वेदिक उपचारकी दृष्टिसे रत्नोंकी जिस-जिस अंगके उपचारके लिये योजना की है, वह पुराण-प्रदर्शन उत्पत्तिके सर्वथा अनुकूल है। जिस-जिस अंगसे जिस-जिस रत्नका जन्म सूचित किया है, पुरातन आयुर्वेद शास्त्रने उसी अंगके स्वास्थ्यके लिये उसकी उपयोगिता प्रतिपादित की है। यथा—

रत्न	उत्पत्ति	उपचार-प्रयोग-योजना।
हीरा	हड्डीसे	अस्थिरोग नाशक
मोती	दांतोंसे	दंत-रोग नाशक, केल्शियम 'दंत-मुक्ता' की उपमाकी सार्थकता-प्रदर्शक।
माणिक	रक्तसे	रक्तरोग नाशक, रक्त-वर्धक, ब्लड-प्रेसरके लिए शर्तिया उपचार।
पन्ना	पित्तसे	पित्त प्रकोप नाशक, पित्तोपचार
इंद्रनील	नेत्रोंसे	नेत्रके समस्त रोगोंकी विशिष्ट वस्तु
लहसुनिया	स्वर (नाद)	स्वरभंग, वात आदिका उपचार
पुखराज	चर्मसे	कुष्ट, चर्म रोगोंका शत्रु
वैक्रांत	नाखूनसे	नख रोगका उपचार
गोमेद	वीर्यसे	प्रमेह, मूत्ररोग, वीर्य-विकारके लिये
लाजावर्त	तेजसे	पांडुमें उपयोगी, नेत्र तेजप्रद, शरीर के छिद्रादि रोधक
अकीक	रूपसे	कांतिप्रद, अनुलेप, प्रकाशप्रद
स्फटिक	मेद (चर्बी) से,	कार्श्य, क्षय, प्लीहा आदिमें प्रयोगोपयोगी

इस प्रकार पुराण वर्णित रत्न-जन्मकी कथाकी आयुर्वेद-शास्त्रसे शुद्ध संगति हो जाती है। वह केवल निरर्थक उपेक्षणीय कथा-मात्र नहीं है। विज्ञानोपयोगकी दृष्टिसे जहां विज्ञान ग्रंथोंमें इन विषयोंकी चर्चा है, वहां पुराणोंमें उनकी कथा मनोरंजक शैलीमें समाविष्ट है, पृथक्करणका कार्य विवेचकोंका है। जन साधारणमें तो वे तथ्य रोचक कथा द्वारा ही सजीव रखे जासकते हैं, जिस प्रकार पुराणोक्त रत्न जन्मका विभिन्न अंगोंसे सम्बन्ध है, उसी प्रकार आयुर्वेदसे उन अंगोंके उपचारका समर्थन है। उसी प्रकार अलंकारका उपयोग भी शरीरके उन अंगोंके स्वास्थ्य संवर्द्धनके लिये रत्न-विशेषकी योजना द्वारा प्रदर्शित है। आज जिस तरह अज्ञानवश केवल सौंदर्य प्रसाधनके रूपमें उदाहरणार्थ हीरेकी माणिकके साथ सहज अविचारपूर्ण योजना कर दी जाती है, जो सम्पन्न परिवारोंमें 'क्षय' जैसे राजरोगकी निरन्तर पोषक बन जाती है। यदि यही अलंकारकी प्रयोग योजना, गुण दोष निराकरणके साथ शास्त्रीय पद्धति से की जावे तो स्वास्थ्य परिपोषक हो सकती है। रत्नोंके पारस्परिक गुण-धर्मोंका और शरीराङ्ग प्रयोगोंका जो विधान, ज्योतिष शास्त्र और अलंकार योजनाके द्वारा स्वीकृत है, वह भी पुराणोंकी रत्नोत्पत्तिसे अनुकूलता रखता है। इस तरह विभिन्न विज्ञानसे उन रूपकोंकी सुन्दर सुसंगति है। एक दूसरेके विचारोंका उत्तम सामंजस्य है। पारस्परिक सापेक्ष्यभावनाकी दृढ़ आधार भित्ति पर निर्मित इन सिद्धांतोंका अस्तित्व इसी कारण सर्वकालीन बना हुआ है। हजारों घात प्रतिघातोंके पश्चात् भी अबाधित सिद्धांत चिरजीवी बने हुए हैं।

पुराण और आयुर्विज्ञानकी तरह रत्नोंके गुणधर्मोंका सम्बन्ध और परस्पर विरोधी तत्वोंका विश्लेषण ज्योतिर्विद्यासे और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है। क्योंकि रत्नोंके निर्माणमें जल वायु-प्रकृतिके भेदका तथा गगन गामियोंके न्यूनाधिक किरण प्रभावका जो देश कालकी प्रकृतिके अनुरूप परिणाम उनके रूपरंग प्रकाश मूल्य गुण धर्म निर्माण पर पड़ता है, वही रत्नोंके विविधरूप प्रभावके सृजनका कारण है। इसलिये नवग्रहोंके साथ नवरत्नोंका निकटतम सम्बन्ध है। ग्रहोंके रत्नोंका वर्णन और नवरत्न मुद्रिका निर्माणका प्रकार आगामी अंकमें दिया जावेगा। (क्रमशः)

❀ बुध ग्रहका प्रभाव ❀

[लेखक—श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिषाचार्य, लुधियाना]

संसार पर प्रभाव तो सभी ग्रहोंका होता है और भिन्न-भिन्न कामोंके लिये भिन्न-भिन्न ग्रह समय-समय अनुसार अपना प्रभाव करते हैं। आज मैं आपको बुध ग्रहसे परिचित कराना चाहता हूँ। संसारकी अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं, बुद्धि, व्यापार तथा शीघ्रगति योगोंमें अधिक प्रभाव इसी ग्रहका होता है। यह अन्य सब ग्रहोंकी अपेक्षा शीघ्र और विशेष प्रभाव करता है। वस्तुओंके स्टाक पर भी इसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। वायदा बाजारमें तो इसे विशेषता प्रदान की गई है। अन्य ग्रह मंगल, शनि, बृहस्पति, हर्षल आदि भी अपना प्रभाव करते हैं, परन्तु यह सबसे शीघ्र गति ग्रह है और मुख्य रूपसे लम्बी लाईन इसी पर आधारित रहती है।

यह अन्य ग्रहोंसे छोटा है, यह सूर्य से १८ अंश और २८ अंशके अन्तरमें ही रहता है, इससे अधिक दूरी पर नहीं जाता। यह या तो प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही पूर्वमें दिखाई देता है या सूर्यास्त पश्चात् ही पश्चिममें बड़ी सावधानी से प्रयत्न करने पर ही दिखाई देता है। सूर्यके साथ या एक राशि आगे या एक राशि पीछे ही रहता है; इससे अधिक नहीं।

इसको सोमपुत्र (चन्द्रमा पुत्र), रोहिणेय, कहते हैं, और यूनान वाले अतारद तथा अंग्रेजीमें मरकरी Mercury कहते हैं, यदि सूर्यको सभी तारा ग्रहोंका राजा कहें तो बुधको राजकुमार कहना ही उचित होगा। यह देखनेमें थोड़े से पीलेपनमें सफेद दिखाई देता है, वैसे ज्योतिष ग्रन्थोंमें इसका रंग हरा कहा गया है, वह भी महन्दी जैसा या (Bottle Green) धुन्दके समयमें इसे देखनेमें बड़ी

विचित्र बात होती है कि इसकी चमक ओस तथा धुन्द होने से कम होने की अपेक्षा अति अधिक होती है और स्पष्ट दिखाई देता है, यह भी चन्द्रमाकी भांति घटता बढ़ता रहता है और जैसे मंगलको भौम (भूमि पुत्र) कहा जाता है इसे प्रायः सभी ग्रन्थ शशिपुत्र कहते हैं।

यह मिथुन तथा कन्या दोनोंका स्वामी है और कन्या राशिमें ही उच्चका भी होता है, मीन राशिमें नीचका होता है। सूर्यके साथ होने पर अपना पूर्ण प्रभाव न करके सूर्यका सहायक बन जाता है। सूर्य तथा शुक्र इसके मित्र हैं, चन्द्रमासे इसकी शत्रुता है, मंगल शनि तथा बृहस्पतिसे सम अर्थात् 'न काहुसे मित्रता न काहूसे वैर।'

बुध ग्रहका प्रभाव वायदा बाजार पर प्रधान क्यों माना गया है, इसका उत्तर तो स्पष्ट है, बुध यातायात, तार, रेल, ट्रान्सपोर्ट, भाषा, विद्या, लेख, वाणी, बुद्धि, व्यापार, उद्योग, आढ़त या कमीशन और लेखा (Accoutns) पर पूर्ण कण्ट्रोल रखता है, इसका निवास स्थान पाठशाला, महाविद्यालय, लाईब्रेरी, प्रयोगशाला, विश्वविद्यालय, परीक्षा-केन्द्र, लेखा कार्यालय, समाचारपत्र, बाजार सराफा, जुआखाना, छापाखाना आदिमें ही माना गया है। इन धंदोंमें बनी योजना पर इसीका अधिकार होता है, इसका भाग्याङ्क ५ है।

जब भी यह ग्रह बृहस्पतिके साथ होता है या युति होती है तो यह अच्छा योग बनाता है, उस समय प्रजामें शान्ति, उन्नति तथा कई प्रकारसे सुखकी वृद्धि होती है। जब यह वक्री होता है तो मार्केटमें तेजीका प्रभाव ही करता है। जब यह अस्त होता है और सूर्यके साथ होता है, आकाश पर दिखाई नहीं देता तो सूर्य द्वारा प्रभावित भाव को अधिक चलाता है जैसे वर्षा आदिका योग न होनेसे अधिक तेजी और ऋतुके अनुकूल होनेसे अधिक मन्दीका योग बनाता है, मार्गी तथा वक्री होनेके समय भी अपना प्रभाव अवश्य करता है, इसमें यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि यह उच्चका है नीचका है, स्वगृही है या मित्र राशिमें है, वर्षमें क्या अधिकार प्राप्त है, आदि आदि।

इसके प्रभावका प्रमाण भी बहुत ही सुगम है। कैसे प्रभाव करता है इसका अनुभव इसी बातसे हो जाता है कि जब महंदीके पत्ते इसके अस्त होनेके समय तोड़े जावें तो उनमें इसका रंग नहीं होता या दूसरे शब्दोंमें मंहदी रंग नहीं देती, जब उदय हो तो पूरा रंग देती है। पूजा आदि के समय मंहदीका रंग बुधका ही रंग माना जाता है। इसके नेष्ट प्रभावसे बचनेके कई प्रभाव हैं जिनमेंसे इसका दान तथा जप आदि प्रायः सभी पंचांगोंमें स्पष्ट रूपसे दिये गये हैं।

जो व्यक्ति नगोंका प्रयोग करते हैं उनके लिये पन्ना या फीरोज़ा, गहरे हरे रंगका नग श्रेष्ट कहा गया है, मिथुन तथा कन्या राशि वालोंके अतिरिक्त वायदा बाजारका काम तथा अन्य प्रकारका व्यापार करने वालोंके लिये अंगूठीमें इसके नगका प्रयोग विशेष लाभदायक माना गया है।

दिव्य दृष्टि वाले महात्माओंकी भविष्यवाणियाँ

[श्री मृत्युञ्जय उपाध्याय एम० ए०]

हमारे देशमें तथा अन्य देशोंमें भी समय-समय कुछ विशिष्ट महापुरुष ऐसे उत्पन्न हुआ करते हैं, जो भविष्यमें होनेवाली घटनाओंको दिव्यदृष्टि द्वारा सैकड़ों हजारों, वर्ष पूर्व जान जाते हैं और लोक कल्याणके उद्देश्यसे उसे प्रकट भी कर देते हैं। इन भविष्यवाणियोंमें जो समय दिया जाता है वह प्रायः गुप्त संकेतोंके रूपमें होता है, जिससे जन-साधारणमें व्यर्थका आतंक न फैले, और केवल गुप्त विद्याओं में अनुराग रखने वाले अथवा उनके खास अनुयायी उनको समझकर समयानुसार मार्ग-दर्शनका कार्य कर सकें। नीचे हम कुछ ऐसी ही भविष्यवाणियोंका संग्रह पाठकोंके विचारार्थ दे रहे हैं।

मालिकाकी भविष्यवाणी

उड़ीसा प्रान्तमें जगन्नाथपुरीके पास कितने ही मठोंमें 'मालिका' नामकी एक प्राचीन पुस्तक मिलती है। यह पाँच सौ वर्षसे अधिक पुरानी है और ताड़के पत्तों पर लिखी गई है। कहा तो यह जाता है कि उड़ीसामें एक लाख मालिकाकी पुस्तकें हैं। पर इस समय जितनी पुस्तकोंकी जानकारी लोगोंको है उनकी संख्या भी सैकड़ों है। ये सब महन्तोंके अधिकारमें हैं। वे इन पुस्तकोंको बड़ी कोशिशसे खास-खास व्यक्तियोंको ही देखने देते हैं।

'मालिका' की रचना बंगालके प्रसिद्ध भगवद्-भक्त श्रीचैतन्य महाप्रभु के समयमें हुई थी। उनके एक मित्र श्री अच्युतानन्द दास थे जिनको उड़ीसामें बहुत बड़ा योगी और महात्मा माना जाता है। लोगोंका यह भी विश्वास है कि अच्युतानन्ददास ने अपनी सब पुस्तकें योग शक्तिसे लिखी हैं। इन्हींमें से एक ग्रन्थमें सतयुगसे लेकर कलियुग तक अच्युतानन्दके अनेक जन्मोंका भी वर्णन किया गया है। उड़ीसामें अच्युतानन्ददासकी भविष्यवाणियोंका बड़ा महत्त्व है, और लोग उनके प्रति बड़ी श्रद्धा और विश्वास रखते हैं। उनकी भविष्यवाणियां वैसे तो बड़ी विस्तृत हैं जिनका विवरण एक बड़े ग्रन्थमें भी नहीं दिया जा सकता, पर उनका सारांश थोड़े शब्दोंमें नीचे दिया जाता है।

"बाढ़ और युद्ध, अकाल और महामारी, भूचाल और विस्फोट इस युगकी अनिवार्य घटनायें हैं। योरोपकी प्रायः समस्त आबादी नष्ट हो जायगी, और कुछ समय बाद अमरीका पानीमें डूब जायगा, अन्तमें रूस सफलता प्राप्त करेगा। विजयी रूसको आगामी अवतार वश करेगा। भारतवर्षमें नीलाचल (जो जगन्नाथपुरीके नामसे प्रसिद्ध है) समुद्रगर्भमें विलीन हो जायगा। यह एक नियम सा हो गया है कि प्रत्येक युगके अन्तमें भारतका एक भाग डूब जाता है। त्रेताके अन्तमें लङ्का डूबी थी, और द्वापरके अन्तमें द्वारिका समुद्रमें विलीन हो गई, और अब कलियुगका अन्त होते समय हिन्दुधर्मका प्रधानतीर्थ जगन्नाथपुरी लोप हो जायगी।

'मालिका' की भाषा और भविष्यवाणियोंकी शैलीका एक नमूना भी देखिये—

ठावे-ठावे अनर्थ जे होइ बढ़ि वीर,
दिवस आंधार दिशु थिव अन्धकार ॥१॥
महा घोर अनर्थ जे होइ व संसार,
तेतिकि वेल कुलच रखि थिवु वीर ॥२॥
केहि जे काहारि होइ न रहिवे मही,
अरजीला धन पर नेउ थिवे वो ही ॥३॥
घरे-घरे तातटि बाट पड़िव संसार,
दुर्वाद गाऊ थिवे जे सुजन संगर ॥४॥
असुरान्त माने बड़बड़ बोलाइवे,
खट जे खचु आमाने संसारे फेरिवे ॥५॥
श्रीहरि महीमा जे अटइ दिव्यरस,
निगम वेलकु एका रहिवे मो दास ॥६॥
पश्चिम दिगरू अनुकूल हेव जे वे,
निश्चय जाणिव निकटटि हेव तेवे ॥७॥

बलरामजी गरुड़जीको कलियुगका भविष्य बतलाते हैं

कि—"हे वीर ! जब कलियुगके अन्त होनेका समय होगा, तब जगह-जगह लड़ाई होगी और दिनमें अन्धेरा दिखलाई पड़ेगा ॥१॥ उतने ही समयमें संसारमें बड़ा भारी अनर्थ होगा, उसी समयको ध्यानमें रखो ॥२॥ उस समय संसारमें कोई किसीका न होगा, लोग दूसरेका धन लूटनेको हमेशा तैयार रहेंगे ॥३॥ हर एक घरमें किवाड़ (टट्टी) लग जावेगा। हर जगह भाग्यको कोसना और खराब बातें सुनाई पड़ेंगी ॥४॥ असुर प्रकृति वाले व्यक्ति बड़े आदमी (अमीर) बनकर पूज्य बन जायेंगे और लुटेरे संसारमें स्वच्छन्द होकर फिरेंगे ॥५॥ श्रीहरिका चरित्र अमृत है। उसके प्रभावसे अन्त समयमें भक्त लोग ही बचेंगे ॥६॥ यह लूट-मार जब पश्चिममें शुरू होगी तब समझ लेना कि समय नजदीक आ गया है ॥७॥

इस भविष्यवाणीके अनुसार इस समय पश्चिमी देशोंमें लूट-मार (अपहरण) का भाव चोटी पर पहुँच चुका है, और असुर प्रकृत्ति वाले संसारके प्रधान बने बैठे हैं। इसलिए हमारा विश्वास है कि यह भविष्यवाणी शीघ्र ही सत्य होती दिखलाई पड़ेगी और वर्तमान युगका अन्त होकर एक श्रेष्ठ युगका आविर्भाव होगा।

शेरो साहिबकी भविष्यवाणी

योरोप और अमरीकामें वर्तमान समयमें जितने ज्योतिषी हुए हैं, उनमें शेरो साहिबका नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है। (उच्चारण भेदसे कोई कैरो और कोई चेरो भी कहते हैं) उन्होंने सन् १९२५ में भविष्यवाणीकी एक बहुत बड़ी पुस्तक लिखी थी जिसमें संसार भरमें होने वाले युद्धों, दैवी घटनाओं और नये-नये परिवर्तनोंका उल्लेख किया गया है। उनके भविष्यकथनका आधार यह सिद्धान्त है कि पृथ्वीकी कक्षा या धुरी अपनी जगहसे धीरे-धीरे इधर-उधर हटती रहती है। इस कारणसे सूर्य भी हमको अपने स्थानसे हटता दिखाई देता है। यह पृथ्वीका हटना ऐसा होता है कि सूर्य एक-एक करके बारहों राशियोंमें हो आता है। एक राशिसे दूसरी राशिमें जानेमें उसे २१५० वर्ष और बारहों राशियोंमें २५८०० वर्ष लगते हैं। ईसाके जमानेमें सूर्य मीन राशिमें था। अब सन् १७६२ से कुम्भ राशिमें आ गया है। जब सूर्य मीन राशिमें आया था तो उसके फलसे समुद्री जातियोंकी उन्नति हुई थी। अब कुम्भ राशिका विशेष प्रभाव, रूस, चीन तथा भारत आदि देशों पर है और इस युगमें इन्हीं देशोंकी सबसे अधिक उन्नति होगी।

ज्योतिषके प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार रूस कुम्भ राशिका है और उसका स्वामी शनि माना गया है। शनिका ग्रह मानवीय भाग्यकी दृष्टिसे बड़ा भयंकर माना गया है। यूनानके प्राचीन पुराणोंमें शनिको ऐसे देवताका रूप दिया गया है जो स्वयं ही अपने बच्चोंको खा जाता है। यह लक्षण रूसमें बहुत अंशोंमें पाया जाता है। वह सदासे अपने ही बच्चोंको खाता रहा है। पुराने बादशाहोंके समयमें और अभी पचास वर्ष पहले जारके शासनकालमें रूसमें सदा अनगिनती मनुष्य षडयन्त्रों और क्रांतियोंमें मारे जाते रहे हैं। बोलशेविकोंके समयमें भी विरोधियोंकी बहुत बड़ी संख्यामें हत्याएं की गई हैं। पर समय आयेगा जब कि रूस वालोंका यह खून जो बहुत समय से पानी की भांति बहाया गया है, 'एक नये स्वर्ग और नई पृथ्वीकी रचना करेगा'।

पृथ्वीकी कक्षाके बदलनेका प्रभाव संसारकी आबहवा पर बहुत अधिक पड़ता है। ध्रुवका स्थान बदल जानेसे बड़े-बड़े भूकम्प आते हैं, समुद्रोंकी गहराईमें फर्क पड़ जाता है, जलकी जगह थल और थलकी जगह जल हो जाता है। इस बार भी पचास वर्षके भीतर स्वीडेन, नार्वे, डेनमार्क, तथा इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदिके उत्तरी भाग ऐसे ठंडे हो जायेंगे, कि वहां रहना कठिन हो जाएगा। इसके बदलेमें चीन, भारत, मिश्र, पैलेस्टाइन आदि जो अभी तक गर्म समझे जाते हैं, मातदिल आबहवा वाले बन जायेंगे। इससे इन देशोंकी बड़ी उन्नति होगी, और संसारमें उनका महत्व बहुत अधिक बढ़ जायेगा। अटलांटिक महासागरके बीच एक बड़ा टापू निकल आने से अफ्रीकाका सहारा (रेगिस्तान) फिर से समुद्र बन जायगा, जिससे उस देश की काया पलट हो जायगी और वह भावी सभ्यताका एक बड़ा केन्द्र बन जायगा।

सूर्य जब तक कुम्भ राशिमें रहेगा अर्थात् अब से लगभग दो हजार वर्ष तक, संसारकी सामाजिक अवस्था भी बहुत बदली रहेगी। इस युग में स्त्रियों और मजदूरों की प्रधानता होगी। संसार में से और धर्मोंका ह्रास होकर

❋ चार मासका व्यापार भविष्य ❋

[ले०—श्री पं० हंसराज कपिल ज्यौतिषाचार्य, हरियाना]

किसी वस्तु वा पदार्थकी वास्तविक स्थिति जाननेके लिये शास्त्रान्तर्गत निखिल नियमोंका पालन करना सर्व-प्रथम कर्त्तव्य माना जाता है। क्योंकि जब तक किसी वस्तुकी विवेचनात्मक तुलनाके दृष्टिकोणसे प्रकाश तथा अन्धकारमय पलड़ों द्वारा भारके माप तोलकी जानकारी प्राप्त न की जा सके तब तक तद्वस्तु सम्बन्धी लघुता वा महत्ता न्यूनता तथा अधिकता, महर्घता व समर्घता आदिका प्रतिपादन करना अत्यन्त टेढ़ी खीर हुआ करता है। विशेषतया व्यापारिक विशाल क्षेत्रमें पग रखने वाले सर्वसाधारणको इस बातसे सचेत रहना चाहिये कि व्यापारिक नाट्यकलामें निपुणता प्राप्त करना तलवारकी धार पर नाच करनेके समान है। अतः किसी कार्यके आरम्भ करने से पहले उसके अङ्गाङ्गीभावसे परिचय प्राप्त करना परमावश्यक होता है। इसी ही हेतु शास्त्रीय वैधानिक धाराओं का आगामी चार मासोंमें निम्न प्रकारसे उल्लेख किया गया है जो कि व्यापारिक सूचनात्मक प्रतीक है—

गुड़ गवार तथा मटर—जुलाई मासका विवरण

१ तारीख से ६ तक मंदा ≡), ७ तथा ८ ता० तेजी।=), ९ से १८ ता० तक ।।) ।।=) मन्दा, १९ से २२ तारीख तक तेजी।–) ।≡), २३ ता० से ३१ ता० ।।) मंदा।

साम्यवादका धर्म फैल जायगा। संसारमें बड़े विचित्र सिद्धन्तोंका प्रचार किया जायगा और लोग उनको मान लेंगे। अमीर लोग खुशी से अपनी धन-सम्पत्तिको त्याग देंगे और गरीब बन जायेंगे। बादशाह लोग मजदूरोंके साथ बैठकर रोटी खायेंगे और मजदूर अमीरों पर हुक्म चलायेंगे। बड़े-बड़े लोगोंके पुत्र-पुत्रियां साम्यवादी बन जायेंगे। और अपने बाप दादोंकी जमीन-जायदात गरीबों को बांट देंगे। ईसाई धर्म भी बिल्कुल बदल जायगा और उसमें नये तरहके सिद्धान्त शामिल कर दिये जायेंगे।

—

अगस्त मासकी सूचना—१ से १३ ता० तक ।।≡) तेजी, १४ से २१ ता० तक ।।) मन्दा, २२ से २४ ता० तक ।=) तेजी, २५ से ३० ता० तक घटबढ़ होने पर भी रुख मन्देकी ओर रहता ही चला जावेगा। मार्केट दोरंगी दीख पड़ेगी।

सितम्बर मासका भाव विचार—१ से ११ ता० तक मन्दा ।।=), १२ से २४ ता० तक घटाबढ़ी होने पर भी रुख तेज ।।) ।।=) २५ से ३० ता० तक ।≡) तेजी। इस त्रैमासिक सूचना में गुड़ की मार्केट सवा दो रुपए में दोरंगी खेल खेलेगी।

सरसोंकी रूपरेखा जुलाई मासके अन्तर्गत—

१ से ४ ता० तक तेज, ५ से १३ ता० तक मन्दी, १४ से १६ ता० तक तेज, १७ से १९ ता० तक मन्दी, २० से २२ ता० तक तेज, २३ से ३० ता० तक मंदी।

अगस्त मास—१ से ४ ता० तक तेज, ५ से १५ ता० तक मन्दी, १६ से १८ ता० तक तेज, १९ से २१ ता० तक मन्दी, २२ तथा २३ ता० तेज, २४ से ३१ ता० तक मन्दी।

सितम्बर मास—१ से ५ ता० तक तेज, ६ से १४ ता० तक मन्दी, १५ से २७ ता० तक तेज, २८ से ३० सितम्बर तक मार्केट घटाबढ़ीमें उलझ जावेगी।

रुई सींगदाना तथा अरहर जुलाई मास में—

१ से ११ ता० तक तेज, १२ से २० ता० तक मंदी २१ से २७ ता० तक तेज, २८ से ३० ता० तक मार्केट में घटाबढ़ी होने पर रुख नर्म ही रहने की संभावना है।

अगस्त मास—ता० १-२ मन्दी, ३-४ ता० दोरंगी, ५ से १३ ता० तक तेज, १४ तथा १५ ता० मन्दी, १६ से २४ ता० तक तेज, २५ या २६ ता० मन्दी, २७ से ३० ता० तक तेज।

सितम्बर मास—१ से ३ ता० तक घटाबढ़ी, ४ से १५ ता० तक मंदी, १६-१७ तेज, १८ से ३० सितम्बर तक मार्केट मन्दीमें ही लड़खड़ाती रहेगी।

उपर्युक्त त्रैमासिक सूचनामें सरसोंमें ४) रुई आदि में २०) मन मन्दा होनेकी सम्भावना पाई जाती है।

गवार गुड़ मार्केट

अक्तूबर	१ से लेकर तारीख	१०	तक	तेज ॥।)
,,	१० ,, ,, ,,	१३	,,	घटाबढ़ी
,,	१४ ,, ,, ,,	२१	,,	तेज १)
,,	२२ ,, ,, ,,	२३	,,	दोरंगी रहेगी
,,	२४ ,, ,, ,,	३१	,,	मन्दा ॥=)

रुई सींगदाना आदि

अक्तूबर १ से लेकर तारीख १२ तक घटाबढ़ी रहेगी। जिसमें ३, ४ तारीखें तेजीमें ही व्यतीत होंगी।
अक्तूबर १३ से लेकर ता० २० तक तेजी ३०) ४०)
अक्तूबर २१ से लेकर नवम्बर ता० ४ तक दोरंगी रहेगी।

सरसों

अक्तूबर १ से लेकर तारीख ८ तक तेजी रहेगी।
अक्तूबर ६ से लेकर तारीख ११ तक मन्दी रहेगी।
अक्तूबर १२ से लेकर तारीख २१ तक तेजी रहेगी।
अक्तूबर २२ से लेकर तारीख ३१ तक मन्दी।

त्रैमासिक भाग्याङ्क भविष्य (बम्बई इन्दौर ओपन क्लोज)

[लेखक—श्री पं० विश्वनाथ शर्मा दैवज्ञरत्न]

यह भाग्यांक आप लोगोंको ५० प्रतिशत सत्य मिलकर लाभकारी रहेंगे।

जुलाई १९५८

ता० १-२ को ३,५,	ता० ३-४ को १,६
ता० ७-८ को २,८	ता० १०-११ को ३,७
ता० १५-१६ को १,४	ता० १७-१८ को २,९
ता० २२-२३ को १,३	ता० २५-२८ को २,७
ता० २९-३० को १,९	ता० ३१ को ३ अचूक

अगस्त १९५८

ता० ५-६ को ३,५	ता० ७-८ को १,६
ता० ११-१२ को ४,९	ता० १४-१५ को १,७
ता० १९-२० को ३,०	ता० २१-२२ को २,५
ता० २५-२६ को ३,७	ता० २७-२८ को २,९

सितम्बर १९५८

ता० २-३ को १,४	ता० ४-५ को २,३
ता० ८-९ को १,६	ता० ११-१२ को ३,७
ता० १६-१७ को १,५	ता० १८-१९ को २.८
ता० २२-२३ को १,३	ता० २४-२५ को ४,७

★

शूलामृत वटी

[श्री निरञ्जनानन्द वैद्य रसायन कार्यालय अबोहर]

उदरशूलके लिये एक अपूर्व योग है जो मैंने सैकड़ों रोगियों पर अनुभव किया है, जो रोगी १० वें या १५ वें दिन शूलसे तड़पते हैं उनको तथा जिनके थोड़ा-थोड़ा दर्द प्रत्येक दिवसमें होता है उनके लिए यह योग अमृत है—

१. सागरगोठी ५ तोला (करंजमींग)
२. काला नमक २ तोला
३. ताम्र भस्म बढ़िया आधी रत्ती

निर्माण विधि—सागरगोटीको तवे पर थोड़ा भून लेवें बहुत थोड़ा, पुनः तवेसे उतार कर खरल करें वस्त्रपूत (कपड़छन) के समान करनेके अनन्तर नं० २-३ की औषधि डालकर जलसे घोटें, कोकनके समान गोली बनावें, दो वटी प्रातः गरम जलके साथ, दो वटी शामको एक मास तक खावें। पथ्य—वातकारक वस्तुका त्याग है।

आधा शीशी पर

मुलहठी, बिहीदाना, रेशा खतमी बराबर वजनसे लेकर पानीमें पीसकर छानकर पिलावें, शर्तिया आराम होगा।

लू लगने पर

कितनी ही जोरदार लू लगी है, बेहोश हो गया हो तो बकरीके दूधकी हाथ पैरोंमें मालिश करनेसे लू फौरन उतर जाती है। कच्चे आमको भूभलमें भड़तेकी भांति भूनकर ठण्डा पानी मिला मल कर पीने तथा वही पानी शरीर पर मलनेसे भी लू तत्काल उतर जाती है।

त्रैमासिक व्यापार-भविष्य

[ले०—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न, सुद्दा जि० लुधियाना]

ता० २६ जूनको मध्यान्होत्तर चतुर्दशी लग जाती है ज्येष्ठा नक्षत्र और रविवार पहिलेसे ही चालू हैं, यह चतुर्दशी आषाढ़ शुदीकी है अतः खाद्यान्नोंके भावोंमें तेजी कारक है। ता० २६ जूनसे १ जौलाई तक बुध पर शनैश्चरकी त्रिपाद दृष्टि है। ३० जूनको प्रातः मार्ग गत्या पुनर्वसु नक्षत्रे संक्षिप्ता गतौ पश्चिमोदितो बुधः जिसका प्रभाव बाजार भावों पर प्रथम सप्ताह तेजीका चले, किन्तु बाजार भावोंमें कोई खास वढ़ाघटी न हो, क्योंकि वाणिज्यके अधिष्ठाता बुध संक्षिप्त गतिमें ही चल रहा है। ता० ५ जौलाईसे १० जौलाई तक मंगल पर गुरुदेवकी नवम-पंचम पूर्ण दृष्टिका प्रारूप है, ता० ११ जौलाईको उतररूप है यह मन्दीकारक है। ता० ६ जौलाईसे बुध-हर्शल युतिका प्रारूप, ११ प्रातः तक उत्तररूप ता० १३ जौलाई तक है यह तेजी कारक योग है। अतः इन दिनोंमें बाजार भावोंमें जोरदार घट-बढ़ चलेगी व्यापारी वर्गको सावधानीसे कार्य करने पर प्रथम मन्देसे फिर तेजीके कारोबारसे अवश्य लाभ हो सकता है। ता० १४ जौलाईसे मंगलकी अतिचारावस्था समाप्त होकर शीघ्रावस्था चालू होती है। ता० १३ जौलाई से २२ जौलाई तक मेष अग्निप्रधान राशिमें मंगलकी केतु के साथ युति चलती है, जिससे राहुकी पूर्ण दृष्टि है यह वस्तु मात्रमें मन्देकी पोजीशनको देने वाला है किन्तु गुड़में विशेष रूपसे है। ता० १३ जौलाईसे १६ जौलाई तक गुरु की शुक्र पर नवम पूर्ण दृष्टि है, ता० ११ जौलाईसे २२ जौलाई तक शुक्रका गुरु और राहुको वाम वेध है, अतः गुड़ १) १।), सरसों १) १॥), मटरा ग्वार ॥-), चांदी ७) ८), सोनामें ३) ३॥) के मन्देके योग पाए जाते हैं। ता० १६ जौलाईको तुला लग्नमें मु० ४५ वायुमंडलमें कर्क संक्रान्ति प्रवेश हो रही है। संक्रान्तिके दिन अमावस्या होनेसे खर्प्पर योग है, जो खाद्यान्नोंमें विशेष रूपसे तेजी-कारक होता है। यथा—

यस्मिन्वारेऽस्ति संक्रान्तिस्तत्रैवामावसी तिथिः।
लोके खर्पर योगोऽयं जीवधान्यादि नाशकः॥

श्रावण बदी चतुर्दशीको आर्द्रानक्षत्र है और अमावस्या को पुनर्वसु नक्षत्र होनेसे अन्नका संग्रह लाभ कारक होता है।

ता० १६ जौलाईको कर्क राशि में सूर्यदेवको प्रवेश करते समय मंगलदेव चतुर्थ पूर्ण दृष्टिसे देख रहा है जिसका ता० २५ जौलाई तक प्रारूप है। ता० ४ अगस्त तक उत्तररूप है यह वस्तु मात्रमें मन्देकी प्रतिक्रिया करने वाला है। यथा —

कर्क राशिस्थितौ भानुः पापग्रहैरवलोकितः।
तावत् वस्तु समर्घं स्यात्तावच्च दृष्टिगोचरः॥

ता० १८ जुलाईको द्वितीयायां शुक्रवासरे अश्लेषा नक्षत्रे मु० १५ वारुण मण्डल कर्कराशौ उत्तर शृंगोन्नति में चन्द्रोदय हो रहा है, यह बुध युक्त है, बुध संक्षिप्त गतिमें है, उदय है जो पहिले मंदीके वातावरणको बनानेमें सहायक होगा, शनैश्चर को आधी दृष्टि पड़ रही है जो थोड़ी तेजी कारक है। कर्क राशि और वारुण मण्डल में चन्द्रोदय का होना अतिवृष्टि कारक है, जो छः मास तक दुर्भिक्ष कारक है, विशेषतया छठे मासमें १८ दिसम्बरसे १८ जनवरी १६५६ तकके समयमें। यथा—

चन्द्रोदय चन्द्रक्षेत्रे यदा चैव प्रजायते।
षण्मासं स्याच्च दुर्भिक्षमतिवृष्टि प्रजायते॥

ता० २ जुलाईको रात्रिमें चित्रा ३ चरण तुला राशिमें देवाचार्य गुरु प्रवेश हो रहा है जिसकी राहुसे युति प्रारम्भ हो जाती है, ता० २२ जुलाई से ११ अगस्त तक प्रारूप, ता० २८ अगस्त तक उत्तररूप है, यह वस्तु मात्रमें तेजी कारक है, गुड़ २) २॥) सरसों ३) ३॥) ग्वार-मटरा १) १॥) चांदी ७) ८) रूईमें २५) ३०) तकको तेजी आवे। ता० ३१ जुलाई तक देवाचार्य शून्य अंशमें रहता

है अतः ता० १ अगस्तसे उसका पूर्ण फल प्रारम्भ होना चाहिए। ता० १६ जुलाईसे गुरु शीघ्रावस्थामें प्रवेश होता है। ता० २६ जुलाईसे बुध ६० कलासे कम गतिमें प्रारम्भ होता है। ता० २४ जुलाईसे मंगल बुधका नवम-पंचम योग चालू, ता० १० अगस्त प्रातः तक है, बुधोदय है। ता० ३ अगस्तसे ४ अगस्त तक बुधको सूर्यका वाम वेध तेजी कारक है। ता० ४ अगस्तसे १४ अगस्त तक बुधको केतुका सम्मुख वेध तेजी कारक। ता० ५ अगस्तसे १० अगस्त तक शुक्र पर शनिकी दृष्टिका प्रारूप है।

ता० ६ अगस्तको रात्रिमें बुध वक्री इस पर मंगलकी आधी दृष्टि है; केतुसे सम्मुख वेध द्वारा वेधित है अतः अल्प वृष्टि और अधिक हों, अनाज-रसों-कपास-सूत्र आदि में तेजी चले। ता० ६ अगस्तसे सूर्यकी शनैश्चर पर पञ्चम दृष्टि शनैश्चरकी सूर्य पर नवम दृष्टि ता० १२ अगस्त तक प्रारूप, ता० १६ अगस्त तक उत्तर रूप है। ता० १४ अगस्त रात्रिसे १६ अगस्त तक बुधको सूर्यका वाम वेध, सूर्यको बुधका दक्षिण वेध। ता० १६ अगस्तको घ० ११ प० ४ पर बुध वक्रावस्थामें मघा नक्षत्र मिश्रा गति-सिंह राशिमें पश्चिममें अस्त हो रहा है जो सूर्यसे विद्ध है और ता० १६ अगस्त रात्री मीन लग्नमें मु० ३० अग्नि-मण्डल चतुर्थ वार पांचवे नक्षत्रमें शनैश्चर वारको सिंह संक्रान्ति प्रवेश हो रही है, अतः मूंग-उड़द-चना चावलमें प्रथम तेजी फिर मंदी, वर्षाकी कमी, वायु अधिक चले। ता० १७ अगस्तसे ३१ अगस्त तक शनैश्चर पर मंगलकी अष्टम पूर्ण दृष्टि है शनैश्चर शत्रु राशिमें है क्रूर ग्रह मंगल से दृष्ट होनेके कारण तेजी कारक है। ता० १७ अगस्तको उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र मु० ४५ वायुमण्डलमें उत्तर शृंगोन्नति रविवारको चन्द्रोदय बधा-घटी कारक है। ता० १८ अगस्तको मंगलकी शीघ्रावस्था समाप्त होकर मध्यागति प्रारम्भ होती है। ता० २३ अगस्तसे सूर्य बुध युति प्रारम्भ, ता० २३ अगस्त तक प्रारूप २५ अगस्त तक उत्तररूप अतः युति कालमें ग्वार-मटरमें। -) से ।≡) तक गुड़में ॥।) से ॥।-)॥ तक सरसोंमें ॥=) ॥≡) तककी तेजी तथा सोने चांदीमें मजबूती की धारणा रहे। ता० २४ अगस्तसे आगे सूर्य पीछे शुक्र और मध्यमें बुध तेजी कारक,यह ता० ४ सितम्बर तक चलता है। यथा —

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे च भृगुनन्दनः।
मध्ये सोमसुतो याति भवत्यन्नमहर्घता॥

शुद्ध श्रावण शुक्ल पक्षकी नवमीको शनैश्चर वार है अतः संताप कारक है। ता० २४ अगस्तसे बुधको शुक्रका वामवेध ता० ४ सितम्बर तक बुधका शुक्रको दक्षिण वेध बुधास्त है। ता० २४ अगस्तसे ३० अगस्त तक शुक्रका सूर्यको वाम वेध, सूर्यका शुक्रको दक्षिण वेध है। ता० २४ अगस्त मध्यान्होपरान्त शनैश्चर मार्गी-अवस्थामें प्रवेश हो रहा है। ता० ३१ अगस्तको वक्रावस्था मघा नक्षत्र मिश्रागतिमें पूर्वोदितो बुधः, इस उदय होते हुए बुधको मंगलकी चतुर्थ पूर्ण दृष्टि है, जो ३१ अगस्तसे तीन सितम्बर तक प्रारूप है, और ७ सितम्बर तक उत्तररूप है, अतः सण-सूत-रुई-गुड़-सोना-सरसों-अनाज और तैलोंमें तेजीकी प्रतिक्रिया सिद्ध होवे। ता० २ सितम्बरको बुध मघा नक्षत्र मिश्रा गति मार्गी, इसको शुक्रका चरण वेध है किन्तु दैत्याचार्य अङ्गारकसे पूर्ण दृष्टि द्वारा दृष्ट होनेसे गुड़ सरसों पाट और अनाजोंमें तेजी कारक है। ता० ४ सितम्बरसे १० सितम्बर तक बुध पर मंगलकी चतुर्थ पूर्ण दृष्टि यह भी तेजी कारक ही है। ता० २ सितम्बरसे शुक्र देव अतिचारावस्थामें प्रारम्भ हुआ है जिस पर क्रूर भौमकी चतुर्थ पूर्ण दृष्टि है यह भी एक सप्ताहके लिए तेजी कारक है। ता० ४ सितम्बरसे बुध शुक्र युति सिंहराशिमें प्रारम्भ होती है, ता० ६ सितम्बरको शुक्र-बुधसे आगे निकल जाता है फिर बुध पीछेसे युति ता० १८ सितम्बर तक प्रारूप, ता० २५ सितम्बर तक उत्तररूप है। ता० १० सितम्बर तक बुध-मंगलसे दृष्ट है। ७ सितम्बर तक शुक्र मंगलसे दृष्ट है अतः १० सितम्बरसे मंदेकी प्रतिक्रिया प्रारम्भ होवे। ता० ५ सितम्बरसे १८ सितम्बर तक आगे सूर्य पीछे बुध और मध्यमें शुक्र मन्दी कारक है। यथा —

अग्रे याति दिवानाथः पृष्ठे सोमसुतस्तथा।
मध्ये शुक्रो यदा याति तदा वाच्चा समर्घता॥

ता० ७ सितम्बरको गुरुदेव प्रातः काल स्वाति नक्षत्र में प्रवेश करते हैं अतः अनेक प्रकारके मेघ आकाश मण्डल में मण्डराएँ जिससे वर्षा अनेक प्रकारकी होवें, किन्तु खेती के लिए किसी किसी स्थानके लिए ही श्रेष्ठ फल होवे।

ता० ७ सितम्बर प्रातःसे ज्येष्ठा नक्षत्रगत शनैश्चरको देवाचार्यका वाम वेध चलता है जो ता० ७ नवम्बर तक है, किन्तु है नक्षत्र वेध ही, चरणवेध केवल २४-२५ सितम्बरको है।

स्वाति नक्षत्र तुला राशि वायु तत्वात्मिका है, किन्तु देवाचार्य पृथ्वी तत्वात्मक ग्रह है तथा मिश्र फल वाली राशि में है जो माहेन्द्र मण्डलीय नक्षत्र जल तत्वात्मक फलवती राशि और वायु तत्वात्मक शनैश्चरको वेध रहा है, जिसका प्रभाव बाजार भावोंमें मिश्रित फल देने वाला ही सिद्ध होगा, कोई पक्की लाईन नहीं दे सकेगा। ता० १९ अक्तूबरको गुरुदेव अस्त हो जाते हैं, जो सूक्ष्म विश्लेषणसे निश्चित करता है कि यह मंदेके वातावरणको उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होगा; बाजार रुख मंदेके फेवरमें चले। ता० ६ सितम्बरको भाद्रपदवदी अष्टमीको शनैश्चरवार रोहिणी नक्षत्र युक्त होनेसे गेहूँ, हल्दी, जीरा, पारा, शीशा, कस्तूरी, तिल, तैल, गुड़, हींगका भाव तीन मास उपरान्त तेज हो जावे, चतुर्थ मास ६ दिसम्बरसे ६ जनवरी सन् १९५९ तक का है। यथा—

भाद्रपदाष्टमीकृष्णा रोहिणी मन्द संयुता।
द्रव्यमेतच्च रक्षयेद् गोधूमानां महर्घता॥
हरिद्रा जीरकं चैव पारदं शीशकं तथा।
कस्तूरी तिल तैलं च गुड़ हिंगु महर्घता॥
रक्षयेदात्रिमासांश्च पश्चाद्विक्रियतां ध्रुवम्॥

ता० १३ सितम्बरको भाद्रपद वदी अमावस्या शनैश्चर वारी होनेसे तेलोंमें तेजी कारक है। ता० १० सितम्बरसे बुध ६० कलासे ऊंची गतिमें प्रारम्भ होता है यह शुक्रसे युक्त होने के कारण मन्दी कारक है। ता० ९ सितम्बरसे सिंह राशि स्वर्क्षी सूर्य पर शनैश्चर पापीकी दशम पूर्ण दृष्टि है जिसका ता० १८ सितम्बर तक प्रारूप और ता० १६ सितम्बर तक उत्तर रूप है, यह मंदी कारक है।

ता० ३ सितम्बरसे २५ सितम्बर प्रातः तक गुरु-नैपच्यून युति प्रारूप ता० २५ सितम्बर प्रातः से १५ अक्तूबर तक उत्तर रूप है, यह योग तेजी कारक है। ता० १४ सितम्बर रात्रि से २४ सितम्बर प्रातः तक शुक्रको केतु का संमुख वेध है यह तेजी कारक है।

१३ सितम्बरसे शनैश्चर शीघ्रावस्थामें प्रवेश होता है।

चन्द्रदर्शन और संक्रान्तिका फल

ता० १५ सितम्बरको भाद्रपद शुक्ल द्वितीया सोमवार चित्रा नक्षत्रमें मुहूर्त्त ३० वायुमण्डल कन्या राशिमें चन्द्रोदय राहु युक्त है, अतः सोना रत्न-मूंगा-मूंगी-उड़द-सूत और कपास तथा घोड़े आदि वाहनों में तेजी होवे।

ता० १६ सितम्बर भौमवार रात्रि वृषभ लग्न, स्वाति नक्षत्र में मु० १५ वायुमण्डल, चतुर्थवार, पांचवें नक्षत्रमें कन्या संक्रान्ति प्रवेश हो रही है, अतः सर्वक्षार-तिल-तेल-रस (घी-गुड़-लवणादि) कपूर-बर्तन और अनाजोंमें तेजी होवे, अतिवायु चले, चौर भय, और दुर्भिक्ष जैसी स्थिति उत्पन्न होवे। यह संक्रान्ति पहिली संक्रान्तिसे पांचवे नक्षत्र, १५ मुहूर्त्ती लगने के कारण संसारमें महान् दुर्भिक्ष और कष्टकारक है। यथा—

पूर्वात्तृतीय पंचर्क्षे लघुभे यदि संक्रमः।
तदा भवेन्महल्लोके दुर्भिक्षं कष्टकारकम्॥

ता० १८ सितम्बरसे २३ सितम्बर तक मंगल-सूर्य नवम-पंचम योग प्रारूप, ता० २७ तक उत्तररूप यह तेजी कारक योग है। ता० १९ सितम्बरको भाद्रपद शुदी सप्तमी शुक्रवारी अनुराधा नक्षत्र युक्त अनावृष्टिकारक है।

ता० १७ सितम्बरसे आगे सूर्य पीछे शुक्र और मध्य में बुध चलता है यह तेजीकारक है। यह योग ता० ५ अक्तूबर तक चलता है।

ता० १९ सितम्बर रात्रि सिंह राशि पू० फा० नक्षत्रमें गति संक्षिप्त मार्गावस्थामें बुध पूर्वमें अस्त होता है यह तेजी-कारक है।

ता० १९ सितम्बरसे तीन अक्तूबर तक मंगल पर गुरुदेवकी चतुर्थ त्रिपाद दृष्टि है, गुरुदेवकी हर्शलसे युति चलती है, मंगल वृष राशिमें है जो इसकी शत्रु राशि पृथ्वी तत्वात्मिका तथा फलवती है, जिसके साथ उत्तेजित गुरुदेवका केन्द्रयोग है यह भी तेजीकी अधिकता कारक ही है। ता० १८ सितम्बरसे बुध अतिचारावस्थामें प्रारम्भ होता है। ता० २१ सितम्बरसे बुध पर शनैश्चरकी दशम पूर्ण दृष्टि ता० २३ सितम्बर तक प्रारूप, ता० २५ सितम्बर मध्यान्होत्तर तक उत्तररूप तेजी कारक है। ता० २२ सितम्बर मध्यान्होत्तरसे २८ सितम्बर मध्यान्ह तक शुक्र पर

शनैश्चरकी दशमपूर्ण दृष्टि तेजी कारक है।

ता० २४ सितम्बरको मध्यान्हमें राहु कन्यामें केतु मीन राशिमें प्रवेश करता है अतः पिपली आंवले आदि किराणे की वस्तुओंमें एक या दो माल उपरान्त विशेष लाभ होवे। ता० २६ सितम्बरको बुध ऊंचीसे ऊंची गतिको समाप्त करता है। ता० २५ सितम्बर रात्रिसे ३ अक्तूबर मध्यान्ह तक केतुका शुक्रको संमुख वेध यह तेजी कारक है। ता० २७ सितम्बरसे मंगल पर बुधकी नवम दृष्टि, बुध पर मंगल की पंचम दृष्टि, ता० २९ तक प्रारूप, उत्तर रूप ता० १ अक्तूबर तक है। ता० २ अक्तूबरसे शुक्रकी मंगल पर नवम दृष्टि, मंगलकी शुक्र पर पंचम दृष्टि, ता० ५ अक्तूबर तक प्रारूप, ता० ८ अक्टूबर तक उत्तररूप। ता० १ अक्तूबरसे देवाचार्य अतिचारावस्थामें प्रवेश होता है। ता० २ अक्तूबरसे सूर्य-बुध युति चालू, प्रारूप ५ अक्तूबर तक, उत्तररूप ता० १० अक्तूबर दोपहर तक, यह युति हस्त नक्षत्रमें हो रही है, बुध पापाख्या गतिमें चल रहा है, सूर्यसे बुध आगे चलना प्रारम्भ करता है, युति कालमें गुड़ १) से १।-) तक, सरसों १), ग्वार मटर ॥) ॥-) चांदी ५) से ८) सोना ३) ३॥) मंदे।

ता० ६ अक्तूबरसे ११ अक्तूबर तक आगे बुध पीछे शुक्र और मध्यमें सूर्य मन्दी कारक। ता० ६ अक्तूबरसे बुधकी अतिचारावस्था समाप्त, शीघ्रावस्था प्रारम्भ, ता० १० अक्तूबरसे राहु-बुध युति चालू, ता० ११ तक प्रारूप, ता० १२ को उत्तररूप है, केतुकी सप्तम पूर्ण दृष्टि है, बुध सूर्य के साथ अस्त है पाप ग्रह राहुसे युति करता है, जो मंदे की प्रतिक्रियाको ही बढ़ावा देनेमें सहायक होवे।

ता० ११ अक्तूबरको असिमुशल नामक भौम वक्रावस्थामें चलना प्रारम्भ करता है, यह अनेक प्रकारकी वस्तुओं में तेजी तथा कुछेकमें मंदी कारक सिद्ध होवे। ता० १२ अक्तूबरसे १५ अक्तूबर तक आगे बुध पीछे सूर्य और मध्यमें राहु यह तेजी कारक है।

चन्द्रोदय और तुला संक्रान्तिका फल

ता० १४ अक्तूबरको द्वितीया भौमवार स्वाति नक्षत्र मु० १५ वायुमंडल, उत्तर शृंगोन्नतिमें चन्द्रोदय हो रहा है, यह चन्द्रोदय गुरु युक्त है अतः मंदी कारक सिद्ध होगा। ता० १५ अक्तूबरको रात्रिसे बुधकी अष्टम त्रिपाद दृष्टि मंगल पर ता० १७ अक्तूबरतक प्रारूप, १९ अक्तूबर तक उत्तररूप है, बुधास्त है, ता० ३० सितम्बरको आश्विन वदी तृतीया भौमवारी होनेसे अन्नमें तेजी कारक योग है। ता० १३ अक्तूबर प्रातः तक से १६ अक्तूबर प्रातः सूर्य राहु युति प्रारूप, ता० १६ प्रातः से १७ के प्रातः तक उत्तररूप है, यह युति कन्या राशिमें हो रही है यह राशि पृथ्वी तत्वात्मिका तथा अफलवती है। अतः यह तेजीको रोकने वाली सिद्ध होगी। ता० १७ अक्तूबरको वृश्चिक लग्न, ज्येष्ठा नक्षत्र मु० १५ माहेन्द्र मण्डल चतुर्थ नक्षत्र शुक्रवारको तुला संक्रान्ति प्रवेश हो रही है, १५ मुहूर्त्ती होनेके कारण तेजी कारक है, किन्तु शुक्रवारको तुला संक्रान्तिका लगना प्रायः मंदेके वातावरणको ही उत्पन्न करने में सहायक होगा, पायस मंदा होनेके कारण व्यापारिक वस्तुओंमें मंदी तथा रसोंके भावोंमें हेर-फेर होवे। ता० १६ अक्तूबर मध्यान्हसे २४ अक्तूबर तक बुधका शनिको वाम वेध है। ता० १७ अक्तूबरसे ३१ अक्तूबर तक सूर्य बुध तुला राशिमें खाद्यान्न मंदे हों। ता० १९ अक्तूबरको शुक्र अस्त और २२ अक्तूबरको गुरुदेव भी अस्त हो रहे हैं। अतः पाट, सण, रेशम, रुई और हर प्रकारका अनाज तथा रस (गुड़ लवण तेल घी आदि) में मंदी चले।

> स्वातिंगतो देवगुरुः यदि चास्तमेति
> भृगुजोऽपि दैवयोगाद्यदि तत्र लुप्तः।
> पट्टं शणं विमल तूलकया समेतं,
> समर्घं भवेत्तदा धान्य रसादिकेषु॥

ता० १६ अक्तूबरसे १८ तक बुध नैपच्यून युति प्रारूप ता० २१ तक उत्तररूप, बुध-सूर्य युक्त है। ता० १८ अक्तूबरसे शुक्र-राहु युति ता० २१ दोपहर तक प्रारूप, २२ दोपहर तक उत्तररूप। ता० १६ अक्तूबरसे १८ अक्तूबर तक आगे बुध पीछे राहु और मध्यमें सूर्य मंदी कारक है। ता० १९ अक्तूबरसे बुध-गुरु युति प्रारूप, ता० २१ तक, ता० २४ अक्तूबर तक उत्तर रूप है। दोनों अस्त हैं। ता० १९ अक्तूबरसे २१ अक्तूबर तक आगे बुध पीछे सूर्य मध्यमें नैपच्यून मंदी कारक है।

ता० २१ अक्तूबरको आश्विन शुक्ला नवमी मंगलवारी

अनुभव सिद्ध व्यापारिक निर्णय

[ज्योतिषरत्न श्री पं० राजाराम जैन, मैनपुरी (यू० पी०)]

सोमवारको चतुर्दशी उपरान्त आषाढ़ी पूर्णिमा, ता० ३० जून सूर्यास्त कालमें वायु-परीक्षणार्थ मान्य होगी। वार फल उत्तम किन्तु मूल नक्षत्रका होना आगे असमय वृष्टि, न्यून वृष्टि, अनावृष्टि पश्चात् जल प्रलयका नग्न दृश्य आश्विन मासमें प्रत्यक्ष दिखाई देनेके लक्षण ग्रह योगानुसार प्रतीत हो रहे हैं। किन्तु ता० ३० जूनको जिस क्षेत्रमें सूर्य, चन्द्रमा आठों प्रहर बादलोंमें रहें जो दिखाई न पड़ें, साथ ही वायु भी सन्ध्या समय उत्तर, उत्तर-पूर्वकी कोण अर्थात् ईशान, पूर्व, पश्चिमकी चले तो भली लगे, आगे समयानुकूल श्रेष्ठ वर्षाकारक ही सिद्ध होगी। वायव्यकी चले तो नेवला, चूहा, टिड्डी, दीमक, तोता आदि के जोरसे उत्पत्तिको बिगाड़ देगी, साथ ही वायुका वेग भी अवश्य ही बना रहेगा। स्त्रियोंको नाना प्रकारके कष्ट, खण्डवृष्टि सूचक सिद्ध होगी। दक्षिणकी वर्षानाशक, नारियल, खोपरा, छुहारा, सुपारीके भावोंमें और भी अधिक तेजी लावेगी। नैऋत्यकी घोर दुर्भिक्षकारी हाय सूखा हाय सूखाका निश्चित रूपसे ही आर्त्तनाद करावेगी। आग्नेयकी चले तो पोखर तालाब छोटी नदियोंका जल सुखा देगी, जल कुओंमें थोड़ी मात्रामें दिखाई देगा। कहा भी है कि—

होनेके कारण कपास और उड़दका संग्रह करनेसे चैत्र मास में दुगुना लाभ होवे। यथा—

नवमी चाश्विने शुक्ले कुजवारेण संयुताः।
मुहुः कार्पास चपला माषादे संग्रहो मतः॥
द्विगुणस्तु भवेल्लाभो चैत्रे मासेऽथ विक्रये॥

ता० २१ अक्तूबरसे २४ अक्तूबर तक सूर्यकी मंगल पर अष्टम त्रिपाद दृष्टिका प्रारूप, ता० २७ अक्तूबर तक उत्तर रूप है यह तेजी कारक है। ता० २२ अक्तूबरसे आगे गुरु पीछे सूर्य और मध्यमें नैपच्यून थोड़ी मंदी कारक २८ अक्तूबर तक है। ता० २५ अक्तूबरसे सूर्य नैपच्यून युति ता० २८ सायं तक प्रारूप ता० ३१ तक उत्तर रूप है।

माघका ऊमस जेठका जाड़, पहले बरखा भरिगा ताल।
कहैं घाघ हम होयब योगी, कुआँ खोदि कैं धुइ हैं धोबी॥

वायु परीक्षा

अभी रात्रिको आज लेख लिखते समय ज्येष्ठी पूर्णिमाको इधर अभी तक ज्येष्ठ मासमें जाड़ा पड़ रहा है यदि आषाढ़ी पूर्णिमाको शकुन शुभ रहे तो इस जाड़ेका प्रभाव नहीं होगा। आमने सामनेकी वायु भी वर्षा नाशक ही होती है। चारों ओरको घूमनेवाली ऐसी वायु जो कि पहले पूर्व फिर, दक्षिण पश्चिमोत्तरको गोला बनाती हुई चले तो आगे सुभिक्ष और समयानुकूल वर्षा होकर उत्पत्ति श्रेष्ठ होगी, किन्तु यदि विपरीत गोला बनावे तो घोर दुर्भिक्ष वर्षाकी मांग उस क्षेत्रमें निरन्तर होती रहेगी। सन्ध्या कालमें ही पहले शुभ दिशाकी चलकर पश्चात् अशुभ-दिशाकी चले तो अशुभफल होगा। वायु शान्त रहना भी शुभ है। पश्चिमकी चले तो मोटे अनाज ज्वार, बाजरा, मक्का, रमास, मोंठ, मूंग, उड़दकी उत्पत्ति श्रेष्ठ होनेसे मन्दा चलेगा तथा पौष माघ मासमें पाला भी उसी क्षेत्रमें अवश्य ही पड़ेगा। रात्रिको प्रथम दो प्रहरमें चन्द्रमा बादलोंमें रहे तो श्रावणमें वर्षा श्रेष्ठ अन्न भी मन्दा, यदि आधी रातके बाद चन्द्रमा बादलोंमें रहे तो भाद्रपदमें ही श्रेष्ठ वर्षा हो सकेगी। अगले दिन सुबह तड़के चन्द्रमा बादलोंसे निकले तो आश्विनमें वर्षा श्रेष्ठ होगी। अन्न भी मन्दा होगा। बादलोंमें खुलता बन्द होता चन्द्रमा शुभ नहीं गिना जाता। पूर्णिमाको वर्षा होना नेष्ट, यदि ऐसा हो तो श्रावणमें अन्नादि अवश्य ही तेज बिकेंगे। पूर्णिमाको बूँदा बाँदी फुहार होती रहना शुभ है। यह पूर्णिमा निर्मली (बादल रहित) अशुभ, वायु सहित जहाँ भी रहेगी वहां प्रत्यक्ष दुर्भिक्षसे त्राहि त्राहि करा देगी। गोबरके उपलेको अधजला करके ऊँची छत पर रखकर प्राचीन आचार्योंके अपूर्व अनुसन्धानकी परीक्षा करते हुये हमें भी सूचना देकर अनुगृहीत

करें। शुभ वायु सहित सूर्य चन्द्रका बादलोंसें रहना कोई भी पिछला अशुभ योग, चाहे सप्तग्रही योग क्यों न हो, अवश्य ही नष्ट कर देगा, किन्तु आज अशुभ वायु, बादलोंका न होना या घोर वर्षाका होना आगे निश्चय ही उसी क्षेत्रमें दुर्भिक्ष करेगा। आज सूर्य चन्द्रमा पर कुण्डल होना भी अशुभ ही कहा गया है।

प्र० श्रावण मास अगस्त १९५८

इस वर्षमें दो श्रावण मास हैं। इसके लिये घाघजी कहते हैं—

दो सावन दो भादवा, दो कार्तिक दो माह।
गहना कपड़ा बेचिके, नाज बिसाहो साह॥

अर्थात् जिस वर्षमें दो श्रावण मास अथवा दो भाद्रपद मास या दो कार्तिक मास आते हैं तो उस वर्षमें हे! वणिक शिरोमणि शाहजी! गहना और अपने घरके कपड़े तक बेचकर अन्नादि खरीद लो। स्वानुभवित सोना, चांदी और कपड़ा मन्दा होता जाता है। अन्नादि तेज होते चले जाते हैं। साथ ही लौंद वाले वर्षके लिये अपना अनुभव यह भी है कि नव वर्ष लगते ही (अर्थात् २०१५) तेलके बीज अरहर, मटर, उड़द, मूंग, सोंठ, सौंफ, धनियां, अजवायन, जीरा, मेथी, हल्दी, गुड़, अमचूर, खांड के संग्रहसे दिवाली तक श्रेष्ठ लाभ हो जाता है। जो कि आषाढ़ी पूर्णिमा तक अथवा इसके बाद भी श्रेष्ठ तम मन्दी भी लावेगी—कारण दिवाली मंगलवारीका राज्य अगली दिवालीके पहले तक रहेगा। आषाढ़में जिस तिथिसे मन्दी चलेगी वह ४०।४२ दिन तक बराबर चलती रहनेकी पूर्ण आशा है। घाघजी ने कहा है कि—

"मंगलवारी परै दिवारी, हँसैं किसान रोय व्यापारी"

अर्थात् मंगलवारी दिवाली जब-जब पड़ती है—तब-तब किसान अपनी फसलके—अन्नादिको बाजारमें लाकर अच्छा मूल्य पाकर (तेज बेचकर) हँसता और प्रसन्न होता है, उसकी फसल पर व्यापारी लोग तेज भावों खरीद कर आगे रोते हैं यानी फसल पर दोनों फसलों पर तेजी, फसलके बाद मन्दा आता है। मेरे विचारसे फसलके पश्चात्की मन्दी बङ्ग आषाढ़ मासमें ही आवुकेगी पश्चात् धीरे-धीरे दिवालीके पहले तक विशेष तेजी आवेगी। इसके लिये संवत् २०१४ का शीतकाल साक्षी है। श्रावण मासमें दक्षिणी वायु चलते ही तत्काल उसी ही समय बादल बरसना बन्द कर देते हैं जैसे आती हुई रेलगाड़ीको लाल झण्डी दिखा दी गई हो। यदि पश्चिमी वायु चलने लगे तो तेजीसे चले तो घोर वर्षा। शनैः शनैः चले तो बराबर धीमी धीमी मनभावनी फुहार पड़ने लगती है। जिज्ञासु या परीक्षार्थी पूर्वाचार्योंके अनुसन्धानको जब भी चाहें प्रत्यक्ष देख सकते हैं। प्र० श्रावण मासमें दैवयोगसे ५ बुधवार भी आ गये हैं जो कि प्रारम्भसे ही तेजी या मन्दीका भयङ्कर सूत्रपात प्रारम्भ करते हुये व्यापारिक प्रलयका दृश्य फाल्गुन सम्वत् २०१४ जैसी चालसे पुनः दिखावेगे सावधान! २ जुलाई को शेयर्स एकदम तेज, सूर्य शनिकी युति १३।२१ बजेसे ५ जुलाई तक अन्न तेलके बीज, गुड़ आदि में श्रेष्ठ तेजी आवेगी। ता० ५ को शुक्र केतुका चरण वेध १४।३८ बजेसे ता० ७ तक रुई, पाट, बारदाना, कच्ची ऊन, रेशमके भावोंमें मन्दी लावेगा। ता० ६ को पुनर्वसौ रविः श्रेष्ठ वर्षा करेगा। मंगल शनिकी नवांश युति ता० १० तक गुड़, खांड़, तेलके बीज अन्नादिमें श्रेष्ठ तेजी चमकेगी। ता० ७ को—पुनर्वसुके रविमें शतभिषा नक्षत्र रुई, चांदी, तांबा, सोना, कालीमिर्चमें तेजी अस्थायी रूपसे अवश्य ही आवेगी। ता० ९ को १८।५० बजे मंगल गुरुकी प्रतियुति चांदी, सोना मन्दा करेगी। लंका, गोआ, पाकिस्तान, अफ्रीकाकी जनताको कष्ट होगा। आज व्यापारियोंकी चिरपरिचित एवं परीक्षित बुधाष्टमी बस्तुमात्रको ही बेचनेकी सलाह देती है। आज ही मंगल पृथ्वीके सन्निकट आ गया है। वृषभ राशिमें सूर्य केतुकी नवांश युति १३।१४ बजेसे ता० १२ तक चांदी, सोना, रुई, पाट, बारदाना, कच्ची ऊन, रेशमको मन्दा करेगी। ता० ११ को शीघ्री मेषे भौमः (मंगल केतुयोग) पृथ्वीके सन्निकट होनेके कारण भूमि पर विशेष प्रभाव दिखावेगा। खनिज पदार्थ तथा भूमिसे उत्पन्न वस्तुओंकी वृद्धि करेगा। वर्षा उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, मथुरा, बहराइच, बङ्गाल, मध्यप्रदेश आदि स्थानोंमें डटकर खूब होगी। जबकि हैदराबाद दक्षिण तथा पश्चिमी घाटके इलाकोंमें घोर वर्षाका सूत्रपात होगा। रुई, पाट, बारदाना, रस्सी मूँज, पतेल नारियलकी जटा, कच्ची

ऊन, रेशमके भावोंमें तेजी होगी। यहीं शुक्र राहुसे भी वेधित ता० २१ तक चरण द्वारा वेधित, ता० १३ तक रहकर ओढ़ने बिछानेकी वस्तुओंको अधिक बढ़ने भी नहीं देगा। ता० १४ को शुक्र गुरुकी कन्या नवांशमें युति होनेके फलस्वरूप घोर वर्षा, गुड़, तेलके बीज अन्नादिमें अच्छी मन्दी आवेगी। सवेरे ६।६ बजे वरुण देव मार्गी होंगे कहीं-कहीं घोर वर्षाका सूत्रपात होगा। मार्केटमें तूफानी तेजी मन्दी चलेगी। नजराना लगाना ही श्रेष्ठ रहेगा। ता० १५ को बाजारकी चाल गत समयसे परिवर्तित अवश्य हो जावेगी। समयका सदुपयोग करें १६ जुलाई को अमावसमें कर्क संक्रान्तिसे तेजीके योग सम्पन्न होंगे, कारण चौथे बार पाँचवें नक्षत्रमें लगेगी जो कि घोर तेजी कारक है, यथा—

वारे चतुर्थे यदि पञ्चमे वा
धिष्ण्ये तृतीये यदि पञ्चमे वा।
पूर्वं क्रमात् संक्रमते यदार्कस्तदा
च दुःखं नृपविड्वरं च॥

चौथे बार पाँचवें नक्षत्रमें लगी संक्रान्ति अन्नादिमें तेजी, राजा प्रजाको दुःखदायी होगी। अमावसको लगनेसे चांदी सोनाके गिरते भाव सुधरते हुये शनैः शनैः बढ़ने लगेंगे। ता० १८ जुलाई को १५ मुहुर्ता शुक्रवारा चन्द्रोदय सोना, चांदी, रुई, पाट, बारदाना, रेशम, कच्ची ऊनके भावोंमें तेजी का उछाला लावेगा। अन्य वस्तुयें भी अवश्य ही तेज होंगी। ता० २० पुष्ये रविः चांदी, सोनामें तेजी। रुई, शेयर्स कच्ची ऊन, पाट, बारदानामें मन्दीकी लायन बनावेगा। ता० २१ को पुनः तुलामें गुरु मल माससें (गुरु-राहु योग) रुई, पाट, बारदानामें तेजी कारक योग था किन्तु यहाँ सूर्य--गुरु राहु--मंगल केतुसे पारस्परिक केन्द्रयोग बना है जो कि चांदी, सोना, शेयर्स रुई, पाट, बारदाना, कच्ची ऊनमें सपाटेकी मन्दी लावे तो कोई आश्चर्य नहीं। लोहेके भाव भी अन्य सभी धातुओंके साथ गिरनेकी आशा है। लौंग सुपारीकी तेजीका अन्त हो सकेगा, व्यापारीयोंको यहाँ लायन चलती देखकर व्यापार करना उचित होगा। मल माससें गुरुका राशि पर्यटन घोर वर्षा कारक लोकक्षय तथा तुलाके गुरुके राश्यन्तमें वस्तु मात्र तेजीमें दिखाई देगी, अन्तमें मन्दी वस्तुओंका संग्रह अवश्य ही करें। २८ दिसम्बर सन् ५८ को गुरुदेव तुलाराशि छोड़ देंगे। यहाँसे १ मास पूर्वसे ही मिथुन, कन्या, कुम्भ, तुला, राशि वालोंको नाना प्रकारसे हानि कष्ट पदच्युति स्थानान्तर तथा वृष, वृश्चिक, मकर, मीन राशिवालोंको नाना प्रकारसे लाभ उन्नतिके साथ स्थानान्तर होगा। श्रावण पूर्णिमा श्रवण रहित नेष्ट है।

द्वितीय श्रावण (अगस्त) १९५८

१ अगस्तको भरण्यां भौमः अलसी, तेलके बीज, रुई, पाट बारदाना अन्नादि चांदी सोना तेज करेगा। ता० २ को पुनर्वसुका शुक्र शीघ्रावस्थाका रुई, पाट, बारदाना कच्ची ऊनके अतिरिक्त वस्तु मात्रमें मन्दी चाहता है, प्रसंग देखकर ही कार्य करें या नजराना लगावें। ता० ३ को अश्लेषायां रविः सोना, चांदी, तेलके बीज अन्न गुड़ आदि में तेजी लावेगा। ता० ८ की रात्रिमें बुध वक्री होगा। यहां पर बादल वर्षा वायुवेग प्रत्यक्ष दिखाई देगा। ता० २ से चलती लायन पलटा खावेगी। ता० १० को कर्क राशि में सूर्य शुक्र योग यद्यपि चांदी सोना में तेजी कारक योग है किन्तु अब यहां सूर्य, शुक्र, बृहस्पति, राहु, मंगल, केतु का आपसमें केन्द्रयोग और भी अधिक सबल बनेगा जो कि चांदी, सोनाके अतिरिक्त सभी धातुएं शेयर्स लौंग, दालचीनी, सुपारीके भावोंमें तूफानी मन्दीकी राह दिखा दे तो आश्चर्य नहीं! रुई पाट बारदाना भी साथ चल सकेंगे। ता० ११ को गुरु राहुकी अंशात्मक युति २१ जुलाई से विपरीत लायन चलावेगी जो कि चांदी-सोना चावलमें अवश्य ही श्रेष्ठ मन्दीका चांस पेश करेगी। गरीब व्यापारी नजराना लगावें, बड़े व्यापारी प्रसंग देखकर मंदीका व्यापार करें। किसी गुरुत्वपूर्ण नेता (भारतीय नेता) को १ मास में ऐक्सीडेंट अथवा रोगादिसे मृत्युका सामना करना पड़ेगा। ता० १३ को सूर्य शुक्र चन्द्र योग कर्क राशिमें बनेगा, यथा :—

दिननाथेन्दुकवयो यदैकत्र समाश्रिताः।
उत्तरस्थो दिशि भयं प्रजा क्रन्दन्ति नित्यशः।
यवान्न मुदगवस्त्राणां संग्रहे च कृते सति
मासे सप्तमके चैव लाभो भवति पुष्कलः॥

अर्थात्—सूर्य, शुक्र, चन्द्रयोग होता है तब भारतके उत्तर दिशामें भय, प्रजा चिल्लाती फिरें। अन्न मूंग

वस्त्रादिके संग्रहसे सातवें मासमें लाभ होता है । स्वानुभवित ऐसा है कि योग लगते ही १ मासमें वस्तुमात्र तेज, छठे मासमें मन्दा, सातवें मासमें घोर तेजी होती है । ता० १६ अगस्तको पश्चिमास्तं बुधः ता० ४ से चली लायन पलटा खावेगी, बादल वर्षा वायुवेग प्रत्यक्ष दिखाई देगा। ता० २४ को शनिदेव मार्गी होंगे घोर बादल वर्षा वायुवेग अनेक स्थानोंमें सुनाई देगा, समाचारपत्र साक्षी होंगे। फलस्वरूप किसी वस्तुमें मोटी तेजी तो किसीमें ठोस मन्दी आवेगी । रक्षाबन्धन को श्रवण नक्षत्रका न होना उत्पत्ति आदिके लिए श्रेष्ठ नहीं रहेगा ।

भाद्रपद मास सितम्बर १९५८

भाद्रपद मासमें जिस तिथिसे जिस तिथि तक पश्चिमी वायु चलती है, माघ मासमें ठीक उसी तिथिसे उसी तिथि तक पाला भी अवश्य ही पड़ता है, परीक्षित है। पूर्वीय वायु चलते ही तत्काल वर्षा होने लगती है तथा पश्चिमी चलते ही प्रायः बन्द हो जाती है ।

भाद्रपद मासमें पांच शनिवार हैं इसके लिये घाघजी कहते हैं—

महा मंगल ज्येष्ठे रवि, भादों शनि युत होय।
तात कहे रे ! बालका, नाजमें एक का दोय ॥

१ सितम्बरको बुध पूर्व दिशामें उदय होगा वायुवेग घोर बादल वर्षा का जोर होगा । रुई, पाट, बारदाना, कच्ची ऊनमें तेजी की लायन चलेगी । बुध ता० ३ को मार्गी होगा अतः घटा-बढ़ी भी जोर-शोर से चलेगी ।

ता २ को बृषे भौमः (सप्त मासिक) शनि भौम प्रतियोग वस्तु मात्रमें ही तेजीका बिगुल बजा दे बड़ी बात नहीं । भयानक वर्षाका उत्पात भी अवश्य ही होगा । 'चौथ मंगलवारी सप्तमी शुक्रवारी' कठोल दाल, अन्न, तेल के बीज, गुड़, चांदी-सोनामें श्रेष्ठ तेजी ला सकेगी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमीको शनिवार रोहिणी नक्षत्र होनेसे शेयर्स तिल, तैल, गुड़, हींग, ज्वार, बाजरा, मटर, मोठ, उड़द, अरहर, चना, हल्दी, सोंठ, जीरा, धनिया, सौंफ, अमचूर, सीसा, पारा, रांगा पीतल, चांदी, सोना, कपूर, गेहूँ ४ मास में या चौथे मासमें विशेष तेज होंगे ।

ता० १३ को शनिवारी अमावस भी तेजी कारक ही है । शुक्ला ५ को स्वाति विशाखा नक्षत्र होना श्रेष्ठ है । साथ ही बादल वर्षा भी हो तो सुभिक्ष होगा, ऐसा होनेकी आशा भी है कारण आज ही बुध, शुक्र योग भी बनेगा । ता० २० को बुध पूर्वमें अस्त वायुवेग घोर वर्षा कारक सिद्ध होगा, रुई, पाट, बारदाना तेज होंगे । ता० २४ सितम्बरको कन्यायां राहु मीने केतु १ मास पूर्वसे ही कर्क तुला, वृश्चिक, मीन राशि वालोंको हानि, कष्ट, अवनति स्थानान्तरमें भी पदच्युति इन्जैक्शन आपरेशन आदि की आवश्यकता पड़ने पर निष्फलता होगी, तथा वृष, सिंह धनुको लाभ सुख, स्थानान्तरमें पदवृद्धि आदि स्वतः दिखाई देगी । यहांसे बोलते नामसे सिंह राशि वाले ४॥ वर्ष तक, कन्या राशि वाले ३ वर्ष तक, तुला राशि वाले १॥ वर्ष तक मकानादिकी नींव नहीं लगवायें, मकान खरीदना बनवाना, भूमि खरीद कर खेती कराना, भट्टा लगाना आदि उपरोक्त अवधिमें महा-घातक घोर कष्टकारी सिद्ध होगा । अनुभव सिद्ध योग है शास्त्रोक्त नहीं । सूर्य बुध राहु योग ७ मार्च सन् ५७ से चली आने वाली तेजी एक लम्बे समयके लिये विदा हो जावेगी । रुई, पाट, बारदाना, कच्ची ऊन, रस्सी मूंज, पतेल नारियलकी जटा कपड़ामें श्रेष्ठतम मंदीका सूत्र पात होगा । बादल वर्षासे उत्पात, नदी तालाब भरनेके अलावा कहीं २ जल ही जल दिखाई देगा । धान, चावल, चांदी, सोना शेयर्स सरसों तेलके बीज दाल अन्न कठोल गुड़, खांड आदिमें दर्शनीय मन्दा आवे तो कोई आश्चर्य नहीं । भाद्रपद पूर्णिमाको पू० भा० व उ० भा० नक्षत्र श्रेष्ठ बादल हों तो विशेष श्रेष्ठ, निर्मली पूर्णिमासे आश्विन में तेजी अवश्य ही आवेगी ।

आश्विन मास अक्तूबर १९५८

२८ सितम्बरको सूर्य बुध शुक्र राहु योग शुक्रके कन्या राशिमें आनेसे बना अब यहां इनसे त्रिरेकादश योग भी शनिसे बन जाता है यह योग तेजी कारक है अतः भाद्रपद की पूर्णिमाको बादलोंका शकुन अवश्य ही देखना उचित होगा । प्रति वर्ष आश्विन मासके कृष्ण पक्षमें वस्तु मात्र पर ही भयानक तेजी मंदी होती है । आश्विन कृष्णा ५ गुरु शुक्रवारी रोहिणी नक्षत्र युता ३ मासमें गुड़में आगे विशेष

तेजी प्रत्यक्ष दिखावेगी। १० अक्तूबरको सायं ५ बजे वक्री भौम जल प्रलयके साथ-साथ व्यापारिक प्रलयका दृश्य आगे सामने दृष्टि गोचर होगा। ता० ११ को सूर्य शुक्र चन्द्रयोग पुनः बना फल पहले ही श्लोक सहित लिखा जा चुका है। आश्विनी अमावस रविवारी अशुभ फल अवश्य ही दिखा-वेगी, सचेत ! ता० १३ को तुलामें बुध गुरु चन्द्रयोग जल प्रलयकारी घोर वर्षा कारक सिद्ध होगा। ता० १८ को ता० १० से चली लायन परिवर्तित भी हो सकेगी। आज ही शुक्र देव पूर्व दिशामें लोप होंगे इस कारण घोर वर्षासे त्राहि २ मचेगी। शुक्रास्तकालमें अर्थात् ८ दिसम्बर पर्यन्त कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिये। स्त्रियोंको चूड़ी तक पहननी वर्जित है। भोग विलास करने पर यदि गर्भ रह जावे तो सन्तान कुरूप कुलनाशक जी जलाने वाली होगी। ता० २० को गुरु अस्त होगा। फल शुक्रके समान ही होगा। ता० २१ को शुक्ला ६ मंगलवारी उड़द, मूंग वायदामें आगे श्रेष्ठ तेजी लावेगी, शास्त्रोक्त एवं बहुत वार परीक्षित योग है। ता० २२ दशहराको सूर्य बुध शुक्र गुरु योग बना इसको आचार्यों ने दुर्भिक्ष कारक, और सुभिक्ष कारक अपने-अपने मतानुसार लिखा है वह यों समझियेगा— अवर्षणसे तेजी, वर्षा हो तो मन्दा, घोर वर्षा हो तो उत्पत्ति नाश हो जानेके कारण तेजी आती है। यहां घोर वर्षा योग प्रबल हैं। ता० २६ को वर्षाका अन्त होनेका प्रसङ्ग बनेगा, कारण बुध देव पश्चिममें उदय हो जावेंगे। आगे दिवाली को स्वाति नक्षत्र तथा गोवर्धन पूजा विशाखामें होगी इसके लिए घाघजीने कहा है—

स्वाति में दीवा बलै, विशाखा खेलै गाय।
घना गयन्दा रण चढ़ै, उपजी साख नसाय॥

अर्थात् जब स्वाति नक्षत्रमें द्वीपमलिका हो तथा विशाखा नक्षत्र में गोवर्धन पूजा हो तो बहुत से हाथी राजाओं द्वारा युद्धके लिए चढ़ै यानि युद्धकी भेरी बजे तथा उत्पन्न हुई फसल नष्ट हो जावे। यह योग सम्वत् २०००। २००२।२००४।२००७।२००८।२०१०।-२०१२।२०१३ में घोर तेजी प्रत्यक्ष दिखा चुका है। बहुत बार वर्षाके उत्पातसे ही सर्वनाश होकर तेजी आई। सम्वत् २०१२।२०१३ की वर्षा तो सभीको याद होगी। सम्वत् २०१३ में जल प्रलयके साथ साथ मिश्र पर युद्ध की भेरी बजी थी। विशेषको तो सर्वज्ञ ही जाने अतः लाभ हानिका उत्तर दायित्व अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी स्थिति और अपनी शक्तिको तौलकर ही कार्य करें।

नोट—१६ सितम्बरसे २४ अक्तूबर तक भयानक वर्षा जल प्रलयका नग्न दृश्य दिखाती हुई सर्वनाश करा देगी। धान गन्नाकी खेती उत्तम होनेसे मन्दीका सूत्रपात सन् ५६ में होगा। साथ ही ज्वार बाजरा मोठ रमास मूंगकी फसल प्रायः अनेक स्थानोंमें नष्ट हो जावेगी। मात्र मक्काकी उपज अवश्य ही श्रेष्ठ हो सकेगी। तब गेहूं इस वर्षमें तेजीके नये भाव ही प्रस्तुत करेगा।

——

वायदा बाजार भविष्य

[ले०—श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिषाचार्य, लुधियाना]

दिनांक २ जुलाई से २७ अक्तूबर १८५८ तक

ग्रह स्थिति :—

इन चार मासोंकी अवधिमें ग्रहोंकी स्थिति इतनी महत्त्व पूर्ण है कि इसे जितनी भी विशेषता दी जावे वह कम ही है। बृहस्पति जो वक्र गतिसे १८ मईको कन्या में प्रवेश हुआ वह १६ जूनको मार्गी होकर २१ जुलाईको तुला राशिमें प्रवेश करेगा और अपनी गतिको शीघ्री अति शीघ्री करता ही जावेगा और इस अवधिमें अपनी गतिको कम नहीं करेगा (इसके वृश्चिक राशिमें प्रवेशका पूर्ण फल 'ज्योतिष्मती' के आगामी शरदङ्कमें दिया जावेगा) १४ जुलाईको नैपच्यून मार्गी होगा, २४ अगस्तको प्रातः ही शनि भी मार्गी होगा, १० अगस्तसे २ सितम्बर तक बुध वक्री रहेगा, ३ सितम्बरसे ६ अक्तूबर तक कोई भी ग्रह वक्री नहीं होगा, १० अक्तूबरको मंगल वक्री होगा। ध्यान रहे कि इस वर्षमें अधिकसे अधिक ग्रह वक्र गतिमें हैं और जिस समय मंगल वक्री होगा अन्य कोई भी ग्रह वक्री नहीं, यह वर्षके राजा शुक्रके घर से ही वक्र गति प्राप्त करके अपने घरमें लौट आता है और इस समय बुध अस्त भी है। १८ अक्तूबरको शुक्र अस्त हो रहा है। १६ अगस्तसे ३१ अगस्त तक बुध पश्चिममें अस्त रहता है। २२ अक्तूबरको गुरु पश्चिममें अस्त होगा। शुक्र वर्षका राजा होते हुए और बृहस्पति वर्षमें कोई अधिकार प्राप्त किये बिना ही युद्धकी तय्यारी करेंगे, और दोनों अस्त होने पर भी इसी मार्ग पर चल कर बृहस्पति शुक्रके घर पर आक्रमण करेगा, जिसका परिणाम भी 'ज्योतिष्मती' के आगामी अङ्कमें दिया जावेगा।

आकाश लक्षण

मार्केट पर ऋतु का प्रभाव इतना ही है जितना दीप की बत्तीके लिये तेलका, यही इसकी मूल शिला है। इस अवधिमें ऋतु प्रतिकूल ही रहेगी। इस वर्ष चौमासेमें वर्षा पहले कम होगी और कुछ क्षेत्रोंमें अति अधिक होगी, कहीं अकालकी सी स्थिति होगी और कहीं बाढ़से हानि होगी, भाद्रपद मासमें वर्षा अच्छी होगी। असौजमें वर्षा अति अधिक होगी। वायु ऐसी चलेगी जिससे छूतके रोग चेचक, हैजा, महामारी आदिका प्रकोप रहेगा। वर्षाकी स्थिति स्पष्ट शब्दोंमें यह है :—

"समुद्रमें मेह बरसता रहा, बीकानेर विचारा तरसता रहा"

मार्केट पर प्रभाव

जैसा कि 'ज्योतिष्मती' के वसन्ताङ्कमें कहा गया था कि इस वर्ष बहुत सी वस्तुओंके ऊंचे भाव बननेकी आशा है जो आगामी कई वर्ष तक इतने ऊंचे भाव मिलते दिखाई नहीं देते। सरसों, गुड़, रुई, धान, तांबा, चना, जौ, बिनौले, जिस्त, गेहूँ, चीनी, चांदी, मसूर, ज्वार, बाजरा, गवारामें अच्छी तेजी होगी और इन वस्तुओंके स्टाकसे अच्छा लाभ होगा। लौंग, जावित्री, जायफल, केसर, चन्दन आदि वस्तुओंमें पहले मन्दे का प्रभाव रहकर फिर तेजी आवेगी। दालचीनीके भावमें अकस्मात् ही ऐसी तेजी आवेगी जिसका स्वप्नमें भी ध्यान नहीं होगा, परन्तु अभी इसका स्टाक करनेसे हानिका भय है, अभी एक बार इसमें मन्देकी प्रतिक्रिया संभव है। स्टाक करने वाले भाईयोंको पूर्ण सावधानीकी आवश्यकता है।

वायदा बाजार

इस अवधिमें वायदा बाजारमें भाव आशासे अधिक चलेंगे, 'ज्योतिष्मती' के ग्राहकोंके आग्रह पर ऊंचे और नीचेके भाव दे रहा हूं परन्तु यह आवश्यक नहीं कि यह टूट न सकें इस लिये हानि लाभका ध्यान रखें। चांदी ऊंचें में १९९) रु० और नीचेमें १७६) रु०, सरसों ऊंचेंमें

ज्योतिषीकी दृष्टिमें चतुर्मासिक तेजीमंदी

[श्री पं० ओंकारप्रसाद ज्योतिभूषण हापुड़]

प्र. श्रावण कृ. १ से आश्विन शु० १५ ता० २ जुलाईसे २७ अक्तूबर १६५८ तक

ता० २ जौलाईसे ता० २३ अगस्त तक भगवान् भास्करसे बुध ग्रहका रथ आगे रहनेसे सुकालका सूचक रहेगा। इस समयमें गुड़ रस पदार्थों और चांदी सोनेमें मंदेकी प्रतिक्रिया बनी रहेगी, परन्तु इसके विपरीत चावल चना, तिलहन, तेल, अरंडा, सींगदाना, जूट, पाट, बारदाना में तेजीकी चाल रहेगी, कुछ जिन्सोंके भाव स्थिर पड़े रहेंगे, गवर्नमेंट शेयर सिक्यूरिटी मैटीरियल पदार्थोंमें तेजी बढ़ेगी और बुधसे सम्बन्धित वस्तुओंमें जब बुध ग्रह ता० ६ अगस्तको वक्री होगा तब और जब १२ अगस्तको अस्त होगा तब जोरदार मंदीका चार दिवसीय चांस सम्पन्न होगा।

ता० २३ अगस्तसे ५ अक्तूबर तक सुपीरियर लाइन समाप्त होकर यहां बुध सूर्यसे पीछे रहनेके फलस्वरूप इन्फीरियर लाइनका असर तेजीकारक खाद्यान्नों तथा तिलहनमें तथा शेयरमें जोरदार होगा, पर गुड़, चीनी, खंडसारीमें यहां

---

३६) रु० नीचेमें २४.३१ रु० गुड़ ऊंचेमें १८) रु० नीचेमें ११), मूंग ऊंचेमें ३६) रु० नीचे १८) रु०, तेल मूंगफली ऊंचेमें ७२) रु० नीचेमें ५१) रु०, इसी प्रकार दूसरी वस्तुओंके भाव भी जानें।

लम्बी लाईन वालोंके लिये यह समय वरदान सिद्ध हो सकता है, इस अवधिमें लम्बी लाईन सीधी चलेंगी और प्रतिक्रिया कम होगी, जुलाईके प्रथम सप्ताहसे जो लाईन बने वह १८ जुलाई तक चालू रहेगी, यह मन्देकी लाइन बनेगी, इसके पश्चात् ८ अगस्त तक भाव दोनों ओर चलकर दोतरफा लाईन रहकर फिर तेजी चलेगी जो १६ अगस्त तक चलेगी। २० अगस्तसे ३ सितम्बर तक मन्देकी लाईन रहेगी, ३ सितम्बरसे तेजीकी लाईन चलेगी। इस बीचमें प्रतिक्रियाके दिन कम होने पर भी अकस्मात् ही भाव काफी चलेंगे और तेजीमें भाव धड़ाम से नीचे और मन्देमें अकस्मात् ही काफी तेजी होगी, इससे पूर्ण सावधान रहें।

—

प्रथम मंदीका असर होगा, क्योंकि यहां २३ अगस्तको शनि मार्गी फिर ३ सितम्बरको बुध ग्रह मार्गी मंदी कारक बने रहेंगे। परन्तु जब सायन ज्योतिष पद्धतिके अनुसार कन्यामें ६ से ११ सितम्बरमें बृहस्पति, शुक्र, बुध, तीन ग्रह आजायेंगे तब और जबकि २१ सितम्बरको बुध ग्रह अस्त हो जायेगा तब तेजीका बोल बाला रहेगा। यहां १४ दिवसीय चांस तेजीका हर वस्तुमें जोरदार सम्पन्न होगा, जहां कि मार्केटमें तहलका मचेगा बाकी तारीखोंमें ऐसे प्रशंसनीय चांस सम्पन्न न होंगे।

५ अक्तूबरसे २७ अक्तूबर असौज शुदि १५ तक सुपीरियर लाइन मंदेकी सूचक ज्योतिष शास्त्रसे सम्पन्न होगी पर यहां तमाम लाइनमें मंदी आना अनिवार्य नहीं होगा, क्योंकि ता० १० अक्तूबर पर भौम वक्री फिर १७ अक्तूबर पर तुलाकी संक्रांति अन्तमें ता० २५ अक्तूबर पश्चिमोदय बुध चांदी, सोना शेयर सिक्यूरिटी गुड़, तिलहन, अनाज, दाल, किराना, मेवे, ऊन, रुई, सूत, बारदानामें क्रमशः अच्छी तेजीके योग सम्पन्न हो जायेंगे इसलिये इस कालचक्रमें हर मंदीके झटके तेजी वालोंको चांस देंगे। पूर्ण विवरण महीने वार नीचे पढ़िये।

प्रथम श्रावण संवत् २०१५ की तेजी मंदी

यह मास २ जुलाईको आरम्भ होगा और ता० ३० जौलाईको समाप्त होगा। इसमें ५ बुधवार चांदी, सोना, रुई और बारदाना पाट हैशियनको मंदा और घी, गुड़, सरसों, खांड, अरंडा, रस पदार्थ मंदे होकर तेज चलेंगे। इस मासमें नैप्चून मार्गी सूर्यसे बुध सुपीरियरसे मंदी चक्र चलेगा और उड़द, मूंग मजीठ और गेहूँ, चना, जौ मंदे होंगे। यहां वृष्टि ५-६-१६ से १८ तथा २० से २२ में होगी। प्र० श्रावण वदि प्रतिपदा ता० २ जौलाईसे ३ जौलाई बदि द्वितीया तक चांदी, सोना, रुई, अरंडा, सींगदाना, तौरिया, आयरन, सूत, सरसों तथा बारदाना, घी तेजी पर। ३ जौलाई बदि २ के बाद ता० ५ बदि ४ तक जो वस्तु तेज रहे उसे बेचो मंदी रहे उसे खरीदो, यहां से ता० ८ तक

गुड़की लाइन मटर, चना, ग्वारमें ≡) से ।-)॥ मनकी लाइन चलेगी, तेजीमें १=) से २) की लाइन चलेगी। ता० ८ जौलाई प्र० श्रावण वदी सप्तमीको खरीदो, तेजी लगाओ मंदियां खाओ, यहां कपड़ा, गुड़, शेयर, तेल, अनाजों तथा धातुओंमें तेजी आयेगी। ता० १० जौलाई श्रावण बदि ६ गुरुवारको अश्लेषायां बुध होनेसे रुई, बारदाना और घी गुड़ तथा जीरे और लौंगमें तेजी होकर मंदी चांदी सोनेमें होगी, बाजारोंमें दुतर्फा घटा बढ़ी होगी, पर सारांश मंदेमें जायेगा; अतः ता० १० से १४ जौलाई बेचना अगर शनैः २ मंदी ता० २१ मिति श्रावण शुदि ५ तक आयेगी, तदुपरि श्रावण बदि५ के बाद ता० २१ जौलाई के नीचे भावोंमें एक दम तेजीकी चाल मटर, चना, गेहूं, घी, सूत, ग्वार, गुड़, चांदी, सरसों तथा इंडस्ट्रियल शेयरोंमें चमकने लगेगी, अगर १६ से २१ जौलाई तक मंदी रहे तो ये चांस सही वरना चांस उल्टी मंदीमें हो जायेगा। ता० २१ जौलाई श्रावण शुदि ५ से इस उपरोक्त ग्रहकी चाल सीधी एक तरफा लाइन चलती रहेगी। रियक्शन बराबर अन्य ग्रहकी चालसे इसमें आयेंगे। अतः कहीं भी घबराहटसे सौदा न काटना, हर भाव में लाइनका व्यापारी विजेता रहेगा, ये यहां खास चांस है। बाकी पूर्ण विवरण मासिक रिपोर्टमें पढ़ना। ता० २५ जौलाई तक ये सीधा चांस हैं। जुलाईकी ता० २६ को फसलकी वस्तु तथा गुड़, मटर, ग्वार, तोरिया, सूत, रुई, चांदी तथा शेयरोंमें पूर्व तेजी, दो दिन बाद मंदीका आगमन होने लगेगा, तथा दुतर्फा घटा-बढ़ी ज्यादा होगी। तेजी तथा स्थिर भावोंमें मटर, गुड़, ग्वार, सरसों, शेयर चांदी ता० २६ के बाद मंदी होगी, गुड़, अरंडी, बारदाना मोटा अनाज लाहा ज्यादा मंदीमें जायेंगे। ता० २६ जुलाई श्रावण शुदी ११ को अगर आजसे पूर्व कुछ स्टडी या तेजी भाव रहे तो गुड़, मटर, ग्वार, तेल, चना, ज्वार, मक्का बेचना साढ़े चार आने या ।।)॥ मंदी। गुड़में तो एक दम दो चार दिनमें आयेगी, मटर, ग्वार सामान्य रहेंगे और चांदीकी चाल आजसे ३० तक एक तरफा तेजी की चलेगी, पूर्व मंदा रहे तो गुड़ मन्दीमें खरीदना लेकिन फिर २८ जुलाई श्रावण शुदि १३ को ऊंचे भावमें बेचना, पूनों तक लाभ उठाना, अन्य छोटे २ रियक्शन तेजीके आयेंगे।

नोट—हम जहां जिस मितीसे तेज लिखते हैं, अगर वहांसे मंदा चलने लगे तो फौरन सौदा थोड़े नुकसानसे डबल बेच दें यानि समझ लें कि यह ग्रह मंदा करेगा, इसी प्रकार मंदीके पीरियडमें जानें, ऐसा करनेसे नुकसान न होगा लाभ ही होगा, कभी भी बाजारसे बहस न करिये।

धारणा—जुलाई १६५८ ई० में चांदीमें ४।) से ११) या विशेष चालमें १७ टके और मटरमें ।।।≡) से ।।।≡)॥। लाहामें १≡) से १॥=) अरंडा तेलमें ३) गुड़में १।-)॥ से ।।।=)॥ मन तक बाजारमें घटा बढ़ी होगी, इतनी ऊंची या नीची तेजी या मंदी आने पर ले या बेचकर फंसना नहीं, क्योंकि वायदा मार्केट इतना चल जाने पर लौट अवश्य लेगा, धारणा मन्दामें एक दम तेजीकी है।

वार तिथि प्रथम श्रावण कृष्ण

बुधवार १—पुष्ये बुध मंदा कारक, गुड़, चना, मटर, तेल, चांदी। इतवार—५ पुनर्वसु रविः तेजी कारक और आज ही वर्षा योग। शुक्रबार १०—मेषे मंगल ३३॥ घड़ी पर प्रथम मंदी बाद तेजी कारक लाल वस्तु सोना, गुड़, पसेरा आदि। बुधवार ३०—कर्के सूर्यका असर मंदी कारक ही ३८ घड़ी शामसे पड़ेगा।

वार तिथि—प्र० श्रावण शुक्ला

शुक्रवार २—चांद दर्शन तेजी कारक चांदी, गुड़, बारदानामें। सोमवार ५—तुला गुरु तेजी कारक चांदी गुड़में कलकी लाइन ५ दिन एक तर्फा चलेगी, गुड़में नोट करें। शनिवार ११—ब्रह्म योग क्षयः चांदी तेजी गुड़ मंदासा सामान्य भाव रहेंगे।

द्वितीय श्रावण

ता० ३१ जुलाईको प्रारम्भ होगा। ता० २६ अगस्तको समाप्त होगा, इस महीनेमें सूर्य बुधसे आगे ता० २३ अगस्त श्रावण शुदि ६ तक रहेगा, सुपीरियर लाईन रहनेसे अनाजों तथा धातु पदार्थोंमें सुभिक्ष कालकी द्योतक रहनेसे खरीदार लाभ भविष्यमें उठायेंगे। ता० ३१ जुलाईसे ता० २ अगस्त तक एक तरफा लाईन गुड़, मटर, चांदी, तिलहन, रुई, अंडी तेलमें चलती रहेगी। यहां पारा, अभ्रक, बिनौला तेज होगा। ता० २ अगस्त द्वितीय श्रावण बदि ३ पर सूर्य हर्षलका पैरियल होनेसे पहिले बाजार भड़केगा बाद

फिर ऊंचे भावमें पड़ जायगा। ता० ७ अगस्तको कन्जक्शन होने बाद फिर धीरे २ मंदी गुड़ और अनाजों तथा मटर अरहर, तेल, तिलहन, अंडीमें आयेगी पर यहां शेयर बारदाना और पंसारेमें तेजी होगी। ता० ६ अगस्त मिति श्रावण वदी ६ पर बुध वक्री होने से ता० ७ से ६ मंदा हर वस्तु में रहकर ६ के बादमें तेजी धीरे २ चलेगी। गुड़ मीठा तथा चांदी सोना व अनाजोंके भाव तेज होंगे। (विपरीतमें विपरीत असर जानें) यहांकी चालू लाईन ता० १६ तक सीधी चलेगी। ता० १६ को चांददर्शन मंदी कारक हैं, गुड़, अरहर, मटर, पाट बारदाना अंडी अलसी बेचना करें और चांदी यहां जरूर बेचें ता० १७ से २३ अगस्त श्रावण शुदि ६ तक अच्छी मंदीके योग बनेंगे। गुड़, मटर, ग्वार, तोरिया, तेलसे ज्यादा मंदी चांदीमें आयेगी। गुड़में दोनों ओरके भाव मिलते रहेंगे। पर चना, गेहूँ और सूत यहां तेजी पर जायेगा। ता० २४ अगस्त द्वितीय श्रावण शुदि १० पर शनि मार्गी होने के साथ ही अश्लेषायां भृगु होने से मासके अन्तमें ता० २६ अगस्त तक धीरे २ तेजी चांदी तथा अनाजोंमें आयेगी। तेल शेयरमें मंदी होकर तेजी आखिरमें चमकेगी। घी, तेल, बाजरा, मक्का, उड़द अन्य वस्तु शनिके असरसे मन्दी तथा खांड मन्दी होगी। सन, जूट, तेज होगा। वर्षा योग—ता० १ अगस्तसे ता० ४, ६ से १२ और १७ से १६ में मध्यप्रदेश, बर्दवान, बहराईच, राजपूताना, बंगाल, उड़ीसामें वर्षा होगी।

वार तिथि द्वितीय श्रावण कृष्णा तेजी मंदी

शनिवार ३—भरण्यां भौम १० घड़ी पर धान्य महर्घ मीठेमें मंदा कारक, आज ही पुनर्वसु भृगु दिन १२ में धान्यों में तेजी कारक रुईमें चांदीमें तेजी कारक और यत्र तत्र वर्षा होगी। आज १ साथ दो ग्रह राशि परिवर्तन कर रहे हैं। इसलिए ३ बजेकी चालू लाईन पर व्यापार करें। मंगलवार ६—पूर्वा फाल्गुनी पर बुध २१ घड़ी पर अन्नमें सस्ता, मीठेमें तेजी करके मंदा करेगा। शनिवार ६—बुध वक्री पहिले पहल मंदी रहे तो निश्चय ही सम्पूर्ण धान्य रसादि वस्तुमें तांबा, पीतल धातुएं तेज होंगी। इतवार १०—कर्के भृगु २६ घड़ी पर वायु तेज चले यहां मंदीमें अनाज संग्रह करनेसे छःमाहके मध्य आगे लाभ होगा। तिलहन, रुई, सूत, चांदी, गुड़ तेज, वर्षाकी खेंच होंगी बुधवार १३—पुष्ये भृगु १३ घड़ी पर वृष्टि योग दिन १२ में लाख, चपड़ा, गुड़, कपूर, पारा, हींग मंदे होंगे। शुक्रवारी अमावस ३०—वक्री मघायां बुधः सूत, कपड़ा चांदी देवदारू तेज।

द्वि० श्रावण शुदि

शनिवार १ चन्द्र दर्शन मंदा कारक, आज ही पश्चिमास्त बुध तेजी कारक। इतवार ३—तिथि क्षय तेजी कारक, सिंह सक्रान्तिकी ७ घड़ी मंदी कारक। इतवार १०—मार्गी शनि मंदी कारक अश्लेषायां भृगुः तेजी कारक बुध १३—कृतिकायां भौम २४ घड़ी पर दिन में रुई, सूत, तिल, चावल, अरंडा तेजी कारक। धारणा—अगस्त १६५८ में गुड़में विशेष रूपसे ॥।=) से १)॥। तककी घड़ बढ़ होगी, लाईनका जोर ही ज्यादा रहेगा पर ये धारणा है कि इतनी तेजी मंदी आने पर पलटका व्यापार भी करते रहें। क्योंकि घटाबढ़ी होगी, भाव दोनों ओर के मिलते रहेंगे, तेजी मंदी फलनेके ३ या ४ चांस आयेंगे। रोजाना तेजी मंदी न फलेगी। मंदीका निचौड़ इस मासमें होगा नीचे भावमें न बेचना, चना, ग्वार मटरमें ॥≡) ॥।=) तक लाईन चलेगी लाहा, अरंडामें १।=) से १॥) तक चांदीमें २॥) रु० या ६॥) रु० की रुईमें ७) या १६ टटे लाईन अधिक चालमें निकलेगी।

भाद्रपद महीनेकी तेजी मंदी

भाद्रपद महीना ता० ३० अगस्तको प्रारम्भ होगा, ता० २७ सितम्बरको समाप्त होगा इस महीनेमें इन्फीरियर लाईन रहनेसे दुर्भिक्षकी द्योतक है। इसलिए गेहूं, चना, मक्की, बाजरा, मेथी, मटर, ग्वारमें भर मंदीमें खरीदार लाभ उठायेंगे। इस मासमें पांच शनिश्चर हैं इसलिए तिल, तैल, ऊन रेशमी, वस्त्र, अंडी, सींगदाना इंडस्ट्रियल शेयर, घी वैजिटेबिल तेज, धीरे धीरे होगा। ता० ३० अगस्त भाद्रपद पड़वा पर चन्द्र शनिका स्क्वायर योग बनायेगा इसलिए चांदी, सोना, तेल, गुड़, चना, मटर, गेहूं, ग्वार, घंटी खुलनेसे तेज होंगे, २॥ बजे मध्यान्ह पर ही खरीदें, माल पर नफा मिलने पर फरोख्त करना, ता० ३१ की रात्रिमें पूर्वोदयं बुध होनेसे ता० १ व २ सितम्बरमें चांदी व सोना

व गुड़ मटर चना तिलहनमें मंदी, शेयरोंमें तेजी आयेगी। ता० २ सितम्बर भादों बदी ४ मंगला चौथके दिन १ बज कर ३० मि० पर मध्यान्हमें बुध मार्ग गतिसे चलेगा इस लिए ता० २ सि० १ बजकर ३-४ मि० पर जो वस्तु तेज रहे उसे बेचना मन्दी पहिले ही रही तो उन्हें खरीदना। हमारा विचार है कि इस ग्रह चाल पर गुड़ पर मन्दी, अनाज तेलमें तेजीका है। पर चांदीमें सामान्य भाव रहेंगे। ता० ७ सितम्बरको सायन नियमसे वृश्चिक राशिमें गुरु आनेसे लाइन परिवर्तन होने लगेगी। ता० ८ सि० से हल्दी मेथी सोना-चांदी गुड़ तेल तिलहनमें मन्दी होगी इसी प्रकार विपरीतमें विपरीत असर जानें। ये खास चांस है ध्यान रखें। ता० १० व ११ पर खास चांस। यहां शुक्र सायन नियमसे कन्याराशिमें आयेंगे, यहां फुल जनरल वस्तुओंमें कायापलट होगी ये रिमार्क ध्यान रखें क्योंकि यहां शुक्र तेजी कारक बुध मन्दीकारक है इसलिए ता० १२ को फैसला होकर ही लाइन पर सभी वस्तुओंके मार्केट हो जायेंगे। ता० १ सितम्बरको निरयन कन्या संक्रांति १५ मुहूर्ती बुधवारी मन्दीकारक पर स्वाती नक्षत्रमें होनेसे तेजीकारक है, अतः संक्रान्तिकी अवधिमें गल्ला बाजार दोतर्फा घटबढ़में चलेगा। नमक घी लाल पदार्थोंमें तथा गेहूँ मसूर लालमिर्च शक्कर तेल मजीठ रुईमें तेजी आयेगी, पर मोटे अनाज व गुड़की मोटी तेजीमें विक्रय करें। ता० १६ को पूर्वास्तं बुध होनेसे पहले मन्दी आकर बादमें २० सितम्बरके ५-४ दिनमें जोरदार तेजी आयेंगी। ता० २० सितम्बरसे २४ सितम्बर भादों शुदि १२ तक घटाबढ़ीके साथ तेजी चलेगी २४ से २७ में भादों शुदि १५ तक तेजी में मन्दी चांदी सोना तेल गुड़ अनाजमें आयेगी।

आसौज सं० २०१५ की तेजी-मन्दी

इस मासमें पांच इतवार हैं और कृष्ण पक्षकी १४ तिथि घटी है। देवगुरु और दैत्यगुरु शुक्र अस्त होंगे अतः इस मासमें मन्दीका निचोड़ अवश्य ही होगा, किसी वस्तुमें रुपयेकी धेली रहकर तेजी आयेगी। ता० २८ सि० को यह मास आरम्भ होगा और ता० २७ अक्तूबरको समाप्त होगा। इस मासके आरम्भमें आसौज बदी ७ ता० ५ अक्तूबरको बुध इनफीरियर होकर सुपीरियर चलेगा। अतः तमाम जनरल वस्तुओंके भाव नीचे उतरेंगे। गुड़ मटर ग्वार चांदी-शेयर लोहा पदार्थ हैशियन जूट पाट लाख चमड़ा मन्दा रहेगा, अर्थात् छोटे-छोटे रियक्शन आयेंगे। चांदी वदी १ पर लेकर ३ दिनमें मोटा लाभ उठाना।

बारदाना जूट पाट तिलहनकी तेजीका उत्तम चांस

आसौज सुदी द्वितीयाको चन्द्रदर्शन तेजीकारक शुदि ५ ता० १७ अक्तूबरसे मन्दी गुड़ चांदी सोना तोरिया मूंगफली में, यहां पर बारदाना पंसारट तेज होगा, तदुपरान्त ता० १६ अक्तूबरसे ता० २३ अक्तूबर शुदि ११ तक गुड़ ग्वार तिलहन गेहूँ मटर तोरिया सरसों अभ्रक जूट पाट रुई चांदी तेज होगी। ता० २३ अक्तूबरके ११ बजेसे २७ अक्तूबर तक एकतरफा लाईन गुड़में ।-) से ।=) मन, चना मटर अरहरमें =)॥ से ।) यहांसे पहले तेजी रहे तो बेचना मन्दी रहे तो खरीदना। धारणा—१६५८ अक्तूबर में गुड़ ॥=) से १।=) तक चलेगा, मटरमें ॥।≡)॥ से ॥=)॥ तथा सरसोंमें डेढ़ या ढाईकी लाइन चलेगी, चांदी में ३) से ४) टकेकी लाईन चलेगी। लम्बी तेजी मन्दीके ख्यालमें न रहना तैयारी ऊँची सट्टा वायदा नीचा इस माहमें रहेगा गुड़में ये ध्यान रखें।

—

❀ अनुभूत व्यापार विमर्श ❀

[श्री पं० गिरिधारीलालजी शर्मा दैवज्ञ भूषण रामगढ़, जयपुर]

प्रथम श्रावण मासका सारांश

ता० २ जुलाईसे ५ तक शेयरोंके शिवाय प्रायः सभी वस्तु मंदी रहेगी, ता० २ को एकबार तेजी होगी वहां बेचो, ता० ३, ४ को भारी मंदी, ता० ५ से १० तक तेजी, रस पदार्थोंमें अच्छी तेजी, ता० ७ को ४ बजे मंदी होगी, उस मंदीमें खरीदो, ता० ८-९-१० में अच्छी तेजी होगी, ता० ११ से १६ तक तेजीका ध्यान है। तांबा, लाल वस्त्र, गेहूँ, तीसी, सोनामें अच्छी तेजी होगी। ता० ११ को घट-बढ़से तेजी। ता० १२-१४ को अच्छी तेजी होगी। ता० १७ जुलाईसे २४ तक एक ही ध्यान रखो घटे भाव खरीदना अच्छा है, यहां पर हैसियन शेयर मंदा होगा और वस्तु तेज होगी। ता० १८-१९-२१-२४ अचूक तेजी। ता० २० से वर्षा कम हवाका वेग ज्यादा रहेगा। सौंठ, मिर्च, हल्दी, इलायची, लाख, सुवर्ण, गुग्गल, पारा, सुपारी, नमक अवश्य तेज।

रुईका विशेष चांस

ता० २-३ जुलाईसे ६ तक अच्छी मंदी होगी। ता० ८ से १३-१४ तक तेजी, ता० ८-९ में एक दिन अवश्य तेजी, ता० १० को मंदी रहे तो १३ तक मंदी अगर तेजी रहे तो तेजी, ता० १९ से २४ तक अचूक तेजी।

चांदी सोना

ता० ५ जुलाईसे १६ तक तेजीका ध्यान रखो, ता० ७-८ में एक अवश्य तेजी। ता० ९-१० में एक अवश्य तेजी। ६-७ को तेजी होगी। १२ से १६ तक जरूर तेजी! ता० १४ से सोना अवश्य तेज, ता० २४ तक। ता० १९ से २४ तक अच्छी घट बढ़से तेजी ता० १९-२१-२३-२४ अवश्य तेजी।

पाट हैसियन बोरा

ता० ५ जुलाईसे ९ तक तेजी, ता० ५-७-९ को अवश्य तेजी। ता० १० से १३ तक साधारण, ता० १४-१५ तेजी, १६ से २० तक मंदी, ता० २१ से २५ तक घटबढ़ से तेजी, ता० २२-२३ में एक दिन मंदीका भी भय रहेगा। ता० २६-२८ को दो तरफा लगाना अच्छा है अच्छी घट-बढ़ होगी।

शेयर

शेयर—ता० २ जुलाईसे ९ तक अचूक तेज, ता० २-४-५-७-९ को तेजी रहेगी। ता० १० से १४ तक साधारण, १५-१६ तेजी, ता० १८ से २४ तक तेजी। ता० १८ को तेजी रहे तो तेजी समझना अन्यथा विश्वास मत करो ता० १९-२१-२३ अवश्य तेजी, ता० २७-२८-३० को अच्छी तेजी होगी।

गुड़ खांड

गुड़ खांड—ता० ५ जुलाईसे १५-१६ तक अवश्य तेजी होगी, ता० ७ से और १४ से बाजार भड़क जावेगा। ता० १७ से २१ तक तेजी, २२-२३ में मंदी, ता० २४-२५ को अच्छी घट बढ़ होगी। ता० २८-३० को रस पदार्थ मात्र तेज होंगे।

तीसी एरण्डा

२ जुलाई सन् ५८ से ता० ८ तक तीसी एरण्डा तेज जिसमें अरण्डा अवश्य तेज, ता० ७ से उपरोक्त वस्तुओंके तेलमें तेजी, ता० ५ से ८ तक एक तरफी तेजी होगी। ९ से १० दिन घट बढ़ रहेगी। २१ से फिर तेजी।

द्वितीय श्रावण कृष्ण पक्ष

सोना, चांदी, सरसों, पीतल, पारा, गुड़, खांड, मिश्री इन वस्तुओंमें मंदी करेगा। कृष्णा ५ से अलसी, सरसों, अरंडा, मूंगफली अच्छी तेज होगी। वैसे यह अधिक मास का पक्ष है। इसलिए प्रायः वस्तु और राज्य प्रजाका वातावरण ठण्डा पड़ा रहेगा।

द्वि० श्रावण शुक्लपक्ष

शुक्लपक्षमें शनिवार द्वितीयाका क्षय है। शनिका

मार्गी होना अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को पूर्ण खराब रखेगा, कृषक जिन्होंने चातककी तरह वर्षाकी रट लगा रखी थी उनको वर्षासे अवश्य शान्ति प्राप्त होगी और पक्ष अशान्ति सूचक है। वर्षा भी छिन्न-भिन्न ही होगी। क्योंकि तिथि २ का क्षय दुर्भिक्ष और उत्पात चाहते हैं। अरण्डा, अलसी, तिल, तैल, गुगल, पारा, पाट, हैसियनके सिवाय प्रायः सब वस्तु मन्दी रहेगी।

भाद्रपद मासका सारांश

ता० ३० अगस्तसे ६ सि. तक शेयरोंके बिना हरेक वस्तु तेज होगी। ता० ३० को और १ को अवश्य तेजी। ता० ३ को मन्दी होके तेजी होगी। ता० ३-५ में रूईके सिवाय हरेक वस्तु तेजी। ता० ६ को २-४ बजेसे तेजी, ता० ७ सितम्बरसे १३ तक अन्न, वस्त्र, केसर, चन्दन, कपूर और लाल वस्तु मात्र तेज होगी। सोना, रूई, तांवा अवश्य तेजी होगा। ता० ८ को तेजी होके मन्दा, ता० ९ को घटबढ़से मन्दी, ता० १३ को अद्भुत वर्षा व व्यापारमें अद्भुत घटना, ११-१२ घटबढ़। ता० १४ सितम्बरसे २० तक तेजी, ता० १८ को तेज रहे तो ता० २३-२४ और २७ को अवश्य वर्षा होगी।

चांदी-सोना

ता० ३० अगस्तसे ८ सितम्बर तक प्रायः तेजीका ध्यान रखो, सुवर्ण, तांबा अवश्य तेजी, ता० ६ से १३ तक घटबढ़ रहेगा। ता० ९ को मन्दी, १० को तेज, ११-१२ मन्दी, १३ तेजी, ता० १४ सितम्बरसे २० तक घटबढ़से मन्दी होगी। ता० १५ तेजी, १६ मन्दी, ता० १७ को नजराना लगाना अच्छा है। ता० १८ को तेजी रहे तो मंदी, ता० २७ तक रहेगी। ता० २३ से २७ तक मोटी घटबढ़ होगी।

पाट हैसियन

ता० ३० अगस्तसे ८ सितम्बर तक तेजीकी सम्भावना रहेगी, कोई खास ध्यान नहीं बैठता है, ता० ३०-३१ तेजी, ता० २-३ मन्दी, ता० ६-८ तेजी, ता० ९ मन्दी, ता० १०-१३ तेजी। ता० ११-१२ घटबढ़ या साधारण रहेगी। ता० १४ सितम्बरसे २० तक अवश्य तेजी।

शेयर

ता० ३० अगस्तसे ६ तक मन्दीकी सम्भावना रहेगी। ता० २ से ५ तक निश्चय मन्दी होगी। ता० ८ से १३ तक तेजी, बीच में ता० ९ और १२ को मन्दी, ता० १४ से २२ तक तेजी, ता० १५ को तेजी रहे तो पक्की तेजी समझो अन्यथा विश्वास मत करो, ता० २३ से २८ तक मन्दी। ता० ७ से १३ सितम्बर तक गुड़ अचूक तेज, ता० १४ सितम्बरसे २७ तक तेजीका ध्यान है। यहां गुड़में बड़ा फायदा होगा।

आश्विन मासका सारांश

रुई ता० २८ सितम्बरसे ४ अक्टूबर तक मंदीकी तरफ ही रहेगी। शुक्रका वक्र होना घट-बढ़ से मंदी करेगा। ता० २९-३० में एक अचूक मंदी, फीचर तेज खुलके मंदा २ या ६, ता० २ को अच्छी मंदी, ता० ६ को दोनों तरफ अच्छी घट-बढ़, ता० ६ अक्टूबर से १२ तक या १६ तक अच्छी तेजीकी संभावना है। ता० ९ की रात्रिसे अचूक तेजी, ता० १३ से १९ मंदीकी पूर्ण संभावना है। अगर यहां मंदी नहीं हुई तो ता० २० से २६ तक अवश्य मंदी या २५ को ही तेजी आ जायेगी। ता० १३-१६-१८-२०-२३ अवश्य मंदी।

चांदी सोना

ता० २८ सितम्बर से ३० तक तेजी, ता० १ अक्टूबर से ७ तक साधारण या मंदी, ता० ८ से १२ तक अवश्य तेजी। ता० ११ को नजराना लगाना अच्छा है दोनों होवेगी तेजी मंदी। ता० १३ से १९ तक सोना ताम्बा तेज, चांदी साधारण वा मंदी, ता० १८ से तांबामें अच्छी तेजी, ता० १३-१४ में अच्छी मंदी, ता० २० से २७ तक अचूक तेजी।

पाट हैसियन

ता० २८ सितम्बरसे ५ अक्टूबर तक मंदी, ता० ६ से १२ तक तेजी ऐसा साधारण ध्यान बैठता है। ता० ६ से १२ तक घट-बढ़ अच्छी होगी, घटे भाव खरीदो, ता० ६ ८-१०-११ अवश्य तेजी होगी। ता० १३ से २० तक मंदी या साधारण भाव पड़े रहेंगे। ता० २१ से २७ तक घट-बढ़

बहुत होगी, दैनिक कार्य करो। २ दिन तेजी २ दिन मंदी।

शेयर

ता० २८ सितम्बर से ४ तक तेजी, ता० ५ से ६ तक मंदी, ता० १० अक्टूबर से १५ तक तेजी, ता० १६-१३ अवश्य तेजी, ता० १४ से १६ तक एक दिन तेजी, एक दिन मंदी ऐसा रहेगा। ता० २० को एक वार मंदी होगी वहां खरीदो २७ तक तेजी होगी।

गुड़ खांड

ता० २८ सित बर से ४ तक साधारण रहेगी। ता० ६ से १२ तक अवश्य तेजी होगी। ता० १३ से १७ तक साधारण तेजी गुड़ साधारण, खांडमें तेजी, ता० २० से २७ तक अच्छी घट-बढ़ और तेजी।

अलसी सरसों एरंडा

ता० २८ सितम्बरसे ३ अक्टू. तक सामान्य मंदी ता० ४ से १२ तक तेजी, जिसमें ता० ४ से नहीं होगा तो ६ से अवश्य होगा। इन पदार्थोंका तैल अवश्य तेज, ता० ६ से गेहूं अलसी अचूक तेज, ता० १३ से १७ तक मंदा, ता० १८ से २७ तक अवश्य तेज। पहले नहीं होगा, तो ता० २३ या २४ से अवश्य होगा और १५ दिन तेज रहेगी।

वस्त्र और किराना

ता० २८ सितम्बरसे ६ अक्टू० तक साधारण। ता० ८ से लाल वस्त्र छींटमें अवश्य तेजी। मोती रत्न, काली मिरच, मसाला, गेहूं, चना, नारियल १० दिनसे अवश्य तेज होगा, ता० १७ से हरएक किराना तेजी पर रहेगा।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपंचांग'से]

जुलाई १९५८ ई०

ता० १ मंगलवार—श्रीगुरुपूर्णिमा व्यासपूजा।
४ शुक्रवार—श्रीगणेशचौथ व्रत चन्द्रोदय रा. ९।३३।
१२ शनिवार—कामिका एकादशी व्रत।
१४ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत।
१६ बुधवार—हरियाली अमा. कर्कसंक्रान्ति मु० ४५।
१७ गुरुवार—पुरुषोत्तम (अधिक) मास प्रारम्भ।
१८ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन मु० १५।
१९ शनिवार—मुहर्रम हिजरी सन् १३७८ प्रारम्भ।
२६ शनिवार—पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत।
२८ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत, ताजिया।
३० बुधवार—सत्यव्रत पूर्णिमा।

अगस्त १९५८ ई०

ता० १ गुरुवार—लोकमान्य श्री तिलक जयन्ती।
३ रविवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय ९।१३
११ सोमवार—कमला एकादशी व्रत।
१२ मंगलवार—भौम प्रदोष व्रत जैन पर्यूषण प्रारम्भ।
१४ गुरुवार—गुरुपुष्पयोग मध्यान्होत्तर १।९ पर्यन्त।
१५ शुक्रवार—अमावस पुरुषोत्तम (अधिक) मास समाप्ति, भारतीय स्वतन्त्रता दिवस।
१६ शनिवार—चन्द्रदर्शन मु० ३० नक्तव्रतारम्भ।
१७ रविवार—सिंह संक्रान्ति पुण्यकाल, मधुश्रवा ३।
१९ मंगलवार—नागपंचमी।
२१ गुरुवार—श्रीगो० तुलसीदास निर्वाणदिन।
२२ शुक्रवार—श्रीदुर्गाष्टमी मेला श्रीनयनादेवी चिन्त्यपूर्णी
२५ सोमवार—पुत्रदा एकादशीव्रत।
२६ मंगलवार—भौम प्रदोषव्रत।
२८ गुरुवार—सत्यव्रत (चन्द्रोदय व्यापिनी १५)।
२९ शुक्रवार—ऋषितर्पण रक्षाबन्धन (रक्खड़ी) श्रीअमरनाथ यात्रा (काश्मीर)।

सितम्बर १९५८ ई०

ता० १ सोमवार—कज्जली तीज श्रीगणेश चौथ बहुला ४ व्रत चन्द्रोदयय स्टे टा. रात्रौ ८।२४।

ता० ६ शनिवार—श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत चन्द्रोदय रात्रि स्टे. टा. ११।४६ ।
७ रविवार—गुग्गानवमी ।
६ मंगलवार—अजा ११ व्रत स्मा. जैन पर्यूषणपर्व ।
१० बुधवार—अजा ११ व्रत वैष्णवानां ।
११ गुरुवार—प्रदोषव्रत ।
१३ शनिवार—शनैश्चरी अमावस्या पिठोरी ३० सती पूजन कुशोत्पाटिनी अमा. ।
१५ सोमवार—चन्द्रदर्शन मु० ३० ।
१६ मंगलवार—हरितालिका ३ व्र. श्रीगणेश ४ पत्थर चौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध ।
१७ बुधवार—कन्या संक्रान्ति ऋषि ५ जैन संवत्सरी ।
२० शनिवार—श्रीमहर्षि दधीचि जयन्ती ।
२१ रविवार—श्रीचन्द्रनवमी (उदासीन सम्प्रदाय) ।
२३ मंगलवार—पद्मा एकादशीव्रत जलझूलनी ११, मेला श्रीचारभुजा गढबोर (मेवाड़ राजस्थान)
२४ बुधवार—श्रीवामनद्वादशी मेला अम्बाला पटियाला ।
२५ गुरुवार—प्रदोषव्रत ।
२६ शुक्रवार—श्री अनन्त चतुर्दशीव्रत ।
२७ शनिवार—सत्यव्रत पूर्णिमा, प्रौष्ठपदी श्राद्ध ।
२८ रविवार—महालय श्राद्ध (पितृपक्ष) आरम्भ ।

अक्टूबर १६५८ ई०

ता० १ बुधवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. रात्रि ८।१२ ।
२ गुरुवार श्रीमहात्मा गांधी जयन्ती पंचमीश्राद्ध ।
६ गुरुवार—इन्दिरा एकादशीव्रत एकादशी द्वादशी-श्राद्ध सन्यासी श्राद्ध ।
१० शुक्रवार—प्रदोषव्रत त्रयोदशीश्राद्ध ।
११ शनिवार—चतुर्दशीश्राद्ध शस्त्राग्निविषदिहतानां श्रा.
१२ रविवार—सर्वपितृ अमा. महालय श्राद्ध समाप्ति ।
१३ सोमवार—शारदनवरात्रारम्भ घटस्थापन मातामह श्राद्ध, गजच्छायापर्व ।
१४ मंगलवार—चन्द्रदर्शन मु० ४५ ।
१७ शुक्रवार—तुला संक्रान्ति पुण्यकाल मु० १५ श्रीसरस्वती आवाहन १०।२१ उप. ।
१८ शनिवार—श्रीसरस्वती पूजन जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ ।
१९ रविवार—श्रीसरस्वती बलिदान ।
२० सोमवार—श्रीदुर्गाष्टमी महाष्टमी श्रीसरस्वती विसर्जन, मेला श्रीज्वालामुखी व तारादेवी भद्रकाली जयन्ती ।
२१ मंगलवार—महा ९ विजया १० मेला दशहरा, ।
२३ गुरुवार—पाशांकुशा एकादशीव्रत ।
२४ शुक्रवार—प्रदोषव्रत ।
२७ सोमवार—सत्यव्रत शरद् पूर्णिमा कोजागरी १५ कार्तिक स्नानारम्भ ।

—

❀ दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र ❀

स्वतंन्त्र भारतके १२ वें वर्षका भविष्य

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

सं० २०१५ वि द्वि० श्रावण कृष्ण १४ गुरुवार ता० १४ अगस्त १९५८ ई० (राष्ट्रीय सौर मिति २३ श्रावण शाके १८८०) को रात्रि स्टेण्डर्ड टाइम ७।४५ (इष्ट घट्यादि ३४।३७ पर कुम्भ लग्नमें भारतको स्वतन्त्र हुए ग्यारह वर्ष पूर्ण होकर बारहवां वर्ष प्रवेश होगा। यद्यपि स्वतन्त्रता समारोहका उत्सव ता० १५ अगस्त शुक्रवारको ही मनाया जायेगा, तथापि सौरगणनानुसार वर्षप्रवेश १४ अगस्त गुरुवारको ही हो जावेगा। ग्यारह वर्ष पूर्व १९४७ में १५ अगस्तको श्रावण कृष्ण चतुर्दशी और अश्लेषा नक्षत्र होनेसे शुभ दिन नहीं था। उच्च भारतीय राज्याधिकारियोंको ज्योतिर्विज्ञान-वेत्ताओंकी ओरसे यह बात सुझाई गई तो हमारी बात मान ली गई और ता० १५ अगस्त शुक्रवारकी अपेक्षा ता० १४ अगस्त (१९४७) गुरुवारको अर्धरात्रिमें १२।१ पर गुरुपुष्यामृत योग और स्थिर लग्नमें स्वातन्त्र्य सत्ता ग्रहण करनेका सुमुहूर्त साधा गया था और १५ अगस्त शुक्रवारको प्रातःकाल ६ बजे कन्यालग्नमें ध्वजोत्तोलनादिसे उत्सव प्रारम्भ किया गया। इस कारण सौर गणनानुसार वर्ष प्रवेश लग्नका समय १४ अगस्तको ही आता है और स्वातन्त्र्योत्सव सदाकी भांति १५ अगस्तको मनाया जाता है।

स्वतन्त्र भारतका जन्म लग्न यह है—

मं. हृ. ३ | १
रा. २ | १२
बु.४
११
५
६ने. | ८ के. | १०
७ गु. | ९

सं० २००४ अधिक श्रावण कृ० १२ गुरुवार ता० १४ अगस्त १९४७ इष्ट घट्यादि ४५।२५ सू. ३।२८ ल. १।८

'स्वतन्त्र भारतका भविष्य' शीर्षकसे इस कुण्डलीका विस्तृत भविष्य विवेचन ता० १५ अगस्त १९४७ के 'हिन्दुस्तान' 'नवभारत' वीर अर्जुन' आदि प्रमुख पत्रोंके स्वतन्त्रता विशेषांकोंमें हमने प्रकाशित करवाया था। तदनन्तर भारतके अनेकों साप्ताहिक मासिक पत्रोंने भी उस भविष्यको अपने-अपने पत्रोंमें उद्धृत किया था। उसी १५ अगस्त १९४७ के विस्तृत भविष्यमेंसे कुछ पंक्तियां ये हैं—

"......अतः यह तो निश्चित है कि यह स्वतन्त्रता दीर्घजीवी (चिरस्थायी) होगी और आगे उत्तरोत्तर भारत का गौरव संसारमें बहुत बढ़ेगा। .....निकट भविष्यमें अभी किसी विदेशी आक्रमणका भारतको भय नहीं है।... इन आरम्भिक वर्षोंमें पाकिस्तानका सम्बन्ध आन्तरिक रूपसे मैत्रीपूर्ण नहीं होगा।......भारत भविष्यमें अपने उद्योगसे आर्थिक स्थितिको सुधार लेगा।......भारतीय वैज्ञानिक परमाणु शक्तिका अनुसंधान करेंगे और उसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिलेगी।......राष्ट्रभाषा हिन्दीका गौरव बढ़ेगा।

...भारतकी राष्ट्रीय सरकार विदेशोंमें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।......शनि दृष्टिके कारण पाकिस्तानसे आन्तरिक आर्थिक सम्बन्ध सन्तोषजनक न होंगे। शनि अनार्य जनताके अन्तःकरणको अभी शुद्ध नहीं होने देगा।" इत्यादि।

ग्यारहवां वर्ष लग्न

१२ | १०
प्र. अ १ | ११ | ९
२ | ८ श.
३ | ५ बु.
सू.चं.४शु.ह. | ६

स्वतन्त्रता प्राप्तिके समय १५ अगस्त १९४७ को अधिक मास श्रावण कृष्णपक्षकी १४ और गुरुवार था, दैवयोगात् इस १२ वें वर्ष प्रवेशके समय भी वही श्रावण अधिक मास और कृष्णपक्षकी १४ गुरुवार प्राप्त हुआ है । अश्लेषानक्षत्र भी शुभ नहीं है । अतः यह वर्ष भी भारतीय जनताके लिए अनेक प्रकारकी अवाञ्छनीय अप्रिय घटनाओं का प्रतीक सिद्ध होगा । प्रकृति प्रकोप वर्गविद्वेष संघर्ष-सीमा विवादके लिए यह वर्ष ऐतिहासिक माना जायगा ।

आशाकी किरण एक मात्र इतनी ही है कि वर्ष-लग्नेश शनि दशममें शत्रु राशिका होते हुए भी स्वनवांशमें है और राज्येश भौम पराक्रममें मुंथाके साथ स्वक्षेत्री तथा गुरु भाग्यमें राहुसे १ अंश आगे निकल गया है अतः भारत सरकार सभी प्रकारकी विषम समस्याओंका साहस पूर्वक प्रतिरोध करके उज्ज्वल भविष्यका निर्माण करती रहेगी ।

कांग्रेस जन्मलग्न

कांग्रेस जन्मकुण्डलीमें वर्तमान ७३ वां वर्ष सुदर्शन-चक्रगणनया जन्मलग्न मीनसे ही प्रारम्भ होता है, यह संघर्षमें विजयप्रद है । कांग्रेस जन्मकुण्डलीमें गजकेसरी योगादि कई प्रबल राजयोग पड़े हैं, इसी कारण भारतमें अन्य कोई भी राजनैतिक दल इतना प्रबल और लोकप्रिय होकर सत्ता सम्हालनेमें समर्थ नहीं हो सका जितना कि कांग्रेसको प्राप्त हुआ है । ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंके लिए हम यहां कांग्रेसकी जन्मकुण्डली दे रहे हैं, इसकी ग्रह स्थितिका अनुशीलन करनेसे भूत वर्तमान और भविष्यका भी सम्यक् ज्ञान हो सकेगा । कांग्रेसकी स्थापना (प्रथमाधिवेशन) बम्बईमें सं० १९४२ पौष कृष्ण ७ ता० २८ दिसम्बर १८८५ ई० को इष्टकाल १२।५ पर मीन लग्न में हुई, कुण्डली यह है —

१ | ११ के. | २ | १२ | शु. १० | श. ३ | ९ सू. | ४ | चं. ६ गु. मं. | बु. ८ | रा. ५ | ७

लग्नेश राज्येश गुरु, पञ्चमेश चन्द्रमा और भाग्येश भौमके साथ सप्तम (केन्द्र) में है । भारतके महामात्य श्री पं० जवाहरलालजी नेहरूका जन्मलग्न और जन्म राशि कर्क है । अतः ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे स्पष्ट है कि कांग्रेस रूपी विराट शरीरमें प्राण मन और बुद्धिबल श्रीनेहरूजी हैं, या यों कह सकते हैं कि श्रीनेहरूजीमें ही कांग्रेसका अस्तित्व है । महामहिम श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजीका जन्म लग्न धनुः है इनका जन्म लग्नाधिपति गुरु ही कांग्रेस जन्म लग्नाधिपति है अतः इन्हीं दोनों महाप्राण महानुभावोंको भारतका सर्वप्रथम राष्ट्रपति एवं महामंत्री होनेका गौरव प्राप्त हुआ । आगामी कार्तिक मास ७ नवम्बर १९५८ ई० से शनि धनुः राशिमें प्रवेश होगा यह कांग्रेस जन्म कुण्डलीमें दशम स्थानमें शत्रु स्थानाधिपति सूर्यके साथ जायेगा । राशिसे चतुर्थ होनेसे कांग्रेसको लघुकल्याणी वा ढय्या सुवर्ण पाद पर आवेगा यह शुभ फल कारक नहीं है । कांग्रेस संगठनमें दरार बढती जावेगी । स्वार्थी और धूर्त लोगोंके कारण कांग्रेसकी प्रतिष्ठा लोकप्रियता न्यून होगी, कांग्रेस कुछ राज्योंमें अपना प्रभाव खो देगी । पश्चिमी बंगाल आंध्र मद्रास पंजाब और राजस्थानमें स्थिति अधिक गम्भीर बनेगी । धनुःके शनिमें अनेक कांग्रेसजनोंका हाईकमाण्डसे भी प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष मतभेद होगा । विशेषकर धनुः के शनिका अन्तिम समय (सन् १९६१-६२) कांग्रेसके लिए विशेष संकटापन्न होगा । वही समय भारतीय गणतन्त्रके तृतीय निर्वाचन का भी होगा । परन्तु आगामी अष्टग्रहीके प्रभावसे उस समय संसारकी स्थिति अच्छी नहीं रहेगी, अन्ताराष्ट्रीय घटनाओं के कारण जब देश चारों ओरसे शंकाओंका सामना कर रहा होगा तो सम्भवतः भारतके भावी चुनाव निश्चित समय पर नहीं हो सकेंगे । सन् १९६२ के बाद ही विश्व की स्थिति कुछ सम्हल पायेगी ।

छठा घर रोग शत्रु कारक है, इसमें चन्द्रमा और सुखेश भाग्येश शुक्रकी स्थितिसे ज्ञात होता है कि इस वर्ष भारतीय जनता सुखी एवं समृद्ध नहीं रह सकेगी, अनेक प्रकारकी आधिव्याधियों (शारीरिक मानसिक रोगों) आर्थिक संकट और प्रकृति प्रकोपसे प्रजा पीडित रहेगी । वर्गविद्वेष

भाई भाईमें विरोध राजनैतिक सामाजिक धार्मिक दलोंमें फूट बढ़ेगी। गुरु नवममें राहुके साथ है अतः भाषा समस्या और साम्प्रदायिकता जोर पकड़ेगी। पंजाबमें साम्प्रदायिकता का रोग बढ़ेगा, कैरों मंत्रिमंडल भंग होगा। हिन्दी आन्दोलन पुनः भड़केगा। किसी प्रान्तमें राष्ट्रपति शासन लागू होगा। शुक्रके कारण अनाचार व्यभिचार बढ़ेगा। वीर्य विकार वातश्लेष्म व्याधि और क्षय रोग बढ़ेगा। अनुशासन-हीनता उच्छृंखलता उन्माद प्रमादादि मानसिक रोग उत्तरोत्तर बढ़ते जावेंगे। दूसरे तीसरे मासमें प्रकृति प्रकोप जलप्लावनसे हानि होगी। ५ वें माससे आगेका समय विशेष अशान्तिप्रद है। वर्षमें छठे चन्द्र शुक्रका फल यों लिखा है—

वातश्लेष्मादिका बाधा विद्वेषो बान्धवैः सह।
नृपचौरोद्भवा पीड़ा वर्षे षष्ठस्थिते विधौ॥
वातश्लेष्मभवा पीड़ा क्षयोत्पत्तिर्धनक्षयः।
महाभयं गृहेकष्टं वर्षे षष्ठगते भृगौ॥

इस वर्षमें धनेश गुरु राहुके साथ शत्रु नवांशमें निर्बल है और नवमेश शुक्र छठे घरमें सूर्यके साथ निर्बल है तथा मंगल शनि दोनों पापग्रह मंगलकी राशिमें हैं, शुभग्रह चं. बु. गु. शु. निर्बल हैं अतः राज्यकी स्थायी शान्तिमें बाधक मंत्रिमण्डलोंमें उलट फेर आर्थिक संकट और प्रजा में कष्टप्रद हैं। यथा—

धर्माधिपे वा विबले च वित्त-
नाथे विलग्ने शुभदृष्टि हीने।
क्रूरयुते नाशमुपैति लक्ष्मीः
सुसञ्चिता शक्र सुरक्षिताऽपि॥
दुष्टवर्गोपगा पापाः सौम्याश्चेद्बलवर्जिताः।
अपाकुर्वन्ति ते राज्यं कष्टं कुर्वन्ति देहिनाम्॥

सुख शान्ति समृद्धि और सद्विवेकके कारक शुभ-ग्रह गुरु शुक्र माने गये हैं। इस वर्ष गुरु शत्रुराशि नवांशमें राहुके साथ मंगलसे दृष्ट है। शुक्र शत्रुघरमें सूर्यके साथ मंगलसे दृष्ट है अतः इस वर्ष शासनमें अपव्यय बढ़ेगा। अधिकारी वर्गमें सदाचारी सत्यनिष्ठ व्यक्ति बहुत कम होंगे। भ्रष्टाचारी लोगों और चोर डाकू लुटेरोंसे प्रजा त्रस्त होगी। दुर्घटनाएं अधिक होंगी। गुरु शुक्रके निर्बल क्रूर युक्त होनेका फल यों लिखा है—

अस्तंगतौ नीचमुपागतौ वा
क्रूरारि सम्पीड़ित मूर्तिकौ वा।
देवेज्यशुक्रौ मनुजाधिपत्यं
सुखार्थ लाभं हरतो नराणाम्॥

वर्षायोग और वायुपरीक्षा

ग्रह योग इस वर्षके उत्तम नहीं हैं, परन्तु जिस प्रान्त में आषाढी पूर्णिमा (ता० ३० जून सोमवार) को सायं काल सूर्यास्त समय पूर्व उत्तर पश्चिम वा ईशानकोणकी वायु चलेगी वहां ग्रह योगका अनिष्टफल विशेष न होकर सुभिक्ष होगा, तथा जहां दक्षिण नैऋत्य वायव्य और अग्नि कोणकी पवन प्रवाहित होगी वहां दुर्भिक्ष और प्रकृति प्रकोप एवं नानाविध आधिव्याधियोंसे प्रजा पीड़ित होगी। ३० जून और १ जुलाईको दिन भर बादल रहे और रात्रि को चन्द्रमा भी बादलोंसे ढका रहे तो सुभिक्ष होता है। जहां ऐसा नहीं हो और वायु भी विपरीत चले तो समझना चाहिए कि वहां कहीं अनावृष्टि, कहीं अतिवृष्टि रोग युद्धादि द्वारा हानि होगी। जहां आषाढी पूर्णिमाका शुभ शकुन होगा वहां निम्न लिखित तिथियोंमें उत्तम वर्षा होगी।

जलतत्व कर्क राशिमें बुध ता० १ से २० जुलाई तक रहेगा, ता० १६ जुलाईसे १६ अगस्त तक सूर्य और १० अगस्तसे ४ सितम्बर तक शुक्र भी कर्कमें रहेगा। जुलाईमें ता० १-३-६-१०-१४-१७-२३-२५-२७-३०, अगस्तमें ता० ६-१०-१४-१८-२०-२५-२६-३१, सितम्बरमें ता० २, ३, १०, १३, १४, १६, २८, २३, २४ और अक्टूबरमें ता० ७, ८, १४, १६, २०, २३, २८ को वर्षा योग बनता है। इन्हीं तिथियोंमें कहीं अतिवृष्टिसे भी हानि होगी। भाद्रपद कृष्णअमाको सिंह राशिमें चार ग्रह और आश्विनकृष्ण अमाको कन्याराशिमें पंचग्रह योग बना है। अतः भाद्रपद शुक्ल और आश्विन मासमें कहीं भयंकर जलप्लावन (बाढ़) से हाहाकार मचेगा। पूर्व दक्षिणमें विशेष हानि होगी। लिखा भी है—

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

इस पंचग्रहीयोगका आगे संसार और भारत पर बड़ा

विचित्र प्रभाव पड़ेगा उसका विवेचन हम आगामी अंकमें देंगे वहाँ देखें। प्रत्येक वस्तुओंके भावमें भी भारी उलट फेर होगा। श्रावणसे सब वस्तुओंमें मंदी समाप्त हैं। आश्विनसे तेजी विशेष भड़केगी। मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनुः राशिवाले व्यापारियों और जिनके जन्मपत्र तथा वर्ष कुण्डलीमें ग्रहदशा प्रतिकूल हो उन्हें व्यापार व्यवसाय बहुत सम्हल कर करना चाहिए अन्यथा हानि होगी। वर्षमें जिनका शनि निर्बल अनिष्टप्रद हो वे भी सावधान रहें। भारतीय स्वतन्त्रताकी १२वीं वर्ष कुण्डलीमें दशम शनि भी व्यापारियोंके लिए हानिप्रद और राजाओंको चिन्ताप्रद है। यथा—

व्यापाराद्धनहानिश्च भयं भूपालसम्भवम्।
सुखेदैन्यं प्रवासश्च दशमे रविनन्दने॥

इन सब अरिष्टयोगोंके होते हुए भी वर्षमें मुंथा मुंथेशभौमके साथ तृतीय भावमें है और सूर्य छठेमें हैं अतः भारतकी सैन्य संगठन शक्ति बढ़ेगी। अपने सदुद्योग पुरुषार्थसे भारत सभी सम्भाव्य आपत्तियों और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा यह निश्चय है। सूर्य मंगलका फल यों लिखा है—

अन्नागमं तथा धैर्यं राजमानं रिपुक्षयम्।
सौख्यं मित्रकलत्रादि षष्ठे प्रद्योतनो यदि॥
नृपमानं धनप्राप्तिः शत्रुनाशो निरामयम्।
गेहे महोत्सवो नित्यं तृतीये भूमिनन्दने॥

व्यापार-भविष्य

जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर १९५८ ई०

[प्रोफेसर बी० सी० महता, एम. आर. ए. एस., एक्स. एम. सी. जैनज्योतिष ब्यूरो, ब्यावर (राज०)]

गत अंकमें ज्योतिष्मतीके प्रियपाठकोंकी सेवामें मैंने उत्तरी भारतके बाजारोंके भविष्य पर काफी बड़ा लेख व भविष्यवाणी दी थी, मुझे इसकी हार्दिक प्रसन्नता है कि व्यापारी मित्रोंने उसे बहुत पसन्द किया। अब ज्योतिष्मतीके पाठकोंकी सेवामें गुड़, मटरा, सरसों, गवार, अरहर आदिके बाजारोंके भविष्यका दिग्दर्शन प्रस्तुत किया जाता है। इस अंककी अवधिमें श्रावण दो हो जानेसे चार महीनोंके भविष्यका दिग्दर्शन किया जावेगा।

जुलाई १९५८

जुलाई मास व्यापारी वर्ग और खासकर उन व्यापारी वर्गके लिये जो उत्तरी भारतके वायदे बाजारोंमें दिलचस्पी रखते हैं बड़ा महत्वका है। हर साल इस महीनेमें समस्त बाजारोंमें विशेष घटबढ़ होती हैं क्योंकि इस महीनेमें बरसात बादल तथा प्राकृतिक आबहवाका असर फसल पर पड़ता है। यदि बरसात अच्छी होती है तो मन्दीकी मनोवृत्ति व्यापारियोंकी हो जाती है और बरसातकी खेंचसे या विलम्बसे असाधारण तेजीका कारण पैदा हो जाता है।

चालू वर्षके जुलाई महीनेमें विशेष महत्वके ग्रहयोग बने हैं। महीनेके प्रथम सप्ताहमें गुरु मंगलका प्रतियोग हो रहा है, चतुर्मासमें मंगल गुरु एक राशिमे प्रसार करते हैं, तब बरसातकी खेंच व अभाव होता है परन्तु यदि ये दोनों ग्रह एक दूसरेकी अपोजिट राशिसे प्रसार करते हैं तो बरसात अच्छी लाते हैं। इस लिहाजसे जुलाई महीनेमें सर्वव्यापी बरसात होगी और उत्तरी भारत, देहली पंजाबकी तरफ बरसात जरूर अच्छी होगी, जिसका प्रभाव गुड़, मटरा, सरसों, दालवानेमें मन्दीका ही समझना चाहिये और अभी चालू तेजीका फोर्स विलीन हो जावेगा और एक बार मन्दीका फोर्स रहेगा और जो व्यापारी पहले बेचो पीछे खरीदोके सिद्धान्तसे अपना धंधा करेगा उसको फायदा हुए बिना नहीं रहेगा।

ता० १ जुलाईको गुरुका प्रतियोग ता० १३ को मंगल

केतुका संयोग मन्दीकी निशानी है।

ता० १५ को शुक्र ग्रह भी मिथुन राशिमें प्रवेश करेगा इस प्रकार बड़े योग मन्दीके बन रहे हैं तथा छोटे योग तेजीके, इसलिये हर तेजीमें बेचकर धंधा करने वालोंको फायदा रहेगा।

अगस्त १९५८ ई०

अगस्त मासमें तुलाराशिके एक अंश पर गुरु तथा राहु का प्रसार हो रहा है, एक ग्रह जनरल मन्दीका द्योतक है जबकि दूसरा ग्रह तेजीका—फिर भी युति जो ता० ११ अगस्तको हो रही है वह मन्दी बाजारोंमें लाने वाली है।

अगस्तमें वृ० रा० के अलावा शनि वृश्चिक राशि व ज्येष्ठा नक्षत्रमें प्रसार कर रहा है यही एक योग तेजीका हैं और इसी कारण यह बड़ी मन्दीको रोकता है। मेषका मंगल शनिको नीच राशि गत कर देता है तथा ता० २४ को यह मार्गी हो जाता है यहांसे सरसों, नाज मटरा, गुड़, तेलवानामें मन्दीका अच्छा झटका आवेगा इसलिये इस महीनेमें हर उछालेमें बेच कर लेनेका सिद्धान्त रखना चाहिये।

सितम्बर १९५८ ई०

सितम्बर महीनेके प्रारम्भमें ही मंगल वृष राशिमें प्रवेश कर जाता है यह मंगल अतिचारी और प्रायः चार मास इसी राशिमें चलेगा, शनि मंगलकी राशिमें वृश्चिकमें चल रहा है जबकि मंगल इसके बिल्कुल सामनेकी राशिमें शुक्र ग्रहकी राशिमें चालू है जो कि बड़ी अच्छी तेजीका योग है। हमारे ख्यालसे इस महीनेमें तेजीका कोई नया कारण पैदा होगा और मन्दीका वातावरण समाप्त हो जावेगा। ता० ४ को सिंहका शुक्र तथा ता० १७ को कन्यामें सूर्य ये दोनों इस तेजीको सपोर्ट करेंगे; ता० २४ को तुला राशि छोड़कर राहु कन्या राशिमें प्रवेश करता है यह भी बहुत महत्वशाली योग है और एक बड़ी लाईन बनाता है, राहुका कन्या राशिमें प्रसार जनरल तेजी व लम्बी तेजीका द्योतक है; परन्तु यह ग्रह बहुत दिनों तक या १८ महीने तक इसी जगह रहेगा। इसलिये इसका असर भी धीरे-धीरे होगा इसलिये बहुत सावधानीसे धंधा करें।

अक्तूबर १९५८

अक्तूबर महीनेमें सूर्य, शुक्र राहु तथा बुध इन चार ग्रहोंका प्रसार कन्या राशिसे हो रहा है तथा मंगलसे इन सबका ट्रायन तथा हर्शल शनिसे इस कोम्बीनेशनका सेक्स्टायल योग बन रहा है। ये योग जनरल ट्रेण्ड तेजी बताते हैं तथा घटाबढ़ी व रिएक्शनके साथ बाजारका टोन तेज रखते हैं।

ता० १० अक्तूबरको मंगल वक्र होता है तथा १८ को शुक्र अस्त और २२ को गुरु अस्त होता है ये योग भी अजब हैं, बड़ी घटाबढ़ी होनेकी सम्भावना हरएक बाजारमें है। गुड़, गुवार, मटरा, सरसों, लिंगतेल चांदी-सोना सब बाजारोंमें असाधारण घटाबढ़ी होगी। जिन चीजोंमें व बाजारों में अब तक तेजी चल रही है उनमें मन्दी आवेगी और जिनमें मन्दी चल रही है उनमें बड़ी तेजी आवेगी, जिन्स वायदोंमें तेजीका ही फोर्स विशेष रूपसे रहेगा। हस्तका शुक्र तथा स्वातिका गुरु मन्दीके रिएक्शन देता रहेगा। लेकिन फोर्स तेजीका ही समझकर कार्य करना चाहिये।

—

चार मासका राशि-भविष्य

[श्री पं० हंसराज शर्मा ज्योतिषाचार्य]

यह राशिफल चन्द्रमाके अतिरिक्त गोचरसें ग्रहोंकी स्थिति पर आधारित है। इस फलादेशामें हर्षल और नैपच्यूनका भी ध्यान रखा गया है, यह जन्म राशि, नाम राशि आदि पर देखें। सूक्ष्म फल वर्ष फलसे ज्ञात करें।

मेष

(चु चे चो ला ली लू ले लो ध आ)

शुभ अशुभ मिश्रित फल होने पर भी यह चारमासकी अवधि आपके लिये पिछले वर्षकी अपेक्षा अच्छी रहेगी। पारिवारिक समस्यायें कम होंगी, आर्थिक कठिनाइयां भी दूर होंगी, बहुतसे कामोंसें भाग्य साथ देता दिखाई देगा, इसके अतिरिक्त चिंता, अशान्ति, नातेदारोंसे बिगाड़, व्यर्थका व्यय, मित्रोंसे बिगाड़, स्वास्थ्यसें गड़बड़, व्यर्थकी यात्रा आदि भी रहेगी। नई व्यापारिक सन्धि लाभदायक नहीं रहेगी। मुकदमा आदिसे भी चिंता रहेगी। दैनिक कामोंसें समय अच्छा व्यतीत होता रहेगा, सम्पत्ति सम्बन्धित कार्यों में भाग्य साथ देगा, अपरिचित व्यक्ति द्वारा हानिकी संभावना है। आयके साधनोंसें वृद्धिकी आशा व्यर्थ, है।

२४ अगस्तसे शनि मार्गी होने पर स्वास्थ्यसें बिगाड़ होगा। धन हानि, आर्थिक दशामें अवनति होगी, कल्पना बढ़ेगी। अधिक निराशाकी स्थितिसें बृहस्पति सहायता देगा और अकस्मात् ही बिगड़ा कार्य ठीक होगा, स्त्री तथा संतान से सुख मिलेगा, अक्तूबर मासके शुरूमें ही आपको अच्छा धन लाभ होगा। कन्या राशिसें बुधके रहते शुभ कार्यों पर व्यय अति अधिक होगा। आपके लिये कन्या, वृश्चिक तथा मीनका चन्द्रमा नेष्ट ही रहेगा।

वृषभ

(इ उ ए ओ वा वी वू वे व वो)

आपको राजनीतिक क्षेत्रों तथा सरकारी अफसरोंकी ओरसे निराशाका सामना करना पड़ेगा, शीत युद्ध जैसा वातावरण रहेगा, परन्तु सितम्बरमें शत्रु पर विजय होगी। यात्रा आशासे अधिक ही रहेगी, बन्धु तथा मित्रों द्वारा साहस बढ़ेगा, संतानकी ओरसे सराहनीय सुख मिलेगा, स्त्रीका स्वास्थ्य अच्छा न रहकर चिंताका कारण ही बना रहेगा। श्रेष्ठ ग्रहोंकी अपेक्षा नेष्ट ग्रहोंका बल अधिक रहनेसे हानि, व्यर्थकी यात्रा, बने कार्योंसें बिगाड़ या रुकावट, स्वास्थ्यसें गड़बड़, मनको अशान्ति, व्यर्थका क्रोध, नातेदारोंसे शत्रुता, व्ययमें वृद्धि, सट्टे आदिसे धन हानि, नेष्ट फल होंगे। घरेलू वातावरण अनुकूल ही रहेगा, नये मित्रोंसे सम्बन्ध होगा। शुभ कार्योंसें मन लगेगा, शुक्र अच्छा फल करेगा, परन्तु किसी किसी समय अन्य ग्रहोंसे युक्त होनेसे पूर्ण फल नहीं कर सकेगा, आर्थिक समस्यासें कठिनाई आ सकती है परन्तु शीघ्र ही आर्थिक दशा संभल जावेगी। यदि किसी प्रकारकी बुरी घटना या बाधाकी भी संभावना दिखाई दे तो भी स्वयं ही कार्य ठीक होगा।

२४ अगस्तसे शनि मार्गी होने पर मानसिक चिंता तथा अशान्ति कुछ दिनोंके लिये बढ़ेगी, बृहस्पति कन्या राशिसें तो शुभ रहेगा परन्तु तुला राशिसें आते ही भाग्यसें हीनता का प्रभाव अधिक करेगा।

मिथुन

(क का की कु घ ङ के को ह हा)

शुभ-अशुभ मिश्रित फल रहने पर भी श्रेष्ठ फल अधिक रहेगा। इससे यह चार मासका समय इस वर्षका सर्वश्रेष्ठ समय होगा। व्यापार आदिसे श्रेष्ठ लाभ होगा और आशासे अधिक ही यश और मान बढ़ेगा, भाग्य साथ देगा, सट्टे या स्टाकसे भी अच्छा लाभ होगा, नये कामोंसें भी सफलता होगी, पारिवारिक समस्यायें भी पहले से कम होंगी, आर्थिक दशासें सुधार होगा, कुछ बिगड़े या अधूरे कार्य पूर्ण होंगे, राजकर्मचारियोंसे मेल जोल द्वारा भी लाभ होगा, बड़े या धनी व्यक्तियोंसे लाभ होगा, इस प्रकार कई प्रकारका सुख मिलेगा, पशु आदिसे, यात्रा, बन्धु, स्त्री तथा संतानसे भी सुख मिलेगा। फिर भी नेष्ट ग्रहोंके

प्रभाव द्वारा कुछ व्यर्थका व्यय, अकस्मात् ही व्यर्थकी यात्रा, मित्रोंसे बिगाड़, कुछ मानसिक परेशानियां भी होंगी। स्वास्थ्य पहलेसे अच्छा रहेगा, किसी किसी समय रक्त पित्त के विकारकी संभावना है। सभा या समाजके कामोंमें भी परेशानी होगी। आपको नातेदारोंसे संभल कर ही व्यवहार करना उचित है, अन्यथा बिगाड़ हो सकता है। आर्थिक दशामें अकस्मात् लाभकी आशा है।

कर्क

(ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

शुभ अशुभ मिश्रित फल रहते हुए अगस्त तक तो समय नेष्ट ही रहेगा, बुरी सूचना मिले, मित्रोंसे बिगाड़, विद्यामें बाधा या असफलता, मनको अशान्ति, मान हानि, सट्टे आदिसे भी हानि, झूठा कलंक, आर्थिक दशामें अवनति आदि नेष्ट प्रभाव रहेगा। स्त्री तथा संतानसे सुख, स्वास्थ्यमें सुधार, नये कामोंकी इच्छा, पशु तथा सवारी आदिका सुख, यात्रा यदि करनी ही पड़े तो लाभदायक रहेगी, धर्म कर्म या सोशल कामोंमें रुचि अधिक रहेगी। किसी अस्त्र द्वारा अथवा मशीनरी या ट्रांसपोर्ट द्वारा चोट का भय, रक्त पित्त फोड़े फुन्सीका विकार हो तो हो अन्यथा किसी बड़े रोग आदिकी आशा नहीं। संतानको ज्वर, गले या छातीका रोग, छूतकी बीमारीका योग है। मिश्रित फल होने पर भी अक्तूबरमें आपकी आर्थिक दशामें विशेष सुधार होगा, व्यापारमें वृद्धि होगी, सुस्ती बेकारी निराशा तथा उदासीनताका प्रभाव दूर होगा।

सिंह

(मा मी मु मे मो टा टी टू टे)

मुकदमा आदि हो तो उसमें राजदण्डकी संभावना है। कई प्रकारकी कल्पनायें उत्पन्न होंगी, व्यर्थकी यात्रा, व्यर्थ का व्यय या धन हानि, शत्रु अधिक, विरोधी पग पग पर, झूठे कलंक आदि, नातेदारोंसे असहयोग या वियोग, किसी प्रिय व्यक्तिकी मृत्यु आदिसे मनकी शान्ति भंग होगी, चोट आदिसे कष्ट, ट्रांसपोर्ट आदिकी दुर्घटनासे शारीरिक कष्ट, उदासीनता तथा निराशा अधिक, भाग्यमें हीनताका अनुभव, कई प्रकारके नेष्ट फल रहेंगे फिर भी अनाज, रस पदार्थ या तेल आदिके बीजके स्टाकसे लाभ आशासे भी अधिक होगा, आर्थिक दशामें अवनति आकर भी संभल जावेगी, मित्र द्वारा सहायता और साहस बढ़ेगा, स्वास्थ्यका विशेष ध्यान रखें पारिवारिक समस्यासे परेशानी, भ्रमसे हानि, स्त्री पर संदेहसे क्लेश आदि संभव है, स्त्री मित्र ब धु या अन्य नातेदारोंसे बिगाड़ हो या उनसे असहयोग और वियोग ही इसका परिणाम हो। आर्थिक कठिनाइयोंका भी सामना करना पड़ेगा। नई व्यापारिक सन्धि (New Business Agreement) भी इस अवधिमें करनी उचित नहीं।

कन्या

(टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)

इस अवधिमें यदि कुछ दिन बुरे रहेंगे तो कुछ दिन श्रेष्ठ भी रहेंगे, यदि कुछ कामोंमें भाग्य साथ देगा तो कुछ कामोंमें भाग्यमें हीनताका भी पूर्ण अनुभव होगा। व्यापार आदिसे लाभ अच्छा होगा, परन्तु सट्टे आदिसे हानि होगी। नये कामोंमें सफलता मिलेगी, आर्थिक दशामें यदि सुधार नहीं होगा तो अवनतिकी भी आशा नहीं, मान बना रहेगा, भ्रम आदिसे हानि, अपरिचित व्यक्ति या नौकरों आदि द्वारा हानिका भय है, मुकदमे आदिमें विजयकी आशा व्यर्थ, बुरे स्वप्न दिखाई देंगे, स्वास्थ्यमें गड़बड़ी रहेगी, पाचन शक्तिमें कमी, आंखोंको कष्ट, स्त्रीसे चिंता, संतान सुख या किसी नये जीवसे प्रसन्नता होगी। आर्थिक दशामें अवनति और धनकी कमी रहेगी, ऋण देने या लेनेमें शीघ्र लौटने की आशा नहीं, शत्रु सामना नहीं कर सकेंगे।

तुला

(रा री रू रे रो ता ती तु ते)

मित्रों तथा नातेदारोंसे व्यर्थमें ही बिगाड़ होगा, वृद्धोंकी ओरसे चिन्ता, कुछ कामोंमें बाधा, नौकरी वालोंके लिये भी वातावरण प्रतिकूल रहेगा, फिर भी नेष्टफल कुछ इस सीमा तक रहेगा कि जिससे आपकी सहनशक्ति बढ़ेगी, इस अवधि के साथ ही आपके नेष्ट दिनोंका अन्त होगा और भविष्य उज्ज्वल दिखाई देगा। सबसे अधिक कठिनाई आपको आर्थिक दशामें होगी, व्यर्थका व्यय या ऋण आदिसे परेशानी, कुसंगतिसे भी धन हानिका भय है, अपितु यह भी सम्भव है कि कुछ ऐसी व्यवस्था बना बैठें जिसका प्रभाव आगे काफी समय तक चलता ही रहे। सट्टे आदि

से कमर तोड़ हानि हो सकती है । भूमि आदिका कार्य करने वालोंके लिये यह समय अच्छा ही व्यतीत होगा ।

वृश्चिक

(तो ना नी नु ने नो या यी यु)

यहां भाग्य आपका साथ नहीं देगा, शत्रु से हानि, विरोधी अधिक, मित्रोंसे बिगाड़, व्यर्थकी यात्रा, व्ययमें वृद्धि, मनको अशान्ति, घर पर व्यर्थका वाद-विवाद और क्लेश, स्त्रीको महाकष्ट, गर्भस्राव या गर्भपात आदिकी सम्भावना, किसी नातेदारकी मृत्यु, स्वास्थ्यमें बिगाड़, स्वभावमें क्रोध, व्यर्थका वाद-विवाद, राजनीतिके कार्योंमें परेशानी, बने कामोंमें बिगाड़ या अधूरे रहें, कुसंगतिका प्रभाव, दुर्बलता, पाचनशक्तिमें कमी, शरीरके किसी भी भाग में दर्द, स्त्री तथा संतानको भी शारीरिक कष्ट, औषधि प्रयोग पर व्ययमें वृद्धि, पारिवारिक वातावरण भी परेशानी का कारण बना रहेगा, दैनिक कामोंसे भी मन ऊब उठे, कुसंगतिसे हानिका भय, किसी भी निर्णयसे पूर्व उस पर पूर्ण रूपसे विचार-विमर्श आवश्यक है, नौकरी वालोंके लिये समय साधारण रूपमें व्यतीत होगा, व्यापार आदिके लिये नेष्ट है । धर्म कर्म द्वारा मनको शान्ति मिलेगी, सभा समाज के कामों द्वारा मान बना रहेगा ।

धनु

(ये यो भा भी यू धा फा ढा भे)

पहले तो भाग्य साथ देता दिखाई देगा परन्तु शीघ्र पश्चात् ही भाग्य में दीनताका अनुभव होगा, मनकी शान्ति भंग होगी, पराई स्त्रीसे हानि, कुसंगतिका प्रभाव, सुस्ती बेकारी उदासीनता तथा निराशाका प्रभाव अधिक, आर्थिक दशा संभल कर भी अवनतिके पथ पर व्यर्थकी यात्रा, यात्रामें कष्ट अधिक हो विरोधी पग-पग पर राज्य-अधिकारियों द्वारा परेशानी, व्यर्थके और झूठे आरोप, स्वास्थ्यमें बिगाड़, शारीरिक कष्ट पहले हो तो उसमें वृद्धि, औषधिसे भी लाभकी आशा कम, पारिवारिक समस्याओं द्वारा भी परेशानी, दैनिक कामोंमें मन न लगे, नातेदारोंसे भी दुःखद सूचना मिले, स्त्रीसे झगड़ा आदि या व्यर्थका वाद-विवाद, संतानको शारीरिक कष्ट, व्यय अति अधिक या सट्टे आदिसे हानि होगी, धन भावका स्वामी बारहवें आने से आर्थिक दशामें अवनति लाता है, बृहस्पति आपकी काफी सहायता तथा रक्षा करेगा और अत्यन्त कठिनाईके समय भगवद् रूपमें अन्धकारके बादलोंका नाश करेगा, संतानके लिये पदोन्नति तथा आय वृद्धिके योग हैं । सट्टे या नये ऐग्रीमैंट आदिसे कमर तोड़ हानि होगी ।

मकर

(भो जा जी खी खू खे खो गा गी)

स्थान परिवर्तन, व्यापार आदिमें भी परिवर्तन, शत्रुसे हानिका भय, मित्र द्वारा विश्वासघात, स्त्री तथा संतानसे सुख, व्यापारसे लाभ आशासे अधिक, आर्थिक दशामें सुधार, यश और मान बढ़े, सुख समाचार मिले, भाग्य साथ देगा, अधूरे या बिगड़े कार्य पूर्ण हों, सट्टे या स्टाकसे भी लाभकी आशा, मन प्रसन्न रहेगा, यात्रा कम करें अन्यथा दुर्घटनाका भय है, स्त्री तथा संतानसे व्यर्थका वाद-विवाद, स्वास्थ्य अच्छा भूमि सम्पत्ति सम्बन्धित कार्योंमें सफलता, आयके साधनोंमें वृद्धि, लाटरी आदिसे लाभकी आशा, नये कामोंमें भाग्यपूर्ण रूपसे साथ नहीं देगा ।

कुम्भ

(गु गे गो सा सी सू से सो दा)

बहुतसे कामोंमें भाग्य साथ देगा, शुभ यात्रा, तीर्थ यात्रा, धर्म-कर्ममें रुचि, सामाजिक कामों द्वारा मनको शान्ति, मित्रोंसे व्यर्थमें बिगाड़, विरोधियों द्वारा परेशानी, स्त्री तथा संतानसे सराहनीय सुख, स्वास्थ्यमें कुछ गड़बड़, पाचनशक्ति कम, घरेलू वातावरण अनुकूल और सुखमय रहेगा, आर्थिक दशामें सुधार होगा, यदि पहले ऋणी हों तो ऋण आदिसे मुक्तिका साधन बनेगा, नौकरी वालोंको अफसरोंसे बिगाड़ या मुक्त होनेका भय है ।

मीन

(दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)

मनको अशांति तथा निराशा अधिक ही रहेगी, व्यापार से श्रेष्ठ लाभ होकर भी हानि, नातेदारोंसे बिगाड़ या मेल-जोल कम, यात्रामें कष्ट और परेशानी, कुछ कार्य अधूरे रहें, व्ययमें वृद्धि या व्यर्थमें धन हानि, सट्टे या स्टाकसे हानि, मित्रोंसे बिगाड़, स्त्रीसे क्लेश, संतानको कष्ट, आर्थिक

सोलनमें अद्भुत धार्मिक समारोह

हिमाचलप्रदेशकी तपोभूमि सोलननगरीकी महत्ता किसी से तिरोहित नहीं, यहाँका जलवायु, शान्तवातावरण, प्राकृतिक सौन्दर्य और आधुनिक युगके सभी साधनोंकी सुलभता यात्रीगणोंको शिमलाकी अपेक्षा भी यहां अधिक आकर्षित करती है। ग्रीष्मातपसे बचनेके लिए भारतके कोने कोनेसे आये हुए सम्पन्न परिवारों, परिव्राजकों, विशिष्ट महापुरुषों एवं राजकर्मचारियोंके आवागमनसे चैत्रसे कार्तिक मास तक इस नगरकी शोभा बहुत बढ़ जाती है। यहांके आदर्श नरेश योगिराज धर्ममार्तण्ड श्री १०५ राजर्षि दुर्गासिंहजीके सदनुरोधसे जब कभी कृपा करके महामहिमामयी विश्वविख्यात योगेश्वरी अनन्तश्री विभूषिता श्री आनन्दमयी माताजीका सोलनमें पदार्पण होता है, उस समय इस नगरीका वातावरण तीर्थ-धाम और राजर्षिका राजप्रासाद वैकुण्ठधाम बन जाते हैं। सोलनके सौभाग्यसे इस वर्ष आषाढ़ कृष्णा ११ शुक्रवार दिनाङ्क १३ जून १९५८ को महामहिमामयी श्री श्री माँ आनन्दमयीने श्री १०८ स्वामी परमान्दजी श्री १०८ नारायण स्वामीजी आदि अनेक विरक्त तथा भगवद्भक्त साधक साधिकाओंके साथ सोलन पधार कर यहांकी धरा को पवित्र किया है। माताजीके साथ उत्तरप्रदेशके सुप्रसिद्ध भगवद्भक्त वीतराग महात्मा बांध वाले श्री १०८ परमपूज्य हरिबाबाजी महाराज भी श्री १०८ स्वामी सनातनदेवजी महाराज श्री पं० ललिताप्रसादजी (गुरु) और अपनी शिष्यमण्डली एवं रासमण्डली सहित पधारे हैं। श्रीहरिबाबाजीने गंगाकी बाढ़से प्रति वर्ष त्रस्त होने वाले सैंकड़ों गांवोंकी रक्षाके लिए ३० मील लम्बा एक बहुत बड़ा बांध बंधवाकर जनताका अत्यधिक कल्याण किया है। तत्कालीन अंग्रेज सरकार लाखों रुपया व्यय करके भी जो कार्य नहीं कर सकती थी वही बांधका महान् कार्य श्री हरिबाबाजीने केवल भगवन्नामसंकीर्तनके बल पर करके जनता जनार्दन की महान् सेवा की है। गौराङ्ग महाप्रभुकी भांति आपकी भगवन्नाम संकीर्तनमें अलौकिक तन्मयताको देखकर प्रत्येक दर्शक आत्मविभोर हो जाता है।

राजर्षि श्री १०५ दुर्गासिंहजीने महामहिमामयी माँ के तत्त्वावधानमें आषाढ़ शु० १ बुधवार दिनाङ्क १८ जूनसे श्रीमद्देवीभागवतका नवाह पारायण यज्ञ प्रारम्भ किया, जो आषाढ़ शुक्ल १० गुरुवार दिनाङ्क २६ जूनको सानन्द सम्पूर्ण हुआ है। श्री देवीभागवत नवाह यज्ञ पूर्तिके साथ ही इन्द्रदेवने भी तत्काल मेघों को भेजकर सुखद वृष्टिके द्वारा महामहिमामयीमाँ एवं सन्त जनोंका अभिषेक करते हुए भगवान् श्रीकृष्णके 'यज्ञाद्भवति परजन्यः' इस अमर वाक्यको चरितार्थ कर ग्रीष्मातपसे तप्त स्थानीय प्रजाको आनन्दित किया।

कथावाचक संस्कृतसाहित्यके विख्यात विद्वान् संस्कृत कालेज शिमलाके प्राचार्य श्री पं० दिवाकरदत्तजी शास्त्री थे। प्रातः ८ बजे से १२॥ बजे तक आचार्यजी बड़े धीर गम्भीर स्वरसे देवीभागवतका पाठ करते और संकीर्तनोपरान्त विश्रामके अनन्तर अपराह्नमें ३ से ५॥ तक देवी भागवतकी हिन्दी व्याख्या बड़े हृदयग्राही रोचक ढंग से करते थे। आचार्यजीके श्लोक-पाठ एवं कथाको श्रवण करके श्री राजासाहब तथा अन्य सभी श्रोतागण आनन्द विभोर हो जाते थे।

श्री श्री माँ आनन्दमयीका कुछ ऐसा विलक्षण दैवी प्रभाव है कि जहां भी जब तक वह विराजती हैं वह स्थान पुण्य तीर्थ बना रहता है। माँ के दर्शनोंके लिए जो व्यक्ति एक बार पहुँच जाता है—उसे इतनी आत्मशांति प्राप्त होती है कि वह क्षणभरके लिए भी उनसे अलग होना नहीं चाहता। माँ का वात्सल्य स्नेह अनुपम है। पर मायाके चक्रमें प्राणी सब कुछ भूल जाता है। माँ की आनन्दमयी दृष्टिके अन्दर आकर्षण है। माँ के शुभ

दशा दयनीय, रक्त पित्तका विकार, बड़े रोगकी आशा कम, आयकी अपेक्षा व्यय अति अधिक रहेगा, ऋण आदिसे चिन्ता, विद्या तथा धर्म-कर्ममें बाधा, भूमि आदिके कामों में भी कुछ निराशा ही रहेगी, दैनिक कामोंमें मन कम ही लगेगा।

———

दर्शन ही साक्षात् जगदम्बाके दर्शन हैं—यही कारण है कि भारतमें तो जहाँ धुरन्धर दिग्गज विद्वान् महात्मा एवं धनी मानी राजा महाराजासे लेकर रंक तक माँ के भक्त हैं वहाँ फ्रांस अमेरिकादिके कुछ यूरोपीयन भक्त भी निरन्तर माँके चरणोंमें रहकर अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं। माँ के अनन्य भक्त राजर्षि श्री दुर्गासिंहजी जैसा धर्मप्राण महामानव भी इस युगमें कोई बिरला ही होगा। काम क्रोध राग द्वेष मोहादि पर विजय प्राप्त किए हुए विदेह राजकी भांति इन राजर्षिके प्रति स्थानीय प्रजा आज भी श्रद्धासे शिर झुकाती है। श्री श्री माँके श्रीचरणों में, कथा-मण्डपमें और पूज्य श्री हरिबाबाजीके कीर्तन प्रवचनमें सर्वसाधारण जनताके साथ एक ही आसन (दरी) पर सोलननरेश कुचामन (मारवाड़) नरेश राजा श्री प्रतापसिंहजी आदि धर्मप्राण महीपालों एवं उच्च-राज्याधिकारियोंको बैठा देखकर प्राचीन गुरुकुलों एवं तपोवनस्थ ऋषियोंके आश्रमोंकी स्मृति सजीव हो उठती है। जहां ऊंच नीचका भेदभाव भुलाकर राजकुमारोंके साथ अकिञ्चन ऋषिकुमार एक साथ बैठकर विद्याध्ययन करते थे।

श्री श्री माँ के पदार्पणसे पूर्व लगभग डेढ़ मास तक विद्वद्वरेण्य दर्शन वेदान्ताचार्य महामण्डलेश्वर उदासीन सत्सम्प्रदायाचार्य श्री १००८ स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराजने सोलन पधार कर अपने उपदेशामृतपानसे जनताको कृत-कृत्य किया। आपके साथ तपोनिष्ठ वीतराग महात्मा श्री स्वामी ब्रह्मदेवजी काशीस्थ उदासीन संस्कृत महाविद्यालयके प्राचार्य और श्रीस्वामी गोविन्दानन्दजी वेदान्ताचार्यादि विद्वान् शिष्य मण्डल भी था। लगभग डेढ़ मास तक आपने स्वराज्य-भवन सोलनमें निवास किया। महात्माओंका सत्सङ्ग प्रवचन नित्य चलता था। श्री महामण्डलेश्वरजी सप्ताहमें एक बार प्रति रविवार को श्रीमद्भगवद् गीता पर अपना अमृतोपम उपदेश करते थे। दिनाङ्क ११ जून को भक्त जनोंके विशेष आग्रहसे अपने शिष्यमंडल सहित आप हरिद्वार पधार गये और गुरु पूर्णिमाको अहमदाबाद पधारेंगे। श्री हरिबाबा जी महाराज गुरु पूर्णिमाको वृन्दावन पधार रहे हैं। सोलनके सौभाग्यसे इस वर्ष महामहिमामयी माँ गुरुपूर्णिमा पर सोलन ही विराज रही हैं। इसका सब श्रेय धर्मम:र्तण्ड राजर्षि श्री सोलननरेशको है, जिनके पुण्यप्रतापसे प्रजा सदा उपकृत रहेगी।

—

नगरपालिकाके नवनिर्वाचित सदस्योंका अभिनन्दन

सोलन नगरपालिकाके सदस्योंका चुनाव अभी गत आषाढ़ शु० १० गुरुवार दिनाङ्क २६ जून १९५८ को सम्पन्न हुआ। लाडनूँ मारवाड़ निवासी दानवीर रायबहादुर श्रीमान् सेठ साहब तोलारामजीके सुपुत्र श्री सेठ मदनलाल जी खावगी और श्रीनरेन्द्रनाथजी मोहन साहब भी स्थानीय इष्ट मित्रोंकी प्रेरणासे इस चुनावमें खड़े थे, ये दोनों महानुभाव भारी बहुमतसे सफल हुए हैं। सेठजीका सोलनसे कई वर्षोंसे निकट सम्पर्क है। स्थानीय राजकीय कन्या-विद्यालयके लिए दो लाखसे अधिक मूल्यका विशाल भवन आपके पूज्यपितृव्य दानवीर श्रीमान् सेठ गजराजजीने निर्माण कराकर सोलनको उपकृत किया है। सेठ गजराजजी की अ० सौ० धर्मपत्नीके नामपर इस कन्या विद्यालयका नाम अब "लक्ष्मीदेवी जैन गवर्नमेण्ट गर्ल्स हाई स्कूल" है, साथ ही आपका जैन हाउस है और अभी गत वर्ष राज-मार्ग (मालरोड) पर श्रीमदनलालजीने अपना भव्यभवन 'मदननिवासी' निर्माण कराया है। आपने पूज्यपिता और पितृव्य (चाचाजी) की भांति सेठ मदनलालजी भी परम-उदार सेवाभावी नवयुवक हैं। आप नारायणगंज म्यूनिसी-पालिटीके चेयरमैन और आनरेरी मजिस्ट्रेट भी हैं। आप जैसे निस्वार्थी सेवाभावी उदार नवयुवकके नगरपालिकामें आ जानेसे सोलनकी जनता अत्यधिक प्रसन्न है।

श्रीनरेन्द्रनाथजी मोहन साहब डायरमीकन ब्रूरीज लि० के मैनेजिङ्ग डायरेक्टर और अनेक संस्थाओंके संचालक परिपोषक हैं। आपकी उदारता दानवीरता कार्यकुशलता सर्वविदित है। 'ज्योतिष्मती' को भी आपकी सहायता प्राप्त है। आपका पूरा परिचय और चित्र हम विगत १५ वें वर्षके 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित कर चुके हैं। आपके चुनावसे सोलनकी जनता बहुत प्रसन्न है।

तीसरे सदस्य हैं श्रीमान् लाला भगवानदासजीके सुपुत्र श्री ला० शिवचरणदासजी। पहले आप हिमाचलप्रदेशकी परामर्शदातृ समितिके सदस्य भी रह चुके हैं और अब दूसरी बार नगरपालिकाके चुनावमें भारी बहुमतसे सफल हुए हैं। दूसरी बार चुना जाना आपकी सार्वजनिक सेवा और लोकप्रियताका प्रत्यक्ष प्रमाण है। २६ जूनको सायं-कालके समय अधिकारियोंकी ओरसे मतगणनाके उपरान्त विजयी होनेकी घोषणा सुनते ही सहस्रों व्यक्तियोंने विजयनादके साथ आपको हठात् कन्धों पर उठाकर जलूसके रूपमें घुमाया। जहां जहां भी ला० शिवचरणदासको गुरुजन मिले वहीं नीचे उतर श्रद्धापूर्वक चरणोंमें शिर झुका प्रणाम कर आशीर्वाद ग्रहण किया। स्थानीय सभी मन्दिरों और गुरुद्वारेमें भी सर्वप्रथम पहुँचकर उन्होंने अपनी श्रद्धाभक्ति प्रकट की। श्री ला० शिवचरणदास जी पहले दो वर्ष तक 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक रह चुके हैं और अब 'ज्योतिष्मती' को भी आगामी वर्षसे अपना पूर्ण सहयोग देनेकी स्वीकृति दी है। हम श्रीमान् सेठ मदनलालजी खावगी, श्रीनरेन्द्रनाथजी मोहन, सेठ शिवचरणदासजी और बा. श्रीचन्द्रजी आदि सभी विजयी सदस्योंका हार्दिक अभिनन्दन करते हुए आशा करते हैं कि वे सोलनकी भलाईके लिए निःस्वार्थ भावसे लगे रहकर नगरपिताके उच्च आदर्शको भली भांति निभावेंगे।

'दिव्य-ज्योति' का अभिनवशब्दनिर्माणाङ्क

जहां यह कह देना अत्यन्त सरल है कि संस्कृत राष्ट्र-भाषा हो, वहां इसको कार्यरूपमें परिणत कर सकना भी इतना ही कठिन है। संस्कृतको राष्ट्रभाषा बनानेका प्रश्न आज सहस्राब्दियोंके पश्चात् हमारे सामने उपस्थित हुआ है। प्राकृतिक आवर्तन परिवर्तनोंके परिणामस्वरूप संस्कृतमें आधुनिक प्रचलित नवीन शब्दोंके कोषका प्रायः नितान्त अभाव सा है। इस अभावको दूर करनेके लिए और संस्कृतको सर्वकार्योपयोगी बनानेके लिए भारतका प्रसिद्ध संस्कृत मासिक 'दिव्यज्योतिः' विशेष सजाके साथ तृतीय-वर्षीय विशेषांक "अभिनव शब्द निर्माणाङ्क" के रूपमें आपकी सेवामें आ रहा है। विद्वान् लेखक तथा गवेषक अपेक्षित सामग्री ३१ जुलाई १९५८ तक कार्यालयमें भेजकर कृतार्थ करें।

व्यवस्थापक "दिव्यज्योति" आनन्दलौज, जाखू, शिमला

'ज्योतिष्मती' : महापुरुषोंकी दृष्टिमें

भारतविजय-वीरप्रताप--शङ्करविजय-पृथ्वीराज--भक्तसुदर्शन--नाटकों, मातृदर्शन, पाणिनीय-सिद्धान्त कौमुदी, केलिकुतूहल, कविता रहस्य, अभिधान राजेन्द्र कोष (Jain Encyclopaedia in Prakrit) पाली-प्राकृत-व्याकरणादि अनेकों अपूर्व ग्रन्थोंके निर्माता, संस्कृत साहित्यके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध विद्वान् विद्यावारिधि सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहोपाध्याय श्री पं० मथुराप्रसादजी दीक्षितका अभिमत—

ज्ञान-विज्ञान विषयक पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादकोंमें अग्रगण्य ज्यौतिषाचार्य श्री पं० हरदेवजी त्रिवेदी जिस वैदुष्यसे 'ज्योतिष्मती' पत्रिकाका सम्पादन कर रहे हैं; वह प्रशंसनीय है। सम्पादन कला विषयक २८ वर्षोंका अनुभव, अनेक शास्त्रीय विषयोंका परिशीलन, अनवरत परिश्रम एवं अदम्य अध्यवसाय इस 'ज्योतिष्मती'को वह ज्योतिष्मती बना देगा जिसके प्रकाशसे अनेक तमोंका—अज्ञानोंका—दूरीकरण हो सकेगा। ज्योतिषशास्त्रकी इस प्रमुख पत्रिकामें आध्यात्मिक पौराणिक एवं सामाजिक विषयोंका सन्निवेश इसे कितनी दीप्तिमती बना रहा है—इसका उल्लेख प्रत्यक्ष सिद्धिके लिए अनुमानका अवलम्बन है। हमें विश्वास है कि जनता इस 'ज्योतिष्मती'के सुख शान्तिदायक प्रकाशसे अपनेको कृतार्थ कर आनन्दातिरेकका अनुभव करेगी। हम सर्वतोभावसे इसकी समुन्नति चाहते हैं।

(ह०) मथुराप्रसाद दीक्षित
महामहोपाध्याय विद्यावारिधि राजगुरु सोलन।



विश्वधर्म-सम्मेलन एवं सर्वधर्म-सम्मेलनके संप्रेरक विश्वविख्यात जैनमुनि श्री सुशीलकुमारजी महाराज भास्करका अभिमत—

"पत्र हमारे देशके बौद्धिक विकासमें पथ-प्रदर्शकका काम कर रहे हैं। राष्ट्रके कर्णधारोंको बुद्धिके सर्वाङ्गीण विकास के लिये पत्रोंको समृद्ध बनानेका प्रयास करना चाहिये। किसी भी राष्ट्रके पत्र राष्ट्रीय जीवन-निर्माणमें बौद्धिक खाद बिखेरनेका काम किया करते हैं, जिससे मानसिक दासताके विरुद्ध बौद्धिक स्वतन्त्रताके युगकी स्थापना की जा सकती है। यद्यपि हमारा यह विश्वास है कि बौद्धिक अभ्यासी बौद्धिक स्वच्छन्दताका परिणाम है तथापि हम स्वच्छन्दता की अपेक्षा स्वतन्त्रताका प्रकाश चाहते हैं, उस समय हमें देशके तमाम पत्रोंमें "ज्योतिष्मती" का भी कुछ मूल्य नजर आता है। 'ज्योतिष्मती' में राष्ट्रीय जीवनके पूरक समस्त प्रकारके विषयोंको ज्योतिषके माध्यमको रखकर अभिव्यक्त किया गया है, उससे ऐसा लगता है कि श्री त्रिवेदीजी सम्यक् ज्ञान पर सम्यक् श्रद्धाका कलश चढ़ा रहे हों। हमें विश्वास है कि 'ज्योतिष्मती' जगती तल पर ज्योतिकी भांति जगमगायेगी।

(ह०) मुनि सुशील
३१—१—५८

मीटरिक प्रणाली

के प्रवर्तन का आरंभ



भारत में अभी तक नाप-तौल की समान प्रणाली नहीं है। हमारे यहां इस समय लगभग १४३ प्रणालियों का प्रयोग होता है। इस प्रकार की अनेकता से धोखाधड़ी को स्थान मिलता है। देशभर में मीटरिक नाप-तौल पर आधारित एक समान प्रणाली आरम्भ हो जाने से काफी सुविधा हो जायेगी और हिसाब-किताब बड़ा आसान हो जायगा, विशेषकर इसलिये कि हमारे यहां दाशमिक सिक्के शुरू हो चुके हैं। तौल और माप-प्रतिमान अधिनियम, १९५६ ने मीटरिक प्रणाली के अन्तर्गत आधारभूत इकाइयां निश्चित कर दी हैं। इस प्रकार का सुधार धीरे-धीरे किया जायेगा ताकि जनता को कम से कम असुविधा हो।

इस प्रणाली के शुरू हो जाने के बाद भी किसी क्षेत्र या व्यापार में पुराने नाप-तौल का ३ वर्षों तक प्रयोग हो सकेगा।

नाप-तौल की मीटरिक प्रणाली के प्रवर्तन का आरंभ अक्तूबर १९५८ से हो रहा है।

मीटरिक बाटों को जानिये



तोल की इकाई
किलोग्राम = १ सेर ६ तोले (या ८६ तोले) या २ पौंड ३ औंस

उप इकाइयां

१० मिलीग्राम	=	१ सेंटीग्राम
१० सेंटीग्राम	=	१ डेसीग्राम
१० डेसीग्राम	=	१ ग्राम
१० ग्राम	=	१ डेकाग्राम
१० डेकाग्राम	=	१ हैक्टोग्राम
१० हैक्टोग्राम	=	१ किलोग्राम

बड़े बाट

१०० किलोग्राम	=	१ क्विंटल
१० क्विंटल या १,००० किलोग्राम		१ मीटरिक टन

DA 57/240

भारत सरकार द्वारा प्रसारित

प्रीती भोज
हो या
जलपान

यह रुचिकारक
तथा पौष्टिक



शेर



मार्का

चटनी अचार
व मुरब्बे

यह स्वादिष्ट "शेर मार्का" ५१ प्रकार के अचार व मुरब्बे बिना हाथ से छुये वैज्ञानिक ढंग से इन शुद्ध और हवा निकाले हुए डिब्बों में मशीन से बन्द किए जाते है और इस कारण सदैव ताजे रहते हैं और इनमें बार बार छूने से होने वाली गंदगी का भय नहीं रहता। यह डब्बे हर शहर के श्रेष्ठ दुकानदारों से मिल सकते हैं।

हरनारायन गोपीनाथ (स्थापित १८६०) देहली व नई देहली

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर ज्योतिष्मती-निकेतन सोलन (हि. प्र.) से प्रकाशित